प्रसव-चिन्तामणि

(ASTROLOGIC EMBRYOLOGY)

ज्योतिष और विज्ञान द्वारा गर्भस्थ जीव के बारे में प्रत्येक प्रश्न का उत्तर

यह पुस्तक एक दृष्टि में

गर्भस्थ जीव मुन्ना है या मुन्नी ? वह सकुशल है या अस्वस्थ ? माता-पिता और वंश-कुटुम्ब के लिए वह मंगलकारी है या कष्टदायक ? गर्भस्थ जीव के विषय में आपकी प्रत्येक उत्सुकता का समाधान इस पुस्तक में विद्यमान है।

सजातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतम् ।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।।

जन्म उसी का सार्थक है जिससे वंश की भली-भांति उन्नति हो। वरना इस परिवर्तनशील संसार में कौन आता नहीं और कौन जाता नहीं।

- ☐ ज्योतिष का अनुपम ज्ञान दस अध्यायों में
- ☐ ज्योतिष और विज्ञान की साझेदारी
- ☐ नौ माह नौ ग्रहों की छाया में
- ☐ प्रसव ज्योतिष के झरोखे से
- ☐ श्रीमती परखनली, कृत्रिम जीवाणु, जिन्दाबाद
- ☐ पुश्तैनी बीमारियों और बांझपन अलविदा।
- ☐ चमत्कारी खबरों से लबरेज प्रस्तावना (विशेष)
- ☐ शुभाशुभ फल पर एक नजर
- ☐ हमारा विद्वद् वर्ग उच्चता से प्रभावित होगा
- ☐ और जनसाधारण के लाभ की कामना

כ-ג

आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ द्वारा संकलित

प्रसव-चिन्तामणि

ASTROLOGIC EMBRYOLOGY

आचार्य गोपी लाल अमर
एम. ए., दर्शनाचार्य, धर्मालंकार,
काव्यतीर्थ, शास्त्री, साहित्यरत्न

द्वारा

संशोधन, परिवर्तन, संवर्धन, टिप्पणी,
प्रस्तावना, परिशिष्ट आदि सहित

संपादित

और

हिन्दी में अनूदित

रंजन पब्लिकेशन्स
16, अंसारी रोड, नई दिल्ली-110002

प्रसव-चिन्तामणि
PRASAVA-CHINTAMANI

A Sanskrit compendium of astrologic embryology compiled by Acharya Mukunda Daivajna; edited with retouching, rearrangement, addition, Introduction, foot-notes, appendices etc. and translated into Hindi by Acharya Gopi Lal Amar; published by Ranjan Publications, 16, Ansari Road, New Delhi 2, India; first edition, April 1984; price Rs. 40.00

प्रकाशन :
रंजन पब्लिकेशन्स,
16, अन्सारी रोड, नई दिल्ली-2
फोन 278835

संकलन :
आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ

संपादन और अनुवाद :
आचार्य गोपी लाल अमर

आवरण-शिल्प और रेखाचित्र :
पवन कुमार जैन

मुद्रण :
नवनीत प्रिण्टर्स,
शाहदरा दिल्ली-32

प्रथम संस्करण : अप्रैल 1984
मूल्य : रु. 40.00

संपादकीय

माता के गर्भ में पल रहा एक-दो अणुओं का समूह चंद महीनों में खुश-खुर्रम, सुर्ख-सफेद बाल-मानव कैसे बन जाता है ? जानता है कोई कि वह मुन्ना बनेगा या मुन्नी ? जानता है कोई कि वह अपने जन्मदाताओं की, बल्कि संबन्धियों तक की किस्मत पलटने आया है ? और जानता है कोई कि वह जमीन और आसमान के कुलाबे एक करने आया है, या फिर अरबों-खरबों अणुओं की तरह वह भी इस उमड़ती-घुमड़ती दुनिया में लापता होने आया है ?

प्रसव या जन्म के सम्बन्ध में ऐसे सभी प्रश्नों का उत्तर ज्योतिष की इस पुस्तक में उसी प्रकार तत्काल मिलता है जिस प्रकार चिन्तामणि रत्न से मनोवांछित वस्तु मिलती है, अत: इस पुस्तक का प्रसव-चिन्तामणि नाम सार्थक है। गढ़वाल के समीप खण्डग्राम में 1887 ई० में जन्म लेकर 1979 ई० में अन्तिम सांस लेने तक अनेक ग्रन्थों की रचना करके ज्योतिषाचार्यों को चमत्कृत करने वाले आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ ने 145 संस्कृत श्लोकों का चार प्रकरणों में संकलन किया था। इसे और भी सर्वांग-संपूर्ण बनाने के लिए मैंने उन्हीं के ग्रन्थ ज्योतिष तत्त्व से 38 श्लोक और संकलित करके उन्हें दस प्रकाशों में पुर्नियोजित किया। इस पुस्तक के संपादन का यह एक पक्ष है।

अतिरिक्त संकलन द्वारा श्लोकों की संख्या में वृद्धि के साथ उनके क्रम में भी परिवर्तन किया है जिससे विषय का विवेचन और भी व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक बन गया है। संस्कृत और हिन्दी दोनों में शीर्षकों के संयोजन से विषय की दुरूहता कम हुई है और वह रोचक भी बन पड़ा है। इस पुस्तक में प्रतिपादित सिद्धान्तों की पुष्टि के लिए स्थान-स्थान पर अन्य ग्रन्थों से दिये गये उद्धरणों में वृद्धि की गयी है। प्रत्येक श्लोक के छन्द के उल्लेख से उनके सस्वर पाठ में सुविधा होगी, ज्योतिष के सोने से काव्य की गन्ध बिखरेगी। संपादन का यह दूसरा पक्ष है।

संपादन का तीसरा पक्ष है इसकी विस्तृत प्रस्तावना जो इस विषय के भूत और भविष्य का विश्लेषण करती है। गर्भाधान से लेकर अन्तिम संस्कार तक की

मनुष्य की प्राय: सभी शुभ और अशुभ गतिविधियों पर ज्योतिष का प्रभाव क्यों, कैसे और किस हद तक पड़ता है, इन प्रश्नों के उत्तर में प्राचीन काल से अब तक सैकड़ों ग्रन्थ लिखे गये हैं, इस प्रस्तावना में उन प्रश्नों का उत्तर वैज्ञानिक दृष्टि से भी देने का प्रयास किया गया है। रजोदर्शन, गर्भाधान, भ्रूण-विकास, प्रसव आदि की प्रक्रिया पर ज्योतिष के नियमों की वैज्ञानिक नियम से तुलना की गयी है, तीन रेखाचित्र भी दिये गये हैं। जीव-विज्ञान और आनुवंशिकी के क्षेत्र में विज्ञान जो नित नये करिश्मे दिखा रहा है उनकी एक झलक भी दे दी गयी है जिससे यह स्पष्ट हो सके कि मानव की, बल्कि प्रत्येक प्राणी की, प्रकृति को मनचाही प्रकृति में बदलने के कैसे-कैसे नुस्खे एक के बाद एक सामने आ रहे हैं।

हिन्दी अनुवाद इस ग्रन्थ के संपादन का चौथा पक्ष कहा जा सकता है। अनुवाद शब्दश: किया गया है किन्तु आवश्यकतानुसार भावार्थ और विवेचन भी उसमें सम्मिलित हैं। संस्कृत के ज्योतिष ग्रन्थों में जिस शब्दावली का प्रयोग किया गया है वह अत्यन्त असहज है, फिर भी इस अनुवाद को अधिक से अधिक सहज और सुबोध बनाने का प्रयास किया गया है। अनुवाद के भाषा-विन्यास में ध्यान रखा गया है कि संस्कृत से अनभिज्ञ और अल्पशिक्षित व्यक्ति भी उससे लाभान्वित हों। संस्कृत और हिन्दी की आमने-सामने प्रस्तुति से संस्कृत रसिकों को तो सुविधा होगी ही, इससे अनुवाद-ग्रन्थों की प्रस्तुति में एक नया आयाम भी विकसित होगा। पांच परिशिष्ट भी दिये गये हैं जिनकी उपयोगिता अपनी है।

इस कार्य में अनेक व्यक्तियों से बहुमूल्य सहयोग मिला है। मशहूर गजल-गो और भारतीय ज्ञानपीठ के मन्त्री जनाबेमन बाल स्वरूप राही ने मेरी हौसला अफजाही की। डॉ. सतीश कुमार जैन और डॉ. श्रीमती जसबीर खरबन्दा ने मेरे अनेक प्रश्नों का समाधान किया और आवश्यक साहित्य जुटाया। मेरे प्रिय शोध छात्र पवन कुमार जैन ने आवरण-चित्र और तीनों रेखाचित्र बनाये और प्रिय शिष्य सत्य नारायण तिवारी और मेरी पुत्री अमिता अमर ने पाण्डुलिपि तैयार करने में सहायता की। हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स आदि पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित लेखों और खबरों से भी सहायता मिली। रंजन प्रकाशन यह ग्रन्थ बड़े ही उत्साह से प्रकाशित कर रहे हैं जिसे नवनीत प्रिण्टर्स ने लगन के साथ मुद्रित किया है। इन सभी का आभार मानता हुआ मैं पाठकवृन्द से अनुरोध करता हूं कि इस संपादन-अनुवाद में रही त्रुटियों की ओर मेरा ध्यान दिलाएं ताकि आगामी संस्करण में उनका संशोधन किया जा सके।

दिल्ली 13-4-1984 — **कृपाभिलाषी,**

महावीर जयन्ती — **गोपी लाल अमर**

(वसन्ततिलका छन्द)

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशु-जालम् ।।

(नाराच छन्द)

अनेक पुत्रवंतनी, अनेक ही सपूत हैं,
न तो समान पुत्र और मात तैं प्रसूत हैं।
दिशा धरंत तारिका अनेक कोटि,को गिनै ?
दिनेश तेजवंत एक पूर्व ही दिशा जनै ।।

विषय-क्रम

संपादकीय 3
विषय-क्रम 6
प्रस्तावना 11
ज्योतिष शास्त्र और विज्ञान 11
ज्योतिष शास्त्र और जीवविज्ञान 11
अण्डाणु-शुक्राणु और गुणसूत्र 12
जीवनसूत्र और आनुवंशिकी 12
आनुवंशिकी चिकित्सा 12
आनुवंशिक आभियान्त्रिकी 13
कृत्रिम जीवाणुओं का आविष्कार 13
जीवाणु, आत्मा, शरीर 14
शरीर : रजोदर्शन से गर्भाधान तक 14
शरीर : गर्भाधान से प्रसव तक 16
कुछ दहशतें, कुछ आशंकाएं 22
समाधान, समाधान 22
मङ्गलाचरण 25
रजोदर्शन : प्रथम प्रकाश 26
इस ग्रन्थ की रचना का उद्देश्य 27
भविष्यवाणी का आधार प्रथम रजोदर्शन 27
रजोदर्शन क्यों होता है 27
रजस्वला स्त्री की पहचान 29
रजोदर्शन के समय पुरुष का कर्तव्य 29
रजोदर्शन के समय स्त्री का कर्तव्य 29
ऋतुस्नान का विधान 29

संभोग का विधान 31
संभोग का मुहूर्त 31
संभोग का योग-अयोग 31
रजोदर्शन और संभोग का संवन्ध 33
ऋतु-चक्र और संभोग का संवन्ध 33
रजोदर्शन के पश्चात् सावधानी 35
दोहद की पूर्ति आवश्यक है 35
गर्भवती का भोजन कैसा हो 35
गर्भाधान : द्वितीय प्रकाश 38
गर्भाधान कब होगा 39
शीघ्र गर्भाधान कब होगा 41
गर्भाधान के पूर्वोक्त नियमों का अपवाद 41
ग्रह-स्थिति और गर्भाधान 41
गर्भाधान किस वर्ष होगा 43
गर्भाधान किस मास और किस दिन होगा 43
गर्भाधान किस समय होगा 45
गर्भाधान कब नहीं होगा 45
इकलौता गर्भाधान : काक-वन्ध्या 45
गर्भाधान के अयोग्य स्त्रियां 47
गर्भाधान में बाधक जन्म-ग्रह 47
स्त्रियां बन्ध्या क्यों होती हैं 47
भ्रूण-विकास : तृतीय प्रकाश 50
भ्रूण का दस मास में क्रमिक विकास 51
निरापद भ्रूण 51
विकासशील भ्रूण 51
सौभाग्यशाली भ्रूण 53
विलम्बित भ्रूण 53
भ्रूण का गर्भवास कितने दिन 53
भ्रूण का प्रसव किस नक्षत्र में 55
भ्रूण का प्रसव किस राशि में 55

भ्रूण-नाश अर्थात् गर्भपात क्यों 57
अनेक वार भ्रूण-नाश या गर्भपात 59
भ्रूण के प्रतिमास का स्वामी ग्रह 61
कितने मास का गर्भ है 61
गर्भाधान की तिथि आदि से प्रसव की तिथि आदि का ज्ञान 61
एकाधिक भ्रूण : चतुर्थ प्रकाश 62
युगल भ्रूण 63
पुंलिंग और स्त्रीलिंग भ्रूण 63
तीन भ्रूण एक साथ 65
तीन से अधिक भ्रूण 65
भ्रूण-लिङ्ग : पञ्चम प्रकाश 66
पुत्र-योग की पांच ग्रह-स्थितियां 67
पुत्र-योग की तीन और ग्रह-स्थितियां 67
पुत्र-योग की और भी तीन ग्रह-स्थितियां 67
पुत्र-योग की दो विशेष ग्रह-स्थितियां 69
पुत्र-योग की एक अतिविशेष ग्रह-स्थिति 69
किन ग्रहों की दशा और अन्तर्दशा में पुत्र-योग होगा 69
पुंलिग भ्रूण और प्रसव-कालीन ग्रह-स्थिति 71
प्रश्न-कालीन ग्रह-स्थिति और पुंलिग भ्रूण 71
गर्भाधान-कालीन ग्रह-स्थिति और पुंलिग या स्त्रीलिंग भ्रूण 73
गर्भाधान-कालीन ग्रह-स्थितियां और स्त्रीलिंग भ्रूण 75
प्रश्न-कालीन ग्रह-स्थितियां और पुंलिग या स्त्रीलिंग भ्रूण 75
प्रश्न का समय और भ्रूण का लिंग 77
प्रश्न के वार आदि और भ्रूण का लिंग 79
नामाक्षरों के वार आदि और भ्रूण का लिंग 79
प्रश्न-लग्न से भ्रूण के लिंग का ज्ञान 79
भ्रूण की गर्भ में स्थिति से उसके लिंग का ज्ञान 81
नपुंसक भ्रूण 81
प्रश्नाक्षरों की संख्या और भ्रूण का लिंग 83

प्रसव-काल : षष्ठ प्रकाश 84
गर्भाधान-काल से प्रसव-काल का ज्ञान 85
गर्भाधान-काल से प्रसव-काल के ज्ञान की दूसरी रीति 85
प्रश्न-काल से प्रसव-काल का ज्ञान 85
गर्भाधान-लग्न या प्रश्न-लग्न से प्रसव-काल का ज्ञान 87
गर्भाधान-लग्न या प्रश्न-लग्न से प्रसव-काल का ज्ञान : मतान्तर 87
प्रसव-काल से गर्भाधान-काल का ज्ञान 89
तीसरे या बारहवें वर्ष में प्रसव 89
प्रसव-स्थान : सप्तम प्रकाश 90
पिता की अनुपस्थिति में प्रसव 91
मार्ग आदि में प्रसव 91
नाव में प्रसव 93
जल में प्रसव 93
कारागार और गड्ढे में प्रसव 93
क्रीडागृह, देवालय और मरुस्थल में प्रसव 93
श्मशान, राजमहल, गोशाला आदि में प्रसव 95
ननिहाल, गोशाला, बियाबान में प्रसव 95
प्रसूतिकागृह : अष्टम प्रकाश 96
लग्न-कालीन ग्रह-स्थितियां और प्रसूतिका गृह 97
प्रसूतिका गृह की दिशा 97
प्रसूतिका गृह के द्वार की दिशा 99
प्रसूति-स्थान का विवरण 99
प्रसूतिका गृह में दीपक की स्थिति 99
माता के वस्त्रों और भाण्डों के रंग 101
माता के वस्त्रों और भाण्डों के प्रकार 101
प्रसव-कालीन शिशु-दशा : नवम प्रकाश 102
प्रसव-काल में नाल से लिपटा शिशु 103
शिशु का नाल से लिपटा शरीर या अवयव 103
नाल से लिपटे युगल शिशु 105
लहसुन-युक्त, नाल-रहित और विलोम-जात शिशु 105

सिर, पैरों या हाथों की ओर से प्रसव 105
प्रसव होते ही शिशु का सिर किस दिशा में गिरेगा 155
प्रसव-काल में शिशु के रोने का स्वर 105
सीमन्त कर्म आदि के बिना ही प्रसव 107
प्रसव का फलाफल : दशम प्रकाश 108
प्रसव-काल में माता-पिता को कष्ट का योग 109
प्रसव-काल में पिता के वन्धन का योग 109
प्रसव-काल में माता और शिशु की मृत्यु का योग 111
प्रसव-कालीन ग्रह-स्थिति से माता-पिता की मृत्यु का योग 111
विभिन्न ग्रह-स्थितियों से शिशु के संवन्धियों को शुभ फल 113
ग्रह-स्थितियों के शुभाशुभ फल की मात्रा में अन्तर 113
गृह-कुण्डली और गर्भ-कुण्डली 113
परिशिष्ट 115
एक : गर्भाधान-लग्न से प्रसव-काल के ज्ञान का उदाहरण 116
दो : गर्भाधान या प्रश्न लग्न से प्रसव-काल के ज्ञान का उदाहरण 118
तीन : गर्भ-कुण्डली का साधन 119
गृह-कुण्डली और गर्भ-कुण्डली 119
गर्भ-कुण्डली के साधन की रीति 119
गर्भ-कुण्डली के साधन का प्रथम उदाहरण 120
गर्भ-कुण्डली के साधन का द्वितीय उदाहरण 121
गर्भ-कुण्डली के साधन का तृतीय उदाहरण 122
चार : तालिकाएं 123
1. प्रश्न-काल या गर्भाधान-काल से प्रसव-कालीन ग्रह-स्थिति का ज्ञान 123
2. चन्द्र की कलाओं (बीते हुए द्वादशांशों से रहित) का फल 128
3. चन्द्र की विकलाओं (बीते हुए द्वादशांशों से रहित) का फल 131
उपर्युक्त तालिकाओं का सोदाहरण स्पष्टीकरण 132
पांच : श्लोकों की वर्णानुक्रम सूची 133

प्रस्तावना

ज्योतिष शास्त्र और विज्ञान

ज्योतिष शास्त्र इतना व्यापक है कि वह एक ओर अध्यात्म से जुड़ा है तो दूसरी ओर विज्ञान से, एक ओर भूगोल से जुड़ा है तो दूसरी ओर खगोल से, एक ओर मनुष्य के गर्भाधान से जुड़ा है तो दूसरी ओर उसके अन्तिम संस्कार से। माता का तन-मन जिस पर न्यौछावर है वह शिशु गर्भवास के नौ महीने किन हालात में विताकर प्रकट हुआ है, यह विषय विज्ञान के प्रकाश में हाथ-कंगन की तरह साफ दिखने लगा है। विज्ञान के प्रकाश में यह भी साफ दिखने लगा है कि वे कौन से तत्त्व हैं जिनसे स्त्री के गर्भ में शिशु-शरीर की शुरूआत होती है। विज्ञान का प्रकाश अव यह भी साफ करने वाला है कि शिशु शरीर के उन शुरूआती तत्त्वों को, उनकी प्रकृति के विपरीत, मनचाही प्रकृति में कैसे ढाला जा सकता है।

ज्योतिष शास्त्र और जीवविज्ञान

गर्भाधान के समय संयुक्त हुए रज या अण्डाणु और वीर्य या शुक्राणु के अतिसूक्ष्म पिण्ड को शिशु-शरीर का शुरूआती तत्त्व मानना आम बात होगी। खास बात होगी उस पिण्ड की वह प्रकृति, जिसमें माता-पिता की कई पीढ़ियों के गुण-दोष छिपे होते हैं, जो उन गुण-दोषों से प्रभावित भी हो सकती है और अप्रभावित भी रह सकती है, जिसमें नये ही गुण-दोष विकसित हो सकते हैं, और जिसकी वदौलत शिशु का लिंग निर्धारित होता है।

इस खास प्रकृति को हमारी मनचाही प्रकृति में ढालने के नुस्खे ज्योतिष में भी हैं और आयुर्वेद में भी, अध्यात्म में भी हैं और आचारशास्त्र में भी। ये नुस्खे कितने यथार्थ हैं इसका निर्णय जीवनरूपी प्रयोगशाला में तो हो ही सकता है, वैज्ञानिक प्रयोगशाला में भी हो सकता है। ज्योतिष के नुस्खे इस ग्रन्थ में हैं ही, शेष विषयों के नुस्खों के लिए यहां स्थान नहीं है, अतः यहां केवल उन्हीं नुस्खों का जिक्र किया जा रहा है जिन पर वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में शोध-खोज हो रही है।

अण्डाणु-शुक्राणु और गुणसूत्र

प्रत्येक अण्डाणु में 46 गुणसूत्र (chromosome) होतें हैं और उन सभी का आकार अंग्रेजी अक्षर एक्स (X) के समान होता है। प्रत्येक शुक्राणु में भी 46 गुणसूत्र होते हैं, किन्तु उनमें से 23 एक्स के आकार के और 23 वाई (Y) के आकार के होते हैं। अण्डाणु के 23 और शुक्राणु के 23 गुणसूत्रों के संयोग से गर्भाधान होता है। अण्डाणु के गुणसूत्रों से संयुक्त होने वाले शुक्राणु के सभी गुणसूत्र भी एक्स के आकार के हों तो लड़की उत्पन्न होगी, वरना लड़का होगा।

स्त्री के गर्भ में या परख-नली (test-tube) में मनचाहे गुणसूत्र संयुक्त करके वैज्ञानिक अब माता-पिता की इच्छा के अनुसार लड़की ही या लड़का ही उत्पन्न होने देने में सफल हो चुके हैं। वैज्ञानिकों की बदौलत एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब दुनिया में स्त्रियां ही स्त्रियां हों या पुरुष ही पुरुष हों। मनचाही स्त्री के अण्डाणु और मनचाहे पुरुष के शुक्राणु के गुणसूत्रों का संयोग कराकर मनचाही लड़की या मनचाहा लड़का उत्पन्न करना भी अब आसान हो गया है। कायदे से वीर्य-कोश (gene bank) स्थापित हो रहे हैं जिनमें नोबल पुरस्कार पाने वालों-जैसे असाधारण व्यक्तियों का वीर्य भी जमा किया जा रहा है। इसलिए वैज्ञानिक चाहेंगे तो अगली शताब्दी में दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति गुणवान् होगा, या प्रत्येक व्यक्ति सुन्दर होगा, या प्रत्येक व्यक्ति गुणवान् भी होगा और सुन्दर भी होगा।

जीवन-सूत्र और आनुवंशिकी

गुणसूत्रों में भी जीवनसूत्र या डी. एन. ए. (derivo-nucleic acid) होते हैं जिन पर आनुवंशिकी (genetics) आधारित है। विज्ञान की इस शाखा में ऐसे प्रयोग सफल हो चुके हैं जिनकी बदौलत वे गुण-दोष, शारीरिक भी और मानसिक भी, नेस्त-नाबूद हो सकेंगे जो अब तक पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते रहे हैं। आनुवंशिकी वैज्ञानिक गुणसूत्रों में से वे गुणसूत्र निकाल फेंकने में लगे हैं जो संतान को दुर्गुणी, कुरूप या रोगी बनाते हैं।

आनुवंशिकी चिकित्सा

जीवनसूत्री चिकित्सा (gene therapy) के अन्तर्गत कृत्रिम जीवनसूत्रों

का निर्माण भी हो चुका है जिसके फलस्वरूप उन बीमारियों का नामो-निशान भी न रहेगा जो आदमी का पीछा कई-कई पीढ़ियों तक नहीं छोड़तीं। इस चिकित्सा का लाभ आदमी को ही नहीं, पशुओं और पेड़-पौधों को भी मिल रहा है। पशुओं और कीड़े-मकोड़ों की वे प्रवृत्तियां समाप्त की जा रही हैं जो आदमी के लिए हानिकारक हैं और वे प्रवृत्तियां विकसित की जा रही हैं जो लाभदायक हैं। इसी प्रकार पेड़-पौधों और फसलों में ऐसे सुधार लाये जा रहे हैं जिनसे आदमी को लाभ ही लाभ हो, हानि तनिक भी नहीं। पेड़ों की लम्बाई-चौड़ाई कम की जा रही है ताकि वे कम-से-कम स्थान घेरें किन्तु फल-फूल पहले से भी अधिक दें। फसलों की ऊंचाई कम की जा रही है ताकि वे धरती से कम-से-कम रस चूसें, फिर भी अनाज आदि अधिक से अधिक दें।

आनुवंशिक आभियान्त्रिकी

आनुवंशिक आभियान्त्रिकी (genetic engineering) की बदौलत यह भी संभव है कि कठिन-से-कठिन परिस्थितियां, विषम जलवायु, दूषित पर्यावरण और यहां तक कि बुढ़ापा भी आदमी का कुछ न बिगाड़ सके। और यह भी संभव है कि श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत उठाये जाने या रावण द्वारा कैलास पर्वत हिलाये जाने के आख्यान दुहराने वाले महाबली भी किसी प्रयोगशाला में तैयार किये जा रहे हों।

जीवनसूत्रों के प्रत्यारोपण (gene grafting) के द्वारा ऐसी नस्ल का विकास भी हो सकता है जो पौराणिक गो-मुख, गज-मुख, वानर-सदृश तथा ऐसे ही अन्य देवों और मनुष्यों की रही होगी। मूर्तिकला में नाग-कन्या, किंपुरुष, गज-मकर आदि मनुष्य-पशुओं, पशु-मनुष्यों, पशु-पशुओं आदि की जो संकर मूर्तियां बनायी गयी थीं वे जीवनसूत्रों के प्रत्यारोपण से हकीकत में बदल सकती हैं। पशु-जगत् और वनस्पति-जगत् में भी अद्भुत अपूर्व क्रान्तियां लायी जा सकती हैं।

कृत्रिम जीवाणुओं का आविष्कार

कृत्रिम जीवाणु (gene) भी अस्तित्व में लगभग आ ही गया है। संभव है, ऐसे जीवाणु पैदा किये जाएं जो जलवायु को नियमित करके अतिवृष्टि, अनावृष्टि आदि प्राकृतिक अभिशापों से मानवता को बचाये रख सकें,

पर्यावरण को शुद्ध बनाये रख कर आदमी के जान-माल को हर बला से दूर रख सकें, और आदमी को जो चाहिए वही पैदा होने दें और जो नहीं चाहिए उसे नष्ट करते रह सकें। आदि, आदि।

जीवाणु, आत्मा, शरीर

जीवाणु, कृत्रिम हो या अकृत्रिम, आत्मा का अंग है या शरीर का, यह एक पेचीदा सवाल है। दरअसल, दार्शनिक और वैज्ञानिक अब तक हजारों टन कागज रंग चुके हैं किन्तु आत्मा नाम की चीज आज भी रहस्य बनी हुई है। आत्मा रूप-रस-गन्ध-वर्ण रहित अभौतिक पदार्थ है या पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु जनित भौतिक पदार्थ, यह प्रश्न आज भी अनुत्तरित है। जीवविज्ञान में प्रतिपादित जीवन-सूत्र ही आत्मा है, यह मान्यता भी विवादग्रस्त है। आत्मा तो आत्मा है, शरीर क्या है इस विषय में भी दार्शनिक और वैज्ञानिक एकमत नहीं हैं।

ज्योतिष शास्त्र में भी आत्मा और शरीर की व्याख्या है जो दर्शन और विज्ञान का दिलचस्प समन्वय प्रतीत होती है, मानव का शरीर स्वयं एक सौर-मण्डल है। बारह राशियां उसके विभिन्न अंगों का प्रतिनिधित्व करती हैं : मेष—मस्तक, वृष—मुख, मिथुन—वक्षस्थल, कर्क—हृदय, सिंह—उदर, कन्या—कटि, तुला—वस्ति (पेडू), वृश्चिक—लिंग, धनुष—जंघा, मकर—घुटना, कुम्भ—पिण्डली, मीन—पैर। राशियों में भ्रमण करने वाले ग्रह भी मानव-शरीर का प्रतिनिधित्व करते हैं : रवि —आत्मा, चन्द्र—मन, मंगल—धैर्य, बुध—वाणी, गुरु—विवेक, शुक्र —वीर्य, शनि—संवेदन। ये ग्रह और राशियां गर्भाधान से लेकर अंतिम संस्कार तक मानव-जीवन को प्रभावित करती रहती हैं।

शरीर : रजोदर्शन से गर्भाधान तक

रजोदर्शन या मासिक स्राव की व्याख्या ज्योतिष में आयुर्वेद के आधार पर है; यद्यपि उस पर ग्रह-स्थितियों की कशीदाकारी की गयी है तथापि वह अवैज्ञानिक नहीं लगती : 'जल पर चन्द्र ग्रह का प्रभाव होता है, इसलिए जल की प्रकृति शीतल होती है। अग्नि पर मंगल ग्रह का प्रभाव होता है, इसलिए अग्नि उष्ण होती है। मानव-शरीर में जल रक्त के रूप में विद्यमान रहता है और अग्नि पित्त के रूप में विद्यमान रहती है। पुरुष के शरीर में जल और अग्नि, अर्थात् रक्त और पित्त साथ-साथ रहे आते हैं। किन्तु स्त्री के शरीर में पित्त के कारण रक्त में समय-समय पर खलबली होने लगती है जिससे विकार पैदा होने लगता है।'[1] यही विकार रजोदर्शन का कारण बनता है।

---

1. प्रस्तुत पुस्तक, श्लोक 3-1, 3-2, पृष्ठ 51।

आयुर्विज्ञान और शरीर-विज्ञान की दृष्टि से गर्भाधान की बुनियादी शर्त है रजोदर्शन। ज्योतिष में यह शर्त है लेकिन उससे भी बड़ी एक और शर्त है। वह है ग्रह-स्थिति की अनुकूलता। दूसरी ओर, कृत्रिम गर्भाधान[2] के प्रयोग की सफलता ने रजोदर्शन को भी चुनौती दे दी है। गर्भाधान में समर्थ पुरुष के साथ ऋतुचक्र के अनुसार संभोग करने पर भी गर्भाधान की असंभवता की बेड़ी काटकर वन्ध्या अब जीवविज्ञान की वाटिका में राहत की सांस ले सकती है; वन्ध्यात्व का कलंक उसके माथे से धुल रहा है, संतान का सुख अब उसके द्वार पर आ पहुंचा है।[3] गर्भाधान के लिए रजोदर्शन तो दूर रहा, अब संभोग भी

---

2. **बांझ महिलाओं के लिए खुशखबरी :** अमरीका की एक कम्पनी ने बांझ महिलाओं को संतान सुख देने के लिए भ्रूण का व्यापार करने की योजना बनाई है। विश्व में पहली बार एक ऐसी अमरीकी महिला का प्रसव होने वाला है जिसने किसी दूसरी महिला का भ्रूण लेकर गर्भवती होने का अपना सपना साकार किया है। कम्पनी ऐसी महिलाओं की एक बड़ी सूची बना रही है जो अपना भ्रण दान करने के लिए सहमत होंगी। भ्रूण के स्थानान्तरण की प्रक्रिया यह होगी कि दाता महिला को बांझ महिला के पति का शुक्र दिया जाएगा जिससे वह भ्रूण तैयार करेगी और पांच दिन के बाद यह भ्रूण बांझ महिला के गर्भाशय में स्थानान्तरित कर दिया जाएगा। यह प्रणाली टेस्ट-ट्यूब पद्धति से भिन्न है। टेस्ट-ट्यूब पद्धति में महिला का आपरेशन करके उसके डिम्ब निकाल लिए जाते हैं और प्रयोगशाला में उस डिम्ब का प्रजनन किया जाता है।—लास एंजिलस (केलिफोर्निया) का 21-1-84 का ए. पी. से प्राप्त समाचार, **हिन्दुस्तान**, 22-1-84, पृष्ठ 5 से साभार।

3. **डिम्ब का प्रत्यारोपण :** क्वीन विक्टोरिया अस्पताल (मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया) के डाक्टरों ने एक महिला का डिम्ब एक दूसरी बांझ महिला में प्रत्यारोपित करके उसे संतान का सुख देने में पहली बार सफलता प्राप्त की है। प्रोफेसर कार्लवुड ने यह जानकारी देते हुए बताया कि एक 29 वर्षीया महिला ने उस बांझ महिला के पति के शुक्राणुओं की सहायता से अपने गर्भाशय में डिम्ब विकसित किया और उसे बांझ महिला को दान कर दिया। यह डिम्ब उस बांझ महिला में प्रत्यारोपित किया गया और नवम्बर में एक स्वस्थ बच्चे का जन्म हुआ। इस बात की घोषणा नवम्बर में ही इसलिए नहीं की गयी कि विक्टोरिया राज्य में कानूनी तथा नैतिक अड़चनों को लेकर कृत्रिम प्रजनन पर पाबंदी लगी हुई थी। हालांकि डिम्ब का प्रत्यारोपण इस पाबंदी के दौरान किया गया परंतु बच्चे का जन्म पाबंदी हटने के बाद हुआ।—मेलबोर्न, आस्ट्रेलिया का 12-2-84 का ए. पी. से प्राप्त समाचार, **हिन्दुस्तान**, 13-2-84, पृष्ठ 5 से साभार।

अनिवार्य नहीं रह गया है; और संतान-प्राप्ति के लिए अब श्रीमती परखनली की कृपा से गर्भाधान की रस्म भी बेमानी हो गयी है। सौन्दर्य अक्षत रखने के लिए स्त्रियों द्वारा बच्चे को बाहरी दूध पिलाने की प्रथा तो है ही; अब भ्रूण की वृद्धि के साथ उभरते गर्भ और प्रसव के पश्चात् आने वाली सौन्दर्य की गिरावट से बचने के लिए प्रयोगशाला या किराये की माता का सहारा लिया जाने लगा है। इसका जो एक अतिरिक्त लाभ उठाया जा रहा है, वह है गर्भ-निरोध[4] के साधनों से छुटकारा।

शरीर : गर्भाधान से प्रसव तक

गर्भाधान के पश्चात् भ्रूण के विकास की जो अवस्थाएं ज्योतिष में प्रतिपादित हैं वे भी आयुर्विज्ञान के अनुरूप हैं : स्त्री के रज और पुरुष के वीर्य का कुछ अंश पहले माह के अन्त तक एक अण्डाकार पिण्ड का रूप ले लेता है जिसे कलल कहते हैं, फिर वह पिण्ड लम्बाई और कठोरता पाता है (रेखाचित्र एक); तीसरे माह में उसके हाथ, पैर आदि अवयव निकलने लगते हैं, फिर (रेखाचित्र दो) अस्थियां बनने लगती हैं; पांचवें में त्वचा या चमड़ी जमने लगती है और फिर उस पर बाल उगने लगते हैं; सातवें माह में उसमें चेतना[5] आ जाती है (रेखाचित्र तीन),

---

4. कनाडा के एक वैज्ञानिक प्रो. फर्नांड लेवाइस के निर्देशन में गर्भ-निरोध का एक नया उपाय खोजा गया है। स्त्रियों की पीयूष ग्रन्थि (pituitary gland) से घंटा घंटा निकलने वाले डिम्ब-पोतकीय न्यासर्ग (luteinizing hormone) से ऋतु-चक्र (menstruation) नियन्त्रित होता है और अण्डाणु निर्मित होते हैं। इस न्यासर्ग से निर्मित संश्लेषित रसायन स्वयं इस न्यासर्ग से अधिक शक्तिशाली और क्रियाशील होता है। यह रसायन स्त्रियों की नाक में प्रतिदिन छिड़कने से गर्भाधान नहीं हो पाता। इस रसायन के तीन प्रकार के प्रयोग किये गये और तीनों सफल रहे। वैज्ञानिक इस रसायन का प्रयोग पुरुषों पर भी कर रहे हैं।—**हिन्दुस्तान**, 28-12-83, पृष्ठ 7 पर प्रकाशित **मातृत्व की सेवा में विज्ञान** पर आधारित।

5. **चेतना, जो भ्रूण में ही आ जाती है :** गर्भ में छठा महीना आरम्भ होते-होते भ्रूण में चेतना आ जाती है। भ्रूण को यह मालूम हो जाता है कि मां के शरीर के बाहर कोई शोर-शराबा चल रहा है। उसे यह भी मालूम हो जाता है कि रोशनी तेज है या कम। यह बात तीन दशक पहले शुरू किए गए एक अध्ययन से सामने आयी है जिस पर इटालियन साइकोथेरापी संघ द्वारा यहां (मेरानो, इटली) आयोजित एक सम्मेलन में चर्चा हो रही है। **जन्म के पहले जीवन विषय पर** आधारित इस सम्मेलन में बताया गया कि भ्रूण के विकास में मां की सेहत का ही नहीं, बल्कि इस बात का भी असर होता है कि पति के साथ उसके संबंध कैसे हैं और उसमें सयानापन कहां तक है।—मेरानो (इटली) का 27-12-83 का पी. एन. ए. एल. से प्राप्त समाचार, **हिन्दुस्तान**, 28-12-83, पृष्ठ 5 से साभार।

1. दो माह का भ्रूण

1. आपार्श्व पतनिका
   decidua parietalis
2. आधार पतनिका
   decidua basalis
3. रूक्ष जरायु
   chorion frandosum
4. योक कोष
   yolk sac
5. संपुट पतनिका
   decidua capsularis
6. मसृण जरायु
   chorion laeve

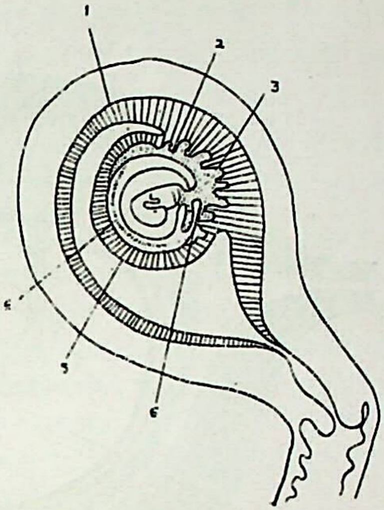

2. तीन माह की भ्रूण

1. उल्ब गुहा
   amniotic cavity
2. गर्भ नाल
   placenta
3. उल्ब-जरायु समेकन
   fusion of amnion
   and chorion

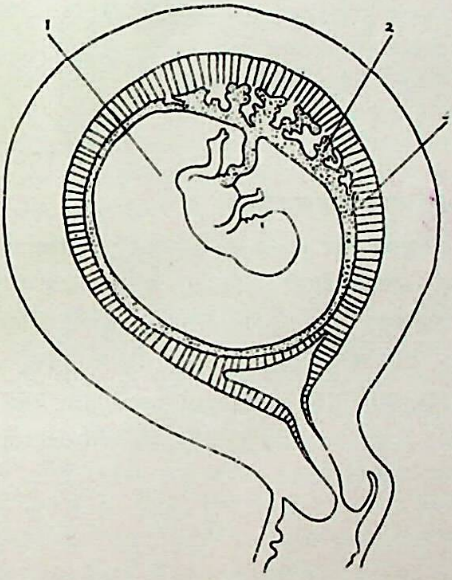

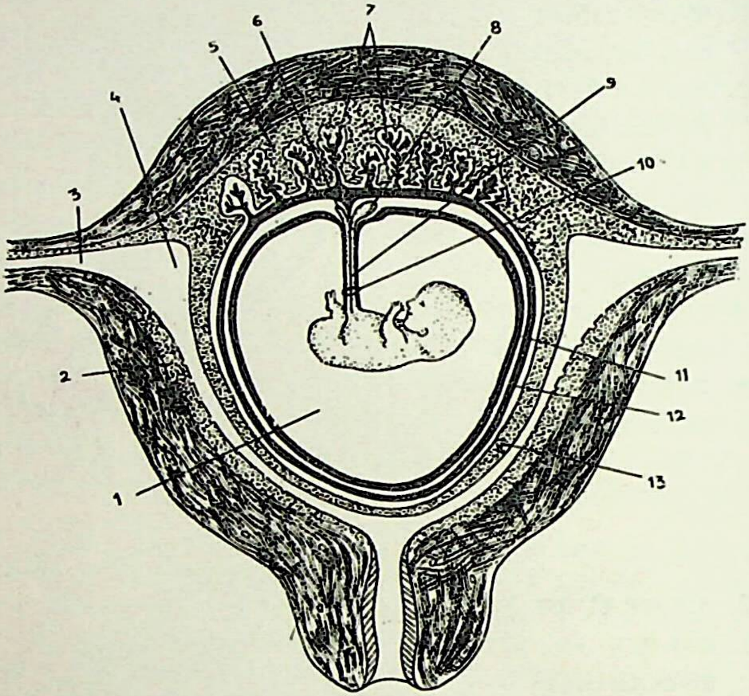

3. सात माह का भ्रूण

1. उल्ब-गुहा amniotic cavity, 2. आपार्श्व पतनिका decidua parietalia, 3. अण्ड-वाहिनी oviduct, 4. गर्भाशय गुहा cavity of uterus, 5. आधार पतनिका, decidua basalis, 6. अपरा पोषिका allantois, 7. रोमांकुर villi, 8. योक कोष yolk sac, 9. नाभि-वाहिकाएं umbilical vessels (in black), 10. नाभि-नाल umbilical cord, 11. उल्ब amnion, 12. जरायु chorion, 13. संपुट पतनिका decidua capsularis

और[6] आठवें में उसे भूख-प्यास की अनुभूति होने लगती है, नौवें माह में उसमें बाहरी प्रभावों से छटपटाहट होने लगती है जिसे उद्वेग[7] कहते हैं, और दसवें मास में वह (मुख-पृष्ठ) पूर्णतया विकसित शिशु बन जाता है जो किसी भी समय प्रसूति के लिए तैयार रहता है।

विकास की इस गुप्त यात्रा के दौरान गर्भस्थ जीव को अनेक मुश्किलों से दो-चार होना पड़ता है। माता जिह्वा-लोलुप या बीमार[8] हुई तो

---

6. **गर्भस्थ शिशु की धड़कनें सुन सकेंगे :** केरल राज्य इलेक्ट्रानिक निगम ने गर्भस्थ शिशु के दिल की धड़कन सुनने का उच्च क्षमता सम्पन्न आला विकसित किया है। इस आले की विशेषता यह है कि इससे गर्भस्थ शिशु की धड़कन सुनने के साथ-साथ यह भी पता लगाया जा सकता है कि गर्भ में जुड़वां बच्चे तो नहीं हैं। इसकी सहायता से चिकित्सक गर्भ में बच्चे के सिर की स्थिति का भी पता लगा सकते हैं। उल्लेखनीय है कि इसकी सहायता से मां भी अपने भावी शिशु के दिल की धड़कन सुन सकती है।—त्रिवेंद्रम का 17-11-83 का भारती से प्राप्त समाचार, **हिन्दुस्तान** 18-11-83, पृष्ठ 5 से साभार।

7. **गर्भाशय में गुमशुदा की तलाश :** गर्भाशय में गुमशुदा की तलाश काफी सरल हो गई है। बादलों की ओट में कभी कहीं भटक गये विमान को जिस तरह राडार राह दिखा देता है, उसी तरह डाक्टरों ने चिकित्सा विज्ञान में सोनार नामक चिह्न खोज निकाला है जो गर्भाशय में संयोगवश भटके बच्चे को सही राह पर सुरक्षित ला सकता है। लंदन की एक चिकित्सा विज्ञान की पत्रिका में एक 39 वर्षीय महिला के संदर्भ में यह रहस्योद्घाटन हुआ है। इस गर्भवती महिला का वजन 199 किलोग्राम है और इसके पेट पर इतनी चर्बी थी कि डाक्टरों को बच्चे का पता लगाने में पसीना छूटने लगा था। अन्त में सोनार की सहायता से बच्चा अपने आप सही जगह पर आ गया।—नई दिल्ली का 23-2-84 का वार्ता से प्राप्त समाचार, **हिन्दुस्तान**, 24-2-84, पृष्ठ 4 से साभार।

8. गर्भवती द्वारा खाये गए अन्न-जल, दवाओं आदि का प्रभाव भ्रूण पर अवश्य पड़ता है। गर्भवती द्वारा ली गयी औषधि टैट्रासाइक्लीन से बच्चे के दूध के दांत बिगड़ जाते हैं और यकृत खराब हो जाता है, स्ट्रैप्टोसीन के टीके लगवाने से बच्चे के कान खराब हो सकते हैं और आइसोनैक्स और सल्फा दवाओं के सेवन से बच्चे की मृत्यु तक हो सकती है। अतः गर्भावस्था के प्रथम चार माह में इन दवाओं का प्रयोग बिल्कुल नहीं, और उसके बाद बहुत सावधानी से करना चाहिए। गर्भवती अपनी खांसी रोकने के लिए एम्पिसिलीन नामक दवा चिकित्सक की निगरानी में ले सकती है। वह विटामिन बी काम्प्लैक्स खूब ले सकती है। विटामिन सी और कफनाशक दवाएं भी वह ले सकती है। फिर भी गर्भवती दवाओं का सेवन जितना कम करे उतना ही अच्छा होगा।—**हिन्दुस्तान**, 5-12-83, पृ० 4 पर प्रकाशित **गर्भावस्था और दवाएं** पर आधारित।

वेचारे भ्रूण को खट्टे-मीठे भोजन[9] या कड़ुवी-कसैली दवाइयों से ताल-मेल बिठाना पड़ता है। तरह-तरह के तनावों से गुजरती और विविध भावनाओं में बहती माता के असाधारण तापमान के थपेड़े भी उसे झेलने पड़ते हैं। कभी साथी भ्रूण हुआ या हुए तो उसकी या उनकी धकापेल उसकी नियति बन जाती है। साथी भ्रूण बीमार[10] हुआ तो उसे उससे अछूता रहना पड़ता है। माता या पिता या दोनों के शरीर या मन में दोष होने पर उसके भी सदोष या विकलांग हो जाने का अंदेशा रहता है।[11] घटना-दुर्घटना के फलस्वरूप अकाल प्रसूति की तलवार उस पर

---

9. भारत और कुछ अन्य देशों में यह माना जाता है कि गर्भवती स्त्रियों को प्रसव के कुछ दिन पहले से अधिक पोषक भोजन देने से बच्चा मोटा होता है। किन्तु इंग्लैण्ड के नोर्थविक अस्पताल में चिकित्सक डॉ. एंड्रयू व्हाइटला ने 144 बच्चों पर प्रयोग करके सिद्ध किया है कि उक्त मान्यता निराधार है।—हिन्दुस्तान, 28-12-83, पृष्ठ 7 पर प्रकाशित **मातृत्व की सेवा में विज्ञान** पर आधारित।

10. स्वीडन में किए गए एक प्रयोग के आधार पर अब युगल भ्रूणों में उस भ्रूण का प्रसव से पूर्व ही पता लग सकेगा जो विकलांग हो और उसे गर्भ में ही बिना किसी खतरे के नष्ट भी किया जा सकेगा। ऐसा ही एक प्रयोग न्यूयार्क के सिनाय स्कूल ऑफ मेडिसिन में डॉ. थामस केरनी और उनके सहयोगियों ने किया है। उन्होंने दूरदर्शन पर प्रदर्शित करते हुए एक चालीस-वर्षीय स्त्री के चार माह के गर्भ की जांच करते हुए बताया कि उसके गर्भ में दो भ्रूण हैं जिनमें से एक विकलांग है। उन्होंने उसी समय उस भ्रूण के हृदय से आधा रक्त निकाल लिया जिससे उसकी धड़कन धीरे-धीरे बन्द हो गई। आश्चर्य है कि तब से मृत अवस्था में भी वह जीवित भ्रूण के साथ गर्भ में ही रहा आया और उसके साथ जब वह यथासमय गर्भ से बाहर आया तब उसका वजन 60 ग्राम था जबकि जीवित बच्चे का वजन 3 किलो 200 ग्राम था।—हिन्दुस्तान, 28-12-83, पृष्ठ 7 पर प्रकाशित **मातृत्व की सेवा में विज्ञान** पर आधारित।

11. **गर्भ में ही दिल की बीमारी की जांच संभव :** अब गर्भाशय में ही बच्चों के दिल की बीमारी ठीक हो सकती है। लंदन के गाइ अस्पताल में ऐसी छह गर्भवती महिलाओं की परीक्षा से यह बात पता चली है जिनके गर्भ में पल रहे बच्चों के दिल की धड़कनें अनियमित पाई गई थीं। इन महिलाओं को दवा दी गई और बच्चे ठीक हो गए। डॉ. लिडसे एलन परीक्षण करके यह पता लगाने में सफल रहीं कि दिल का स्वरूप व विकास और धड़कनें किस तरह की होनी चाहिए। गर्भ धारण के 16 से 18 सप्ताह के बाद अब यह पता लग सकता है कि बच्चे के दिल में कोई बीमारी है या नहीं।—नई दिल्ली का 21-2-84 का वार्ता से प्राप्त समाचार, हिन्दुस्तान, 22-2-84, पृष्ठ 5 से साभार।

निरन्तर लटकी रहती है। उसके भले के लिए ही सही, लेकिन चिकित्सक लोग भी उसे खूब ही सताते हैं।[12] और फिर 'जननी उदर वस्यो नव मास, अंग सकुच तें पाई त्रास; निकसत जे दुख पाये घोर, तिनको कहत न आवे ओर।'[13] इतने पर भी, माता-पिता और संबन्धियों की आकांक्षा के विपरीत पुत्री या पुत्र हुआ तो उसे प्रसूति के बाद भी उपेक्षा का शिकार होना पड़ता है। और, इतनी सारी अलाओं-बलाओं के बावजूद ग्रह-नक्षत्रों की जकड़ तो है ही।

रजोदर्शन, गर्भाधान, भ्रूण-विकास, भ्रूण-लिंग, भ्रूण-संख्या, प्रसव आदि के गोश-वारे में इतना और जोड़ लेना होगा कि उन सभी पर कदम-कदम पर ग्रह-स्थितियों का शुभ या अशुभ प्रभाव पड़ता है। गर्भाधान और प्रसव कब किन परिस्थितियों में होंगे तथा उनके परिणाम माता, पिता, नवजात शिशु और उनके संबन्धियों की दृष्टि से कैसे होंगे, इन सब प्रश्नों का उत्तर तो ग्रह-स्थितियों पर निर्भर है ही, उन पर इन प्रश्नों का उत्तर भी निर्भर है कि प्रसव के समय माता-पिता कहां किन परिस्थितियों में रह रहे होंगे, माता किस रंग के वस्त्र पहने होगी, प्रसूतिका गृह कहां, किस दिशा में, किस प्रकार का होगा और उसमें दीपक कहां कैसा रखा होगा।

उपर्युक्त वैज्ञानिक आविष्कारों और प्रयोगों के प्रकाश में इस गोश-वारे की जांच करने में वे टिप्पणियां सहायक होंगीं जो उसके साथ दी गयी हैं। इन टिप्पणियों से जीवविज्ञान, आनुवंशिकी और आनुवंशिक आभियान्त्रिकी की उपरिलिखित कामयाबियों की संपुष्टि भी होगी।

---

12. मांट्रियल, कनाडा, में एक चिकित्सक डॉ. जैक लारेन ने सौ दम्पतियों पर प्रयोग करके निष्कर्ष निकाला है कि गर्भवती स्त्रियाँ नमक अधिक खाएं तो वे बच्चा जनेंगीं, न कि बच्ची। नमकीन भोजन में सोडियम व पोटेशियम की मात्रा बढ़ाकर 216 गर्भवती स्त्रियों को उन्होंने नियमित आहार दिया और पाया कि उनमें से 175 स्त्रियों को उनकी अपनी इच्छा के अनुसार संतान प्राप्त हुई।
—हिन्दुस्तान, 28-12-83, पृष्ठ 7 पर प्रकाशित **मातृत्व की सेवा में विज्ञान** पर आधारित।

13. पं. दौलतराम : **छहढाला** 1-14।

कुछ दहशतें, कुछ आशंकाएं

वैज्ञानिकों की उपर्युक्त चमत्कारी कामयाबियों से राजनीतिज्ञों, समाज-शास्त्रियों आदि के कान खड़े हुए हैं। वैज्ञानिक सच्चाइयों से अपरिचित या खुदा के धंधे में बंदे की दखलंदाजी से परेशान कुछ धर्म-धुरंधरों ने भी आवाज उठायी है। और तो और, खुद कुछ वैज्ञानिक इन काम-यावियों को खौफ की निगाह से देख रहे हैं।

इन सब को दहशत है, आशंका है, कि इस तरह की करामात से दुनिया की समाज-व्यवस्था तहस-नहस हो जाएगी; हो सकता है कि तब न धर्म रहे न नैतिकता, न साहित्य रहे न संस्कृति, न कला रहे न कानून; ऐसा भी हो सकता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आपमें इतना सीमित हो जाए कि माता-पिता के, भाई-बहन के, मित्र-पड़ोसी के और देश-दुनिया के रिश्ते धरे के धरे रह जाएं; किसी एक ही रंग या जाति या विचार-धारा की नस्ल ही सारी दुनिया पर हावी हो जाए, यह भी हो सकता है; और यह भी संभव है कि एक या कुछेक ऐसे गैर-मामूली आदमी विकसित कर लिये जाएं जो सारी दुनिया पर एकच्छत्र शासन करने लग जाएं।

उन सबकी एक दहशत यह भी है कि जर-जोरू-जमीन, झगड़े के जड़ तीन तो पहले ही मौजूद हैं, अब ये करामात चौथी जड़ बन पड़ेगी; शत्रु-सैन्य में सांप आदि घातक प्राणी छुड़वा देने या उसके खाने-पीने की चीजें जहरीली करा देने की पुरानी फितरतें अब जीवविज्ञान और आनुवंशिकी की बदौलत नई शक्ल अख्तियार करके बड़े पैमाने पर तबाही मचा सकती हैं; आणविक आविष्कारों से जो महाप्रलय आएगा वह तो बाहर से आएगा, लेकिन इन प्रयोगों से तो वह खुद आदमजाद की रूह का हिस्सा हुआ करेगा। वगैरह, वगैरह।

समाधान, समाधान

इसमें संदेह नहीं कि वैज्ञानिक आविष्कारों के उपयोग से मानवता का तनिक भी अनिष्ट नहीं होना चाहिए, किन्तु इन दहशतों और आशं-काओं में कुछ ही किसी हद तक बावजह हैं, जबकि ज्यादातर बेवजह हैं और कुछ तो हास्यास्पद भी हैं। वैसे ये दहशतें और आशंकाएं हैं

स्वाभाविक, क्योंकि हर नयी चीज से, विशेषत: वैज्ञानिक आविष्कारों से, अजनबीपन की बू आती है जो हममें उसके प्रति विरोध की भावना जगाती है; किन्तु धीरे-धीरे उसके परिचय में आकर हम उसके दीवाने हो जाते हैं और वही चीज,वही आविष्कार, हमारी क्षण-क्षण की अनिवार्य आवश्यकता बन जाती है।

दूसरे, मानवता के पहलू या आयाम इतने अधिक और इतने विविध हैं कि जो पहलू एक को इष्ट है वही दूसरे को अनिष्ट हो सकता है, जो पहलू एक स्थान पर इष्ट है वही दूसरे स्थान पर अनिष्ट हो सकता है, जो पहलू एक क्षण इष्ट है वही दूसरे क्षण अनिष्ट हो सकता है, और जो पहलू एक नजरिये से इष्ट है वही दूसरे नजरिये से अनिष्ट हो सकता है; उदाहरण के लिए, विद्युत् शक्ति या ऐसे ही किसी आविष्कार को इसलिए तिलांजलि नहीं दी जा सकती कि उससे अब तक अपार धन जन स्वाहा हो चुका है और भविष्य में उससे भी अधिक धन-जन के स्वाहा होने की संभावना है।

तीसरे, आविष्कार करने वाले और उन आविष्कारों का उपयोग करने वाले लोग हम आम लोगों से अधिक समझदार होते हैं, लिहाजा, उनमें मानवता के प्रति हम लोगों के लगाव से भी अधिक लगाव होता है। यही कारण है कि जीवविज्ञान और आनुवंशिकी में अब तक जो आविष्कार हुए हैं उनसे मानवता का अब तक कोई अनिष्ट नहीं हुआ है, इस आधार पर यह मानना अनुचित न होगा कि उनसे भविष्य में भी कोई अनिष्ट नहीं होगा। दूसरी ओर उन आविष्कारों से मानवता का बहुमुखी इष्ट सिद्ध हुआ है, इस आधार पर यह मानना उचित होगा कि उनसे भविष्य में भी इष्ट ही सिद्ध होगा। कौन नहीं चाहता कि वह या उसकी पत्नी बांझ न रहे, उसकी संतान उसकी कल्पना के अनुरूप हो, उसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाले रोगों से छुटकारा मिले, जिसका वह अंग है वह समाज सर्वगुण सम्पन्न हो, जिस आबहवा और पर्यावरण में वह सांस ले रहा है वह उसे हर तरह से सुविधाजनक हो, और जो कुछ उसे चाहिए वही मिलता रहे और जो नहीं चाहिए वह नष्ट होता रहे? वैज्ञानिक आविष्कारों से, अब तक के अनुभव के

आधार पर यही उम्मीद की जा सकती है, जो तर्कसंगत भी है और मानवता के हित में भी।

चौथे, वैज्ञानिक आविष्कारों से हमारे दार्शनिक, धार्मिक और सामाजिक सिद्धान्तों की पुष्टि होती है। पेड़-पौधों में भी प्राण होने की प्राचीन मान्यता, अणु में महाशक्ति छिपी होने का विज्ञान, स्याद्वाद का सिद्धान्त आदि वैज्ञानिक आविष्कारों और चिन्तन से संपुष्ट होकर आज विश्वस्तर पर स्वीकृत हो चुके हैं। दूसरी ओर, जो मान्यताएं और सिद्धान्त वास्तव में निराधार हैं, उनकी पुष्टि विज्ञान से न होती देख हम उनसे निजात पाकर अपने आप को और भी अधिक संस्कृत और परिष्कृत कर सकते हैं।

गोपी लाल अमर

ग्रन्थकार

स्व० आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ

प्रसव-चिन्तामणिः

आचार्य-मुकुन्द-दैवज्ञेन संकलितः
आचार्य-गोपीलाल-अमरेण च
संशोधन-परिवर्तन-संवर्धनादिभिर्नियोज्य
प्रस्तावना-परिशिष्टादिभिश्चालंकृत्य
संपादितोनूदितश्च

मङ्गलाचरणम्

(अनुष्टुप्)

निधाय मानसे नन्दनन्दन-पाद-पङ्कजम् ।
कुर्वे मुकुन्दः प्रसव-चिन्तामणिं मुदे सताम् ।।

(शार्दूलविक्रीडितम्)

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवल-ज्ञानभाक् ।
यः कैवल्य-पुर-प्रवेश-महिमा संभावितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ।।

प्रथमः प्रकाशः

ग्रन्थस्यास्य रचनाया उद्देश्यम्

1-1 अनुष्टुप्

फल-विभागमुत्पत्तिं विना कार्योत्र कस्य वै ।
कारण-भूतमाधानं सर्वेषां प्राणिनामतः ।।

1-2 उपजातिः

प्रसूति-कालस्य विनिश्चयार्थम्
आधान-कालं कथयन्ति मुख्यम् ।
प्रश्नस्य कालं च ततोत्र जन्म
कालं ह्यथादौ कथयामि भादेः ।।

भविष्यवाणी प्रथम-रजोदर्शनात्

1-3 अनुष्टुप्

सर्वासां योषितामाद्य-रजो-दर्शनतो वदेत् ।
शुभाशुभ-फलं तज्-ज्ञो वशिष्ठेनैवमीरितम् ।।

रजोदर्शनं कथं भवति

1-4 उपजातिः

पयः शशांको दहनो महीजः
कं शोणितं पावक एव पित्तम् ।
एवं विहीने रुधिरेबलासु[1]
प्रवर्तते पित्तत एव आर्तवम् ।।

1. (आर्या) इन्दुर्जलं कुजोग्निर्, जल-मिश्रं त्वग्निरेव पित्तं स्यात् । एवं रक्ते क्षुभिते, पित्तेन रजः प्रवर्तते स्त्रीषु ।। (आर्या) अनुपचय-राशि-दृष्टे, कुमुदाकर-बान्धवे रुधिर-दृष्टे । प्रतिमासं युवतीनां, भवतीह रजो ब्रुवन्त्येके ।। सारावली ।

रजोदर्शन

इस ग्रन्थ की रचना का उद्देश्य

किस प्राणी को किस राशि, नक्षत्र आदि का क्या फल मिलेगा, इस प्रश्न का उत्तर तभी दिया जा सकता है जब उसका जन्म-काल मालूम हो। जन्म-काल मालूम करने के लिए उसके गर्भाधान का काल मालूम होना आवश्यक है, क्योंकि किसी भी प्राणी का जन्म तभी होता है जब उसका गर्भाधान हो चुका हो।

इसलिए; जिसके जन्म-काल का पक्का पता लगाना हो उसके गर्भाधान के काल का पक्का पता लगाना अनिवार्य है। इसीलिए, इस ग्रन्थ में गर्भाधान, जन्म आदि की राशि, नक्षत्र आदि का फल बताया जा रहा है।

भविष्यवाणी का आधार प्रथम रजोदर्शन

किसी भी स्त्री की किस राशि, नक्षत्र आदि का क्या फल होगा, इस प्रश्न का उत्तर देने के पहले यह जानना आवश्यक है कि उसे प्रथम रजोदर्शन कब हुआ, अर्थात् जब वह स्त्री प्रथम बार रजस्वला हुई तब किस राशि, नक्षत्र आदि का उदय था। यह ऋषि वशिष्ठ का मत है।

रजोदर्शन क्यों होता है

जल पर चन्द्र ग्रह का प्रभाव होता है, इसीलिए जल की प्रकृति शीतल होती है। अग्नि पर मङ्गल ग्रह का प्रभाव होता है, इसीलिए अग्नि उष्ण होती है। मानव-शरीर में जल रक्त के रूप में विद्यमान रहता है और अग्नि पित्त के रूप में विद्यमान रहती है। पुरुष के शरीर में जल और अग्नि, अर्थात् रक्त और पित्त साथ-साथ रहे आते हैं। किन्तु स्त्री के शरीर में पित्त के कारण रक्त में समय-समय पर खलबली होने लगती है जिससे विकार पैदा हो जाता है। यही विकार वाला रक्त जब उसकी योनि से निकलने लगता है तब कहा जाता है कि उसे रजोदर्शन हो रहा है, अर्थात् वह रजस्वला है।

रजस्वलायाः प्रत्यभिज्ञानम्

1-5 अनुष्टुप्

अच्छाननां कृशां कम्प-युग्त-काञ्चीपद-स्तनाम् ।
स्कन्नदृक्-तुन्दि-पुंकामां जानीयात् स्त्रीं रजस्वलाम्[1] ।।

रजोदर्शन-काले पुरुषस्य कर्तव्यम्

1-6 अनुष्टुप्

आर्तवस्यैव समये नख-दन्त-क्षतानि च ।
न कुर्यात् पुरुषो विद्वान् कथंचिदेव योषिताम् ।।

रजोदर्शन-काले स्त्रियाः कर्तव्यम्

1-7 अनुष्टुप्

माल्यानुलेपनं स्नानं निषेवेन्न दिन-त्रयम् ।
चतुर्थेहन्यंगना स्नायाच्छास्त्रोक्त-विधिना सदा ।।

ऋतु-स्नानस्य विधानम्

1-8 वसन्ततिलका

मैत्रेन्द्विनाश्वि-वसु-शक्र-मरुद्-ध्रुवर्क्षैः
स्नायाद् वधूर्ऋतुमती यदि सत्तिथौ च ।

1. (अनुष्टुप्) आद्यं रजः शुभं माघ-मार्ग-राधेषु फाल्गुने । ज्येष्ठ-श्रावणयोः शुक्ले, सद्वारे सत्तनौ दिवा ।। (अनुष्टुप्) श्रुतित्रय-मृदु-क्षिप्र-, ध्रुव-स्वातौ सिताम्बरे । मध्यं च मूलादिति-भे, पितृ-मिश्रे परेष्वसत् ।। (शालिनी) भद्रा-निद्रा-संगमे दर्श-रिक्ता-संध्या-षष्ठी-द्वादशी-वैधृतेषु । रोगेष्टम्यां चन्द्र-सूर्योपरागे, पाते चाद्यं नो रजो-दर्शनं सत् ।। राम-दैवज्ञः ।

रजस्वला स्त्री की पहचान

रजोदर्शन के समय अर्थात् रजस्वला होने की अवस्था में स्त्री के शरीर में कुछ विशेषताएं आ जाती हैं। उसका मुख धुला-धुला लगने लगता है। शरीर दुबला-सा दीखने लगता है। उसकी कमर और स्तन कुछ कांपने-से लगते हैं। आंखें ढली-ढली रहने लगती हैं। उसका पेट आगे को उभर-सा आता है। और, वह मर्द की ओर ललचायी नज़र से देखने लगती है।

रजोदर्शन के समय पुरुष का कर्तव्य

रजोदर्शन के समय स्त्री और भी अधिक सुकुमार या नाजुक हो जाती है, इसलिए पुरुष का कर्तव्य हो जाता है कि वह उसे कम ही छेड़े और ध्यान रखे कि उसे नाखून न चुभ जाएं और दांत न गड़ जाएं।

रजोदर्शन के समय स्त्री का कर्तव्य

प्राय: तीन दिन चलने वाले रजोदर्शन के समय स्त्री का भी कर्तव्य हो जाता है कि वह कम-से-कम प्रसाधन करे। चोटी आदि में माला न गूंथे, पाउडर आदि न लगाए, यहां तक कि स्नान भी न करे। यह सब करने में जो परिश्रम होता है उसके लिए उसका शरीर तैयार नहीं होता। उसे प्रसाधन-हीन देखकर पुरुष भी उसे छेड़ने को उत्तेजित नहीं होगा जिससे नाखून चुभने, दांत गड़ने आदि की संभावना नहीं रहेगी। चौथे दिन या जब रजोदर्शन पूरा हो चुके तब वह स्नान, प्रसाधन आदि करे और इसमें शास्त्रीय नियमों का पालन सदा करे।

ऋतुस्नान का विधान

रजोदर्शन के पश्चात् किया जाने वाला स्नान ऋतुस्नान कहलाता है। स्त्री यदि अपने जीवन का सर्वप्रथम ऋतुस्नान करने वाली हो तो उसके लिए वह ऐसा दिन चुने जब अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और ध्रुव में से किसी नक्षत्र का उदय हो, पखवाड़े की पहली, दूसरी, तीसरी, पांचवीं, सातवीं, दसवीं, ग्यारहवीं, तेरहवीं और पन्द्रहवीं में से कोई तिथि हो और सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार और शुक्रवार में से कोई दिन हो। अश्विनी, रोहिणी,

कल्याण-खेट-दिवसे द्रुतमेति गर्भं
ब्राह्माश्विनी-कर-समीरण-चान्द्र-पौष्णोः ॥

संभोगस्य विधानम्

1-9 उपजातिः

[1]एवं भवत्यार्तव-संज्ञकं यत्
तदेव गर्भस्य निमित्तमुक्तम् ।
वृद्धि गतेऽब्जे प्रतिमासमार्यैस्
तस्येक्षणं चेद् विफलं प्रदिष्टम्[2] ॥

संभोगस्य मुहूर्तम्

1-10 शिखरिणी

त्यजेद् भद्रां षष्ठीमिन-मृदु-महीजाद्य-रजनीश्-
चतस्रः पर्वाहं[3] जनक-जननी-श्राद्ध-दिवसम् ।
दिवा सन्ध्यां रिक्तामथ शुभ-तिथौ शस्तमुदितं
निषेकं मैत्रेन्दु-ध्रुव-वसु-हरीनानिल-शतैः ॥

संभोगस्य योगायोगौ

1-11 उपजातिः

कुजेक्षितेऽब्जे यदि वृद्धि-भ-स्थे
योग्यापि गर्भ-ग्रहणे स्त्रियो नुः ।

1. (आर्या) एवं यद् भवति रजो, गर्भस्य निमित्तमेव कथितं तत्। उपचय-संस्थे विफलं, प्रतिमासं दर्शनं तस्य ॥ सारावली ।

2. (आर्या) द्वि-पदादयो विलग्नात्, सुरतं कुर्वन्ति सप्तमे यद्वत् । तद्वत् स्त्री-पुरुषाणां, गर्भाधाने समादेश्यम् ॥ (आर्या) अस्ते शुभ-युत-दृष्टे, स-रोष-कलहो भवेद् ग्राम्यः । सौम्यं सौम्यैः सुरतं, वात्स्यायन-संप्रयोगिकाख्यातम् ॥ (आर्या) विषयेषु ग्रह-राशिषु, मैथुनमेकं द्वि-वारमितरेषु । बहुशो विक्रम-बहुलं, भृगु-कुज-

मृगशिरा, हस्त, स्वाति और रेवती में से किसी नक्षत्र के उदय में यदि ऋतुस्नान किया जाए तो शीघ्र गर्भाधान की संभावना रहती है।

संभोग का विधान

ऋतु स्नान के पश्चात् संभोग से सामान्य रूप से गर्भाधान होता है किंतु जिस स्त्री की जन्म-राशि से उपचय-स्थान अर्थात् तीसरे, छठवें, दसवें और ग्यारहवें में से किसी स्थान में चन्द्र का उदय हो उसका मासिकधर्म या रजोदर्शन प्रतिमास व्यर्थ रहेगा अर्थात् ऋतुस्नान के पश्चात् संभोग करने पर भी वह गर्भवती नहीं हो सकेगी।

संभोग का मुहूर्त

भावी शिशु का गर्भाधान संस्कार संपन्न करने की दृष्टि से संभोग के लिए ऐसा दिन चुना जाए जो अग्रलिखित में से कोई न हो : भद्रा अर्थात् विष्टि करण; पखवाड़े का छठवां दिन; रविवार, मङ्गलवार और शनिवार; रजोदर्शन के तुरंत बाद के चार दिन, यदि संभोग रात्रि में किया जाए तो; अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या और पूर्णिमा नामक चार पर्व-दिनों में से कोई; माता-पिता के श्राद्ध का दिन; संध्याकाल; पक्ष का चौथा, नौवां और चौदहवां दिन अर्थात् रिक्ता तिथि। उक्त दृष्टि से संभोग के लिए चुना गया दिन शुभ होता है यदि तब इनमें से किसी नक्षत्र का उदय हो : मृगशिरा, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और ध्रुव।

संभोग का योग-अयोग

स्त्री की जन्म-राशि से उपचय-स्थान अर्थात् तीसरे, छठवें, दसवें और ग्यारहवें में से किसी स्थान में चन्द्र यदि मङ्गल से दृष्ट हो तो वह पुरुष से संभोग करती ही है और उससे गर्भाधान भी होता ही है। इसी प्रकार, पुरुष की जन्म-राशि से उपचय-स्थान अर्थात् तीसरे, छठवें, दसवें और ग्यारहवें में से किसी स्थान में चन्द्र यदि गुरु से दृष्ट हो तो वह स्त्री से संभोग करता ही है और उससे गर्भाधान भी होता ही है। किंतु, यदि

वर्गात्मकं सुरतम् ।। (अनुष्टुप्) लग्नस्थो वा सुखस्थो वा, धर्मस्थो वा बली ग्रहः। प्रोक्तर्क्षे शुभ-वारे च, धारयेद् गर्भमुत्तमम् ।। ग्रन्थान्तरम् ।

3. (अनुष्टुप्) चतुर्दश्यष्टमी चैव, अमावस्या च पूर्णिमा। पर्वाण्येतानि राजेन्द्र, रवि-संक्रान्तिरेव च ।। विष्णुपुराणम् ।

तथेज्य-दृष्टे ऋतु-काल इन्दौ
नृ-योषितोर् योगमतोन्यथा नो[1] ।।

रजोदर्शन-संभोगयोः संबन्धः

1-12 वसन्ततिलका

चन्द्रे स्त्रियोनुपचये कुज-वीक्ष्यमाणे
जातं रजो भवति गर्भ-फल-प्रदं तत् ।
चेदन्यथा विफलमिष्ट-सितेज्य-दृष्टे
पुंसां विधावुपचयं महिला-नृ-योगः ।।

ऋतु-चक्र-संभोगयोः संबन्धः

1-13 उपजातिः

ऋतूदयात् षोडश-शर्वरीणां
सीमन्तिनीनामृतु-काल आसाम् ।
आधान-योग्या न चतस्र आद्याः
पराः शुभा नन्दन-दाः समाः[2] स्युः ।।

1. (आर्या) पुरुषोपचय-गृहस्थो, गुरुणा यदि दृश्यते हिम-मयूखः । स्त्री-पुरुष-संयोगं, तदा वदेदन्यथा नैव ।। बादरायणः ।

2. (शालिनी) पुत्रोल्पायुर् दारिका वंश-कर्ता, बन्ध्या पुत्रः सुन्दरीशो विरूपः । श्रीमान् पापा धर्मशीलस् तथा श्रीः, सर्वज्ञः स्यात् तुर्य-रात्रात् क्रमेण ।। ग्रन्थान्तरम् ।

उक्त योग नहीं बनता हो तो दोनों में से कोई भी संभोग नहीं कर सकता, इसीलिए गर्भाधान का प्रश्न ही नहीं उठता।

रजोदर्शन और संभोग का संबन्ध

जब रजोदर्शन चल ही रहा हो तब स्त्री की जन्म-राशि से अनुपचय-स्थान में अर्थात् पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, आठवें, नौवें और बारहवें में से किसी एक स्थान में विद्यमान चन्द्र यदि मङ्गल से दृष्ट हो तो उस रजोदर्शन के पश्चात् संभोग होगा ही और उससे गर्भाधान भी होगा ही, अन्यथा कुछ भी नहीं होगा। इसी प्रकार, जब स्त्री का रजोदर्शन चल रहा हो तब पुरुष की जन्म-राशि से उपचय-स्थान में अर्थात् तीसरे, छठवें, दसवें और ग्यारहवें स्थान में से किसी एक में विद्यमान चन्द्र यदि मित्र-ग्रहों अर्थात् शुक्र और गुरु से दृष्ट हो तो उस रजोदर्शन के पश्चात् संभोग होगा ही और उससे गर्भाधान भी होगा ही, अन्यथा कुछ भी नहीं होगा।

ऋतु-चक्र और संभोग का संबन्ध

रजोदर्शन के पश्चात् सोलह रात्रियों का समय ऋतु-चक्र कहलाता है। इनमें से पहली चार और सभी विषम रात्रियों को छोड़कर शेष रात्रियों में से अर्थात् छठवीं, आठवीं, दसवीं, बारहवीं, चौदहवीं और सोलहवीं में से किसी भी रात्रि में किये गये संभोग से गर्भाधान हो तो गर्भस्थ शिशु पुत्र होगा, क्योंकि ये रात्रियां शुभ मानी गयी हैं। रजोदर्शन के पश्चात् तीन रात्रियां छोड़कर ऋतु-चक्र की शेष तेरह रात्रियों में किये गये संभोग से जो शिशु होगा वह पुत्र होगा या पुत्री और उसके गुण-अवगुण क्या होंगे, इस प्रश्न का उत्तर है: चौथा दिन: पुत्र, अल्पायु; पांचवां दिन: पुत्री, जो वेश्यावृत्ति ग्रहण कर लेगी; छठवां दिन: पुत्र, जो वंश का नाम उज्ज्वल करेगा; सातवां दिन: पुत्री, बन्ध्या; आठवां दिन: पुत्र, सामान्य; नौवां दिन: पुत्री, रूपवती; दसवां दिन: पुत्र, ऐश्वर्यशाली; ग्यारहवां दिन: पुत्री, कुरूपा; बारहवां दिन: पुत्र, श्रीमान्; तेरहवां दिन: पुत्री, पापिनी; चौदहवां दिन: पुत्र, धर्मात्मा; पंद्रहवां दिन: पुत्री, लक्ष्मीरूपा; सोलहवां दिनः पुत्र, सर्वज्ञ।

रजोदर्शनमनु सावधानता

1-14 अनुष्टुप्

सीमन्तिन्यधिके रक्ते वीर्ये पुष्टे भवेत् पुमान् ।
ज्ञेयं नपुंसकं यत्र समता रक्त-वीर्ययोः[1] ।।[2]

दोहदस्य पूर्तिरनिवार्या

1-15 अनुष्टुप्

तृतीये मासि वामानां लालसेह प्रजायते ।
स्वभावैर्मासपस्यान्यदंग-योगादिभिः फलम् ।।

गर्भवती-भोजन कीदृशं भवेत्

1-16 अनुष्टुप्

जननी-भोजनं पूर्वं प्रसूतेः पस्त्यपाद् वदेत् ।
मित्रे विभौ वदेद् रूक्षं मधुरं कठिनं विधौ ।।

1. (उपजातिः) रक्तेधिके स्त्री पुरुपस्तु शुक्रे, नपुंसकं शोणित-शुक्र-साम्ये। यस्मादतः शुक्र-विवर्धकानि, निषेवितव्यानि रसायनानि ।। वृहत्संहिता ।

2. (वसन्ततिलका) जात्यं मनो-भव-सुखं सु-भगस्य सर्वम्, आभास-मात्रमितरस्य मनो-वियोगात् । चित्तेन कामयति दूरगतं हि यं स्त्री, गर्भं बिभर्ति सदृशं पुरुषस्य तस्य ।। (वसन्ततिलका) स्त्रीणां गतोनुपचयर्क्ष-मनुष्य-रश्मिः, संदृश्यते

रजोदर्शन के पश्चात् सावधानी

संभोग के समय स्त्री के रक्त या रज और पुरुष के वीर्य या शुक्र के संयोग से गर्भाधान होता है। रज की मात्रा अधिक और वीर्य की कम हो तो शिशु पुत्री होता है, रज की मात्रा कम और वीर्य की मात्रा अधिक हो तो पुत्र, और, रज और वीर्य की मात्रा बराबर हो तो नपुंसक होता है। इसलिए पुरुष को चाहिए कि वह ऐसे रसायनों का सेवन करे जो वीर्य की वृद्धि करते हों, ताकि रज और वीर्य का यथोचित सामंजस्य वैठ सके। दूसरी ओर स्त्री को भी इस संबन्ध में वहुत सावधान रहना चाहिए क्योंकि भावी शिशु के लिङ्ग और गुणावगुण का निर्धारण शारीरिक संभोग से तो होता ही है, मानसिक संभोग से भी होता है। यहां तक कि रजोदर्शन के समय स्त्री जिस पुरुष के प्रति मन-ही-मन ललचा जाती है उसी पुरुष के अनुसार उसका भावी शिशु सुन्दर-कुरूप, गुणी-अवगुणी होता है, फिर चाहे वह संभोग किसी भी पुरुष से क्यों न करे। इसीलिए स्त्री को चाहिए कि रजोदर्शन के समय और उसके पश्चात् वह न केवल शारीरिक रूप से, वल्कि मानसिक रूप से भी, पूरी-पूरी सावधानी वरते।

दोहद की पूर्ति आवश्यक है

ऋतु-चक्र के अनुसार संभोग के फलस्वरूप गर्भाधान हो चुकने पर, गर्भवती स्त्री के मन में विशेषतः गर्भाधान के तीसरे माह में, कोई खास चीज पाने की या कोई खास काम करने की अतिप्रवल इच्छा जागती है। यह इच्छा दोहद या दौहृद कहलाती है। पुरुष को चाहिए कि वह दोहद की यथासंभव पूर्ति अवश्य करे, क्योंकि उसका प्रभाव गर्भवती पर तो पड़ता ही है, गर्भस्थ शिशु पर भी पड़ता है।

गर्भवती का भोजन कैसा हो

प्रसव-काल से पूर्व माता के भोजन में क्या-क्या खाद्य पदार्थ हों, इस प्रश्न का उत्तर इस प्रश्न के उतर पर आधारित है कि प्रसव-लग्न से चतुर्थ

यदि धरा-तनयेन तासाम्। गर्भ-ग्रहार्तवमुशन्ति तदा सु(न)वन्ध्या-वृद्धातुराल्प-वय ामपि नै(चै)तदिष्टम्॥ (आर्या) उपचय-भवने शश-भृद्,-दृष्टो गुरुणा सुहृद्भिरथ वासौ। पुंसां करोति योगं, विशेषतः शुक्र-संदृष्टः॥ (आर्या) चन्द्रे कुजेन दृष्टे, पुष्पवती सह विटेन संयोगम्। राज-पुरुषेण रविणा, रविजेनाप्नोति भृत्येन॥ (आर्या) एकैकेन फलं स्याद्, दृष्टे नान्यैः कुजादिभिः पापैः। सर्वैः स्व-गृहं त्यक्त्वा, गच्छति वेश्या-पदं युवतिः॥ ग्रन्थान्तरम्।

1-17 अनुष्टुप्
कोमलं लेह्य-पेयाद्यं गोत्रा-पुत्रे गुडं पयः ।
शोषणाम्लं ततो हेम्ने स्वल्पं विचित्र-भोजनम् ॥
1-18 अनुष्टुप्
वागीश्वरे बहु-रसं वटकाद्यं ततः सिते ।
हिमं पेयादि-मधुरं कोले कोद्रव-दूर्वकम् ॥

स्थान में कौन-सी राशि है और उस राशि का स्वामी कौन है और वह स्वामी भी कितना बलवान् या कितना निर्बल है। प्रसव-लग्न से चतुर्थ स्थान में जो राशि हो उसका स्वामी यदि (1) सूर्य हो तो माता के भोजन में रूखे, कठोर या सख्त किंतु मधुर पदार्थ होने चाहिए; (2) चन्द्र हो तो मुलायम पदार्थ, जैसे हलवा, रबड़ी और यहां तक कि पेय पदार्थ होने चाहिए; (3) मङ्गल हो तो उसे गुड़. दूध, सूखे और खट्टे पदार्थ परोसे जाने चाहिए; (4) बुध हो तो उसका भोजन थोड़ा हो किंतु उसमें तरह-तरह के पदार्थ होने चाहिए; (5) गुरु हो तो उसके भोजन में खट्टे, मीठे चटपटे बड़ा, पकौड़ियां आदि पदार्थ अवश्य हों; (6) शुक्र हो तो उसे भोजन में शीतल और मधुर खाद्य और पेय पदार्थ दिये जाने चाहिए; और (7) शनि हो तो उसे कोदों आदि ऐसे अन्न और फलों से बना भोजन देना चाहिए जो बहुत आसानी से पचाया जा सके।

द्वितीयः प्रकाशः

गर्भाधानं कदा भवेत्

2-1 मालिनी

उपचय-गृह-यातौ पुं-जनुर् भात् स-वीर्यौ
दिनकर-दनुजाच्यौं स्वीय-भांशोपगौ वा ।
तुहिन-कर-कुजौ स्त्री-भात् तथाधान-लग्नाद्
उत पुर-पथि धी-स्थे सौजसीज्ये स-गर्भा ॥

2-2 मालिनी

यदि पुरुष-विहंगा मातुलोपान्त्य-याता
बलवति मति-नाथेन्यैः खगैरोज-भ-स्थैः ।
किमुदय-भवनेशो मन्त्रगो वा मद-स्थो
वपुषि मति-मदेशौ कामिनी गर्भमेति॥

2-3 इन्द्रवज्रा

चेत् प्राक् कुजादोज-भ-गौ दिनेश-
वागीश्वरावोज-लवेषु संस्थौ ।
किं वा बलैः स्थान-मुखैः समेतौ
गर्भं समेतीज्य-भ-पौ पुर-स्थौ[1] ॥

1. (अनुष्टुप्) स्वांशके वा स्व-राशौ वा शुक्रार्कोपचये पुमान् । त्रिकोणे बलवज्-जीवे, योग-त्रितयमुच्यते ॥ (अनुष्टुप्) गुर्वर्कावोज-राशि-स्थावोजांशेषु विलग्नतः ।

गर्भाधान

गर्भाधान कब होगा

पुष्पवती या रजस्वला हो चुकने पर अर्थात् रजोदर्शन के पश्चात्, ऋतु-चक्र के अनुसार, जब गर्भाधान का उपक्रम चल रहा हो तब स्त्री की और पुरुष की कभी अलग-अलग और कभी साथ-साथ, जिन राशि, नक्षत्र आदि का उदय हो उन राशियों, नक्षत्रों आदि की विभिन्न स्थितियों के अनुसार गर्भाधान कभी तो होगा, कभी नहीं होगा, कभी विलम्ब से होगा और कभी कष्टसाध्य होगा। संभोग के समय बलवान् सूर्य और शुक्र अपनी राशि में और अपने नवांश में स्थित हों, और साथ ही पुरुष की राशि से उपचय-स्थान में अर्थात् तीसरे, छठवें, दसवें और ग्यारहवें में से किसी एक स्थान में हों तो गर्भाधान होगा। या संभोग के समय बलवान् चन्द्र और मङ्गल अपनी राशि में और अपने नवांश में स्थित हों, और साथ ही स्त्री की जन्म-राशि और गर्भाधान की लग्न से उपचय-स्थान में हों तो, या बलवान् गुरु गर्भाधान की लग्न से पञ्चम या नवम स्थान में हो तो भी गर्भाधान होता है।

संभोग के समय पुरुष ग्रह अर्थात् सूर्य मङ्गल और गुरु षष्ठ तथा लाभ में हों, या पञ्चमेश बलवान् हो और अन्य ग्रह विषम राशि में हों तो गर्भाधान होता है। पञ्चम और सप्तम में लग्नेश हो और लग्न में पंचमेश और सप्तमेश हों, संभोग के समय, तो भी गर्भाधान होता है।

यदि सूर्य और गुरु अपने नवांश में स्थित हों और संभोग की लग्न से विषम स्थान अर्थात् प्रथम, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम और एकादश में से किसी एक स्थान में हों तो गर्भाधान होता है। या फिर, संभोग के समय बलवान् चन्द्र और गुरु लग्न में हों तो गर्भाधान होता है।

जीवेन्दू वा विलग्न-स्थौ, स्थानादि-बल-संयुतौ।। (अनुष्टुप्) एवं योगैश् चतुर्भिस्तु, पुत्राह्वतौ निषेकतः। विबीजिनामिमेन स्युरुलूकस्यार्क-रश्मिवत् ।। गुरुः।

शीघ्रं गर्भाधानं कदा भवेत्

2-4 उपजातिः

समन्वितौ मूर्तिमतीश्वरौ मिथः
प्रोद्वीक्षितौ क्षेत्र-गतौ मिथोप्यथ ।
विभावरीशे विषमर्क्ष-भाग-गे
स्व-वर्ग-गैश् चन्द्र-कुजामरार्चितैः ॥

2-5 उपजातिः

विलोकिते पुं-खचरैस्तनावथा-
पत्यालयेशे प्रथमेथ वात्मजे ।
सोमांग-पौ स-त्वरितं तदा भवेद्
गर्भो विलम्बेन तु नक्त-योगतः[1] ॥

गर्भाधानस्य पूर्वोक्त-नियमानामपवादः

2-6 अनुष्टुप्

एते प्राक् कथिता योगा पुरुषाणां विबीजिनाम् ।
वृद्धानां बालकानां च न विचार्याः कदाचन ॥

ग्रह-स्थितिर् गर्भाधानं च

2-7 शालिनी

संतानाप्तेर् मुख्य-मार्गं प्रवक्ष्ये
दुश्चिक्यायांगास्त-धी-भाग्य-भानि ।
संतानाख्यानीरितानि ग्रह-ज्ञैस्
तेष्वप्यंगायात्मजानंग-भानि ॥

2-8 शालिनी

मुख्यानि स्युर् जन्म-लग्नाज् जनीन्दोश्
चेद् दम्पत्योर् गोचरेणामरेज्यः ।
आयात्यार्किश् चैषु गर्भस्य योगः
स्त्रीणां वाच्यः प्राक्तनाचार्य-वर्यैः ॥[2]

शीघ्र गर्भाधान कब होगा

शीघ्र गर्भाधान अर्थात् प्रायः प्रथम संभोग से ही स्त्री के गर्भवती होने का योग होता है यदि (1) गर्भाधान का लग्नेश और पञ्चमेश एक साथ एक ही राशि में हों, या वे दोनों एक-दूसरे को देखते हों, या दोनों एक-दूसरे की राशि में हों अर्थात् लग्नेश पञ्चमेश की राशि में और पञ्चमेश लग्नेश की राशि में हों, या (2) विषम राशि या विषम नवांश में चन्द्र हो, चन्द्र, मङ्गल और गुरु अपने वर्ग में हों और लग्न पुरुष ग्रहों से दृष्ट हो, या (3) लग्न में पञ्चमेश हो, या (4) पञ्चम में चन्द्र और लग्नेश हों। इसके विपरीत, गर्भाधान के समय नक्त-योग हो तो स्त्री विलम्ब से गर्भवती होती है।

गर्भाधान के पूर्वोक्त नियमों का अपवाद

गर्भाधान के संवन्ध में अभी तक जो भी नियम वताये गये हैं उनका एक अपवाद भी है। रजोदर्शन के पश्चात्, ऋतु-चक्र के अनुसार, पूर्वोक्त योगों या नियमों के अनुरूप भी कोई स्त्री यदि नपुंसक से या अतिवृद्ध से या वालक से संभोग करे तो वह कभी भी गर्भवती नहीं होगी।

ग्रह-स्थिति और गर्भाधान

गर्भाधान की संभावना या असंभावना ग्रहों की स्थिति पर भी निर्भर है। तृतीय, एकादश, लग्न, सप्तम, पञ्चम और नवम, ये छह स्थान ऐसे हैं जिनका सन्तान-प्राप्ति अर्थात् गर्भाधान के संदर्भ में विशेष महत्त्व है। उनमें से भी लग्न, एकादश, सप्तम और पञ्चम का तो और भी अधिक विशेष महत्त्व है। स्त्री और पुरुष दोनों के जन्म-लग्न और जन्म-चन्द्र राशि से पूर्वोक्त स्थानों में यदि गोचर से गुरु और शनि आएं तो गर्भाधान का योग होता है।

1. (उपजातिः) लग्नेश-कार्याधि-पयोर्न दृष्टिर्, मिथोथ तन्मध्य-गतेपि शीघ्रः। आदाय तेजो यदि पृष्ठ-संस्थान्,-न्यसेदथान्यत्र हि नक्तमेतत्॥ नीलकण्ठः।

2. (इन्द्रवज्रा) नरेषु भू-पञ्च-नव-द्वि-तर्क-दिगग्न्यगाब्धीभ-हरेन-तुल्याः। क्रमेण भानामविपूर्वकाणामनूष्म-भासः किल काल-संज्ञाः॥ (उपजातिः) रूपा-ह्यगांकांग-गुणागमाश्वि-दिगीश्वरेषूष्मकरैरभिन्नाः। मेषादिकानां विधवो वशासु ज्ञेयाः सदा काल-कलार्तिदा वा॥ ज्योतिर्विदाभरणे (5, 71-72) कालिदासः।

गर्भाधानं कतमे वर्षे

2-9 अनुष्टुप्

जन्मांगान्नवमे पुत्रे चारेणायाति नन्दनः ।
पञ्चमे देवता-पूज्यस् तद्वर्षे गर्भ ईरितः ।।

2-10 उपजातिः

यद्भे सुरेज्यस् तत ओज-हायने
चेत् संभवे सत्यथ गोचरे गुरौ ।
यद् भावतस् त्र्यस्त-भव-त्रि-कोण-भे
गर्भस्य योगो गदितस् तदब्दके ।।

2-11 उपजातिः

यद्वत्सरे भौम-भयोर् मिथो दृक्
गर्भस् तदब्दे कथितोंगनायाः ।
यस्यां समायां सुत-भाव-नाथो-
नुजोपगो गर्भ-करः स तस्याम् ।।

गर्भाधानं कतमे मासे दिने च

2-12 इन्द्रवंशा

गर्भाप्तिरार्किर् यदि गर्भ-संज्ञके
तिष्ठेत् तदा यात्यपि तत्र वाक्पतिः ।
पुं-वामयोः संभव-लग्नतो भव-
कोणास्त-पाश् चार-वशाद् भवोपगाः ।।

2-13 इन्द्रवंशा

ग्लौ-दृष्टयुक्ताः किमु दार-दैव-पौ
वास्तांग-नाथौ द्युन-दैव-देह-गौ ।
साच्छौ शशांकेक्षित-संयुतौ वधूर्
मासेह्नि तस्मिन् नुत गर्भमाप्नुयात् ।।

2-14 शालिनी

यस्मिन् मासे वासरे गर्भ-दाब्दे
स्वीयांशस्थैः सोम-सूर्यार-शुक्रैः ।
पुं-स्त्री-भाभ्यां वृद्धि-भावोपयातैर्-
मासे तस्मिन्नह्नि भार्या स-गर्भा ।।

गर्भाधान किस वर्ष होगा

गर्भाधान प्रथम रजोदर्शन के पश्चात् कुछ ही दिनों में भी हो सकता है, किंतु कभी-कभी कुछ वर्ष बाद भी होता है। इस संदर्भ में भी ग्रह-स्थिति का महत्त्व है। जिस वर्ष जन्म-लग्न की राशि से गोचर में नवम और पञ्चम राशि में शनि आए और पञ्चम राशि में गुरु गोचर में आए उसी वर्ष में गर्भाधान होता है।

जन्म-काल में गुरु का उदय जिस राशि में हो उसके आगे के विषम वर्षों में से किसी में गर्भाधान का योग होता है। या फिर, विवाह-काल के पश्चात् जिस वर्ष संबन्धी भावस्थ राशि से तृतीय, पञ्चम, सप्तम, नवम और एकादश राशि में गोचर से गुरु आए उसी वर्ष गर्भाधान होता है, किसी अन्य वर्ष में नहीं।

जिस वर्ष में मंगल और शुक्र एक-दूसरे को देखते हों उस वर्ष गर्भाधान का योग होता है। जिस वर्ष पंचम भाव का स्वामी तृयीय भाव की राशि में हो उस वर्ष गर्भयोग होता है।

गर्भाधान किस मास और किस दिन होगा

जिस वर्ष गोचर से गुरु उस स्थान में आए जिसमें जन्म-कालीन शनि हो, उस वर्ष गर्भाधान होता है, किन्तु वह स्थान गर्भोत्पादक अर्थात् पहले, तीसरे, पांचवें, सातवें, नौवें और ग्यारहवें में से कोई एक अवश्य होना चाहिए। स्त्री और पुरुष दोनों के जन्म-लग्न से पञ्चम, सप्तम, नवम और एकादश स्थानों के स्वामी गोचर से लाभभाव की राशि में जिस वर्ष आएं और चन्द्र से भी दृष्ट हों उस वर्ष गर्भाधान का योग होता है। या, पुरुष और स्त्री के जन्म-लग्न से सप्तम और नवम भाव के स्वामी, या सप्तमेश और लग्नेश सप्तम, नवम तथा लग्न में आकर शुक्र से युक्त हों, और ऐसी ही स्थिति में वे चन्द्र से दृष्ट और युक्त हों, उस समय जो मास और दिन हो उसी मास और दिन गर्भाधान का योग होता है।

सूर्य, चन्द्र, मङ्गल और शुक्र अपने-अपने नवांश में जिस मास और जिस दिन आएं और स्त्री और पुरुष की जन्म-राशि से उपचय-स्थान में भी आएं उसी मास और उसी दिन गर्भाधान का योग होता है।

गर्भाधानं कतमे समये

2-15 इन्द्रवज्रा

आचार्य-लग्नात्मज-प-स्फुटैक्य आदित्य-तष्टे परिशेष-राशौ ।
तस्मात्-त्रिकोणार्क्ष-गतेमरेड्ये संतान-लब्धि निगदन्ति धीराः ॥[1]

2-16 अनुष्टुप्

संतान-दो रवि-सुतो यदि जन्मनि लग्न-गः ।
गो-चरेण यदायाति लाभागारे तदेरितः ॥

गर्भाधानं कदा न भवेत्

2-17 इन्द्रवज्रा

आधान-तन्वास् तनये गतोर्जे
क्रूरे स-पापे सु-तपेस्त-निम्ने ।
किं क्षीण-चन्द्रे चरमास्पदस्थे
सौरौ सभौमे सलिले न गर्भः ॥

2-18 इन्द्रवंशा

नीचाश्रितैस् त्र्यादि-ख-गै रुतारुणे-
स्त्रे वा तनौ क्षीण-विधावकेथ वा ।
सेने सिते वासृजि काम उद्गमे
नार्ये सिते वा न हि गर्भ-संभवः ॥

एकमेव गर्भाधानं : काक-वन्ध्या

2-19 वसन्ततिलका

नीचे त्रिके तनय-पे स-खलेथ निम्ने
धीशे पतंगज-युतेथ जनौ युवत्याः ।
सौम्याब्ज-चारि-सहिते निलयालयस्थे
लोकंपृणे हरिण-दृग् यदि काक-बन्ध्या ॥

1. (वंशस्थम्) अथाहमाधान-विधानतो मतैर् लपामि धारामर-भूमिभृद्-विशाम् । स्वकीय-कर्मोदित-धर्म-कीर्तनैर् मनीषिणां संस्कृति-काल-निर्णयान् ॥ (उपजातिः)ईयाद् रजोदर्शन-कालतो नरो वशामहःपञ्चकमर्क-सावनम् । विहाय

गर्भाधान किस समय होगा

गुरु, लग्नेश और पञ्चमेश के राश्यादि-स्पष्ट का योग या जोड़ करके उसमें बारह का भाग देने पर जो शेष बचे उसमें, और, उस शेष बची संख्या से पञ्चम और नवम राशि में जिस समय गोचर से गुरु आए उस समय गर्भाधान का योग होता है।

जन्म-काल में लग्नस्थ शनि गोचर से जिस समय लाभ-भाव की राशि में आए उस समय भी गर्भाधान का योग होता है।

गर्भाधान कब नहीं होगा

गर्भाधान के लग्न से पञ्चम स्थान में निर्बल पाप ग्रह हो और पञ्चमेश पाप-युक्त होकर अस्तगत नीच राशि में हो तो गर्भाधान का योग नहीं होता। इसी प्रकार, गर्भाधान-काल में व्यय या दशम में क्षीण चन्द्र हो और चतुर्थ में शनि हो और वह भी मंगल से युक्त हो तो गर्भाधान संभव नहीं।

गर्भाधान का योग न होने की तीन स्थितियां और भी हैं: संभोग के समय तीन प्रभृति ग्रहों का नीच राशि में होना; संभोग-लग्न में सूर्य और मंगल का तथा व्यय में क्षीण चन्द्र का उदित होना; सूर्य से युक्त होकर मङ्गल और शनि का सप्तम और लग्न में होना और उसमें गुरु और शुक्र का न होना।

इकलौता गर्भाधान : काक-बन्ध्या

जो गर्भवती तो होती हो किंतु जीवन में एक ही बार, वह स्त्री काक-बन्ध्या कहलाती है। कोई स्त्री काक-बन्ध्या इन तीन में से किसी एक कारण से होगी : गर्भाधान के लिए संभोग करने वाले पुरुष के जन्म-काल में पापयुक्त पञ्चमेश का नीच राशि में रहते हुए त्रिक स्थान में रहना; उक्त पुरुष के नीच-राशिस्थ पञ्चमेश का शनि से युक्त होना; स्वयं स्त्री के जन्म-काल में उसके जन्म-लग्न से अष्टम स्थान में रहते हुए चन्द्र का शुभ ग्रह से युक्त होना।

युग्मासु विभावरीष्वतोप्यूर्ध्वं सुदायादफलाप्ति-कामवान् ॥ ज्योतिर्विदाभरणे (7, 1-2) कालिदासः।

गर्भाधानस्य अयोग्या: स्त्रिय:

2-20 इन्द्रवज्रा

पुष्पोज्झिता कर्कश-भात्र-युक्ता
स्थूलांगिनी रोग-युता कृशा च ।
बाला च बन्ध्या स्थविरा स्त्रियोष्टौ
संतान-कामाय विवर्जनीया: ।।

गर्भाधाने वाधका जन्म-ग्रहा:

2-21 उपजाति:

जनौ जलेरौ यम-भौम-संगम:
किं सार्क्यरीशे रुजि राजनि स्मरे ।
ब्रिभर्ति गर्भं मनुजस्य नांगना
मन्दे मदेर्के प्रथमे किमस्तभे ।।

2-22 इन्द्रवंशा

सार्के यमे यज्वपतिं पशोपगं
पश्येन् न पू:योथ पपी-पपीजनी ।
दृश्यार्धगौ ग्लावि गदे मदे खले
वेलाज-सौर्योर् जलभस्थयोस् तदा ।।

स्त्रियो वन्ध्या: कुतो भवन्ति

2-23 उपजाति:

संतान-भावोपगतैर् वसुंधरा-
तनूज-शीतांशु-भगैरकस्थयो:
स्वर्भाणु-कव्योरथ धी-घन-द्युन-
नारान्त्यगै: पाप-खगैर् वशाबला: ।।

2-24 शालिनी

कोण: कामेर्केंगगेथार्क-कालौ
कामे खस्थेब्जे न जीवेन दृष्टे ।

गर्भाधान के अयोग्य स्त्रियां

कुछ स्त्रियां ऐसी होती हैं जो बन्ध्या हों या न हों किंतु वे गर्भवती नहीं हो पातीं। इन्हें आठ वर्गों में विभक्त किया जाता है : इतनी अल्प-वयस्का कि अभी वह रजस्वला ही नहीं होती; इतनी वृद्धा कि उसका रजस्वला होना ही बन्द हो गया हो; जो कभी रजस्वला या पुष्पवती होती ही नहीं हो वह; बहुत ही दुबली-पतली; बहुत ही मोटी-चौड़ी; गर्भाधान में बाधक किसी रोग से ग्रस्त; अत्यन्त कर्कश या कठोर स्वभाव वाली; वन्ध्या या बांझ।

गर्भाधान में बाधक जन्म-ग्रह

कुछ स्त्रियां बन्ध्या तो नहीं ही होतीं, ऊपर लिखे किसी वर्ग में भी नहीं आतीं। वे सब प्रकार से गर्भाधान के योग्य होती हैं, फिर भी वे गर्भवती हो नहीं पातीं क्योंकि उनके जन्म-कालीन ग्रहों की स्थितियां गर्भाधान में बाधक होती हैं। वे स्थितियां अग्रलिखित हैं : चतुर्थ या षष्ठ स्थान में शनि और मङ्गल का समागम; छठवें स्थान में शनि-युक्त षष्ठेश और सप्तम में चन्द्र का होना; सप्तम में शनि और लग्न में सूर्य का होना; सप्तम में सूर्य-युक्त शनि का होना और दशम में स्थित चन्द्र का गुरु को न देखना; दृशार्ध में सूर्य और शनि का होना तथा षष्ठ में चन्द्र और सप्तम में पाप-ग्रह का होना; मङ्गल और शनि का जल-राशि में होना।

स्त्रियां बन्ध्या क्यों होतो हैं

गर्भाधान में समर्थ पुरुष से संभोग करके भी जो सामान्य स्त्री गर्भवती नहीं हो पाती वह बन्ध्या कहलाती है। उसके बन्ध्या होने का कारण उसके अपने जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति भी होती है। ऐसी स्थितियां अग्रलिखित हैं : पञ्चम में मङ्गल, चन्द्र और सूर्य तथा व्यय में राहु और शुक्र का होना; पञ्चम, लग्न, सप्तम, चतुर्थ और व्यय में पाप ग्रहों का होना; सप्तम में शनि और लग्न में सूर्य का होना; सप्तम में सूर्य और शनि का होना और दशम-गत चन्द्र का गुरु से दृष्ट न होना; षष्ठ-गत षष्ठेश का सूर्य तथा शनि से युक्त होना और सप्तम-गत

किं साकार्कि-द्वेष्यपोरौ ज्ञ-दृष्टो-
ब्जेस्तेस्थास्त्रार्की सुखेरौ च बन्ध्या ॥

2-25 इन्द्रवंशा

जायोदयान्त्येजु खलेषु शीतगौ
क्षोणेद्यराशौ तनयेथ भार्गवे ।
गण्डान्तभेस्ते तनये न सद्युते-
थास्तांगगौ कोण-कवी वशावला ॥

2-26 वसन्ततिलका

मृत्यौ बली मृति-पतिर् जनने न गर्भ-
योग्यर्तुमेति महिला जनितस्य तस्य ।
पापास् त्रयो धियि खलैस् त्रिभिरीक्षिता वा
वैरीक्षिता यदि वधू-पुरुषौ हि बन्ध्यौ ॥

चन्द्र का बुध से दृष्ट होना; चतुर्थ या षष्ठ में मङ्गल और शनि का होना; सप्तम, लग्न और व्यय में पाप ग्रहों का होना, चन्द्र का क्षीण होना और पञ्चम में पाप राशि का होना: सप्तम स्थान में गण्डान्त (12, 1/4, 5/8, 9) राशि का होना और उसमें शुक्र का होना और पञ्चम स्थान में शुभ ग्रह का न होना; सप्तम में शनि और लग्न में शुक्र का होना।

यह भी हो सकता है कि किसी सामान्य स्त्री की अपनी ग्रह-स्थिति उसके गर्भवती होने में बाधक न हो किन्तु उस पुरुष की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति बाधक हो जिससे वह गर्भाधान के लिए संभोग करती है। ऐसी स्थितियां अग्रलिखित हैं : पुरुष के जन्म-काल में अष्टम स्थान के स्वामी का बलवान् होकर अष्टम में होना; पञ्चम स्थान में विद्यमान तीन पाप ग्रहों का तीन अन्य पाप ग्रहों से या शत्रु ग्रहों से दृष्ट होना, इस स्थिति में स्त्री के साथ पुरुष भी वन्ध्य होता है।

तृतीयः प्रकाशः

भ्रूणस्य दश-मासेसु क्रमिक-विकासः

3-1 अनुष्टुप्

कललं प्रथमे मासे द्वितीयेऽण्डं तृतीयके ।
शाखा चतुर्थके त्वस्थि पञ्चमे त्वक् तनूरुहः ॥

3-2 अनुष्टुप्

षष्ठेथ सप्तमे चेतस्विता ज्ञेयाष्टमे क्षुधा ।
तृष्णा नवम उद्वेगो दशमे पूर्ण-विग्रहः ॥[1]

निरापद् भ्रूणः

3-3 अनुष्टुप्

गर्भस्थ-जीवन-प्रश्ने प्रान्त्यपः पुण्य-वीक्षितः ।
केन्द्रे कलेशः स-शुभो जीवतीह स्तनन्धयः ॥

विकासशीलो भ्रूणः

3-4 शार्दूलविक्रीडितम्

शीतांशूदय-गैः शुभैः सुत-शुभास्ताम्बु-स्व-ख-स्थैः खलैर्,
धैर्योपान्त्य-गतैश् च धाम-निधिना दृष्टश् च गर्भः सुखी ।

1. (इन्द्रवज्रा) आद्ये तु मासे कललं द्वितीये, पेशिस्तृतीयेपि भवन्ति शाखाः । अस्थीन्यथ स्नायु-शिराश् चतुर्थे, मज्जान्त्र-चर्माण्यपि पञ्चमे तु ॥ (इन्द्रवज्रा) षष्ठे त्वसृग्-रोम-नखा यकृच् च चेतस्विता सप्तम-मासि चिन्त्या । तृष्णाशन-

भ्रूण का विकास

भ्रूण का दस मास में क्रमिक विकास

सफल संभोग से गर्भाधान होते ही प्राणी की जीवन-यात्रा आरम्भ हो जाती है। माता के गर्भ में, भ्रूणअवस्था में उसका प्रतिमास क्रमिक विकास अग्रलिखित है : 1. कलल अर्थात् स्त्री के रज और पुरुष के वीर्य या शुक्र के कुछ अंशों का मिश्रण जो मास के अन्त तक अण्डाकार पिण्ड का रूप ले लेता है; 2. अण्ड अर्थात् वह अण्डाकार पिण्ड जो आवश्यक लम्बाई और कठोरता पा लेता है; 3. उस पिण्ड में हाथ, पैर आदि अवयव निकलने लगते हैं; 4. उसमें अस्थियां बनने लगती हैं; 5. उस पर त्वचा या चमड़ी जमने लगती है; 6. चमड़ी पर बाल उगने लगते हैं; 7. उसमें चेतना आ जाती है; 8. उसे भूख, प्यास आदि की अनुभूति होने लगती है; 9. उद्वेग अर्थात् उसमें बाहरी प्रभावों से छटपटाहट या प्रतिक्रिया होने लगती है; 10. पूर्ण-विग्रह अर्थात् वह पूर्णतया विकसित शिशु बन जाता है जो किसी भी समय प्रसूति के लिए तैयार रहता है।

निरापद् भ्रूण

गर्भस्थ अवस्था में भ्रूण का जीवन निरापद् रहता है, किंतु यदि उसका व्ययेश शुभ ग्रह से दृष्ट हो और शुभ ग्रह से युक्त चन्द्र केन्द्र में हो तो वह अवश्य ही निरापद् रहेगा।

विकासशील भ्रूण

इसी प्रकार, भ्रूण अपना क्रमिक विकास सुखपूर्वक करता रह सकता है यदि उसके गर्भाधान के समय का चन्द्र और लग्न सूर्य से दृष्ट हों, शुभ ग्रहों से युक्त हों और उन दोनों से द्वितीय, चतुर्थ, पञ्चम, सप्तम, नवम और दशम में शुभ ग्रह तथा तृतीय और लाभ में पाप ग्रह हों। भ्रूण का

स्वादनमष्टमे स्यात् स्पर्शोपरोधा नवमे मनश्च ।। (इन्द्रवज्रार्धम्) स्रोतोभि-रुद्घाटित-पूर्ण-देहो गर्भोर्क-मासे दशमे प्रसूतः ।। यवनेश्वरः ।

चेद् गर्भः परिवर्धते शश-धरे वांगे पतंगेक्षिते,
सोर्जैः शीत-गु-सूनु-धिष्ण्य-धिषणैरालोक्यमाने तथा ॥

सौभाग्यशाली भ्रूणः

3-5 अनुष्टुप्

आधानेर्कोनुजे कोणेथ वा सौम्य-युतेक्षितः ।
पुत्रदो विधिवान् जातश् चिरायुर् विद्ययान्वितः ॥

3-6 अनुष्टुप्

निषेकोदयतः सूतौ जन्म-लग्नं वदेत् सुधीः ।
निषेकांगे सद्दृग्योगे चिरायुर् वित्त-भूति-युक्[1] ॥

विलम्बितो भ्रूणः

3-7 उपजातिः

मासेंक-तुल्ये दशमे च मासे
प्रसूयते गर्भमिहैण-नेत्रा ।
एकादशे द्वादशके च मासे
विकारतोन्यत्र ततः सदैव ॥

3-8 उपजातिः

काये किमर्के चर-भे निषेके
मासे प्रसूतिर् दशमेंगनायाः ।
मासीश-तुल्ये स्थिर-भे तु तस्मिन्
द्वि-मूर्ति-राशौ रवि-तुल्य-मासे ॥[2]

भ्रूणस्य गर्भवासः कियद्दिवसः

3-9 उपजातिः

आधान-पौरे यदि पश्यतीन्दो
चर-स्थिर-द्वन्द्व-भगे क्रमेण ।

1. आधान-लग्नात् सुलभे तु जन्म-लग्नं भवेच् छास्त्रविदो वदन्ति । आधान-लग्ने शुभ-दृष्टि-योगे दीर्घायुरैश्वर्य-धनान्वितः स्यात् ॥ सर्वार्थचिन्तामणिः ।

2. (अनुष्टुप्) गर्भाधाने चरे राशौ दश-मासैः प्रसूयते । स्थिरेणैकादशे मासे उभये द्वादशे सवः ॥ ग्रन्थान्तरम् । (अनुष्टुप्) गर्भाधाने चरे भानौ दशमे मासि सूयते । स्थिरे चैकादशे मासि द्वादशे द्वि-स्वभावके ॥ जातकोत्तमम् ।

निरन्तर स्वस्थ विकास होता रह सकता है यदि उसके गर्भाधान के समय के चन्द्र और लग्न सूर्य से और बलवान् बुध, गुरु और शुक्र से भी दृष्ट हों।

सौभाग्यशाली भ्रूण

इसी प्रकार विकासशील भ्रूण एक विद्यावान् भाग्यशाली और दीर्घायु मानव का रूप लेगा यदि उसके गर्भाधान के समय तृतीय या त्रिकोण में सूर्य हो, या फिर सूर्य शुभ ग्रह से दृष्ट और युक्त हो।

वह धैर्यवान्, ऐश्वर्यशाली और दीर्घायु महापुरुष का रूप भी लेगा यदि उसके जन्म-लग्न में अर्थात् उसके गर्भाधान काल से पञ्चम स्थान में लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट तथा युक्त हो।

विलम्बित भ्रूण

एक सामान्य मानव-भ्रूण का प्रसव दसवें मास में होता है; किन्तु किसी-किसी भ्रूण का प्रसव ग्यारहवें, और यहां तक कि बारहवें मास में भी हो सकता है, यद्यपि ऐसा प्रसव निश्चित रूप से किसी शारीरिक विकार का सूचक है।

भ्रूण का प्रसव दसवें मास में ही होता है यदि उसके गर्भाधान काल का लग्न या सूर्य चर राशि में हो। जब यही लग्न या सूर्य चर राशि में न होकर स्थिर राशि में होता है तब प्रसव ग्यारहवें मास में होता है, और जब वही लग्न या सूर्य चर या स्थिर राशि में न होकर द्विस्वभाव राशि में होता है तब प्रसव बारहवें मास में होता है; कारण जो भी हो, ये दोनों स्थितियां अस्वाभाविक हैं।

भ्रूण का गर्भवास कितने दिन

एक सामान्य मानव-भ्रूण का प्रसव दसवें मास में होता है, यह ठीक है। किंतु गर्भाधान-काल की ग्रह-स्थिति से यह ज्ञात किया जा सकता है कि उसका गर्भवास वास्तव में कितने दिन का होगा। जैसे : यदि गर्भाधान के समय चर राशि में स्थित चन्द्र गर्भाधान-लग्न से दृष्ट हो तो वह 287 दिन गर्भवास करेगा अर्थात् उसका प्रसव नौ मास सत्रह दिन में होगा; यदि गर्भाधान के समय स्थिर राशि में स्थित चन्द्र गर्भाधान-लग्न से दृष्ट हो तो उसका प्रसव 292 दिन या नौ मास बाईस

स्त्रीणां सवोद्रीभ-यमैः करांक-
युग्मैर्-धरा-दन्ति-यमैरहोभिः ॥[1]

भ्रूणस्य प्रसवः कतमे नक्षत्रे
3-10 उपजातिः
यदा निषेकोह्नि भवेत् तदा दिन-
त्र्यंशे क्रमाद् भू-नग-विश्व-भेर्क-भात् ।
तमी त्रि-भागे स-नृपाष्टि-घस्र-भे
गर्भ-प्रसूतिः क्षितिजाश्रितेत्र भे ॥

भ्रूणस्य प्रसवः कतमे राशौ
3-11 उपजातिः
निषेक-लग्नाद् दशमं जनुर् गृहं
वाधान-कालांग-कलेशतोस्त-भम् ।
आधान-काले भ-विभुर्भगांशके
यस्मिन् स्थितस् तन्मित-भे सवं वदेत् ॥
3-12 अनुष्टुप्
गर्भ-सूति-विधानं ज्ञैस् तत्कालोदय-वर्गतः ।
चिन्त्यमाधानात् खं जन्म-राशि वाञ्छन्ति केचन ॥
3-13 अनुष्टुप्
निषेकांग-निशापत्योः सप्तमं बादरायणः ।
गर्भः पञ्चम-भं ब्रूते आधान-प्रश्नयोः शशी ॥

1. (शार्दूलविक्रीडितम्) आधानं यदि दृश्यते स्थिर-गते, चण्डीश-चूडामणौ; नारीणां प्रसवस् तदा खलु भवेद्युग्मांकपक्षैर्(292)दिनैः । सप्ताशीत्यधिकैश् च पक्ष-सहितैस् (287), तस्मिस् चर-क्षेत्रगे; चन्द्राष्टाश्वि (281) दिनैरसातल-भुजैर् (296), वा द्वि-स्वभावे विधौ ॥ दैवज्ञ-कण्ठाभरणम् ।

दिन में होगा; और, यदि द्विस्वभाव राशि में स्थित चन्द्र गर्भाधान-काल में गर्भाधान-लग्न से दृष्ट हो तो उसका प्रसव 276 दिन या नौ मास छह दिन में होगा।

भ्रूण का प्रसव किस नक्षत्र में

पूर्वाह्न, मध्याह्न और अपराह्न में से जिसमें गर्भाधान हुआ हो उसी के सूर्य के नक्षत्र में, 1/7/13 क्षितिजाश्रित नक्षत्र में प्रसव होगा; इसी प्रकार रात्रि के प्रथम, मध्य और अन्तिम भाग में से जिसमें गर्भाधान हुआ हो उसी के सूर्य के नक्षत्र में 16/16/15 जोड़ने पर जो योगफल आए उसमें अर्थात् 17/23/27 क्षितिजाश्रित नक्षत्र में प्रसव होगा। रात्रि के प्रथम भाग, मध्य भाग और अन्तिम भाग में से जिसमें गर्भाधान हुआ हो उसी के सूर्य के नक्षत्र से 17/21/28वें नक्षत्र में प्रसव होगा, यह दूसरे आचार्य का मत है।

भ्रूण का प्रसव किस राशि में

भ्रूण के गर्भाधान-कालीन लग्न से जो राशि दशम स्थान में हो उसी राशि में उसका प्रसव होगा। या, उसके गर्भाधान-कालीन चन्द्र और लग्न के मध्य में जो वलवान् हो उससे सप्तम स्थान में स्थित राशि में उस भ्रूण का प्रसव होगा। या फिर, उसका गर्भाधान-कालीन चन्द्र जिस राशि के द्वादशांश में हो उसी राशि के चन्द्र में दसवें या नौवें मास में उस भ्रूण का प्रसव होगा।

भ्रूण का प्रसव किस राशि में होगा, इस प्रश्न के उत्तर में विभिन्न आचार्यों के विभिन्न मत हैं। इन मतों का सारांश यह है कि इस तरह का प्रश्न जिस समय किया जा रहा हो उस समय के लग्न के द्वादशांश या नवांश वर्ग से बताया जाना चाहिए कि भ्रूण का प्रसव किस राशि में होगा। विभिन्न आचार्यों के मत सविस्तार अग्रलिखित हैं। कुछ आचार्यों की मान्यता है कि गर्भाधान-कालीन लग्न से दशम स्थान में जो राशि हो उसमें प्रसव हुआ करता है।

गर्भाधान-कालीन लग्न और गर्भाधान-कालीन चन्द्र में से जो अधिक बलवान् हो उससे सप्तम स्थान में जो राशि हो उसमें प्रसव हुआ करता

3-14 अनुष्टुप्

यत्र स्थितस् तु तद्राशि-द्व्यंगांशः शास्त्र-मार्गतः ।
ज्ञातव्यः पण्डितैर् यत्र भागे स्थितो निशाकरः ॥

3-15 अनुष्टुप्

सत्-संख्यक-भतो ह्यग्रे यो राशिस् तद्गते विधौ ।
सूयते दशमे मासे ज्ञात्वेति यत्नतो बुधैः ॥[1]

भ्रूग-नाशः गर्भपातो वा कथं

3-16 अनुष्टुप्

शीत-द्युतेः किमूदयात् कीलाल-भाव-संस्थितैः ।
आग्नेयकैर् नभश्चरैर् गर्भस्तदा विपद्यते ॥

3-17 उपजातिः

निषेक-कालेंग-गयोः कु-जार्क्योस्
तद्-भे भ-पे वा तदवेक्षिते वा ।
उत्पात-पापाहत-खे-चरस्य
मासे बुधैर् गर्भ-निपात उक्तः ॥

3-18 इन्द्रवज्रा

प्रज्ञा-स्थाने पाप-युक्तेक्षिते वा
सार्कि-ज्ञेब्जे भार्गवेहौ क्रमेण ।
प्रान्त्ये पौरे पोष्य-भे पञ्चमे वा
मध्ये भौमे मन्त्र-भे मन्द-गेहौ ॥

3-19 इन्द्रवज्रा

पोष्ये पुत्रे प्राप्ति-भेथो मृगांके
मूर्तौ मन्दे मन्मथे मन्त्र-नाथे ।
सारेथारौ ग्लौ-कुजार्काच्छ-योगे
गर्भे मन्दे गर्भ-पातो निरुक्तः ॥

1. (आर्या) गर्भ-प्रसव-विधानं, तात्कालिक-लग्न-वर्गतश् चिन्त्यम् । आधानाज् जन्मर्क्षे, दशमं वाञ्छन्ति केचिदाचार्याः ॥ (आर्या) आधानोदय-शशिनोः, सप्तम-भं बादरायणो ब्रूते । तस्मान् नैकान्ततोयं, सर्वेषां संमतं वक्ष्ये ॥ ग्रन्थान्तरम् । (अनुष्टुप्) प्रश्ने यद्भे शशी तस्मात्, पञ्चमं जन्म-भं वदेत् । इत्याह भगवान् गर्गः, सप्तमं बादरायणः ॥ (अनुष्टुप्) तत्काले चन्द्रमा

है, यह आचार्य बादरायण की मान्यता है। आचार्य गर्ग की मान्यता है कि गर्भाधान-कालीन लग्न और चन्द्र में से जो अधिक बलवान् हो उससे पञ्चम स्थान में जो राशि हो उसमें प्रसव हुआ करता है।

जिस राशि के द्वादशांश में चन्द्र स्थित हो उस राशि की समान संख्या से आगे जो राशि हो उसमें गोचर से चन्द्र के आने पर दसवें मास में प्रसव हुआ करता है।

भ्रूण-नाश अर्थात् गर्भपात क्यों

अविकसित अवस्था में या प्रसव से पूर्व ही भ्रूण का नष्ट हो जाना अर्थात् गर्भपात हो जाना जिन ग्रह-स्थितियों में संभव है वे अग्रलिखित हैं: निषेक अर्थात् गर्भाधान-कालीन चन्द्र से या गर्भाधान-कालीन लग्न से चतुर्थ में पाप ग्रह हों तो निर्बल पाप ग्रह के मास में गर्भपात होगा।

गर्भाधान-काल के लग्न में स्थित मङ्गल (1/8) और शनि (10/11) की राशि में चन्द्र हो तो उत्पात से या पाप से आक्रान्त ग्रह के मास में गर्भपात होगा। इसी प्रकार, उक्त लग्न में स्थित मङ्गल उसी लग्न में स्थित शनि से दृष्ट हो तब भी उत्पाताक्रान्त या पापाक्रान्त ग्रह के मास में गर्भपात होगा।

अग्रलिखित योगों में भी गर्भपात होगा : पञ्चम स्थान का पाप ग्रह से युक्त और दृष्ट होना; व्यय में शनि के साथ बुध की स्थिति, लग्न में चन्द्र की स्थिति, द्वितीय में शुक्र की स्थिति और पञ्चम में राहु की स्थिति का होना; दशम में मङ्गल, पञ्चम में शनि, तथा द्वितीय, पञ्चम और लाभ में राहु का होना; लग्न में चन्द्र, सप्तम में शनि और पञ्चमेश का शनि से युक्त होना; षष्ठ स्थान में चन्द्र, मङ्गल, सूर्य और शुक्र का योग तथा पञ्चम में शनि की स्थिति।

पंचम स्थान में कर्क, वृश्चिक और मीन राशियों का नवांश हो, लग्न में शनि तथा सूर्य हों, और सप्तम में शुक्र तथा पाप ग्रह हों तो गर्भपात

यस्मिन्, द्वादशांशे व्यवस्थितः। पुरस्ताद् राशिगे चन्द्रे, प्रसवं तस्य निर्दिशेत्।। निबन्धः। (उपजातिः) निषेकतो द्यून-गृहं स्व-भं वा, जन्मर्क्षमेतन् न मतं बहूनाम्। द्वि-षट्क-भागे शशभृद्धि यस्मिन्, तस्मिन् प्रसूतिः पुरतो मृगांके।। (उपजात्यर्धम्) उदेति यावान् द्यु-नवांशकस्य, तावद्गते जन्म दिनोषसोः स्यात्।। होरा-मकरन्दः।

3-20 इन्द्रवंशा

कर्कालि-मीनांक-लवे मति-स्थले मन्देनयोर् मूर्ति-गयोः सिते स्मरे ।
उग्रे ख-गेनंग-गते तथा भवेद्-धेलौ मतौ हेलि-जनौ फलोपगे ।।

3-21 इन्द्रवज्रा

दैवेग-जेत्रे बहु-गर्भ-पाता ध्याये कुजे व्यस्त-खगे शनेर्वा ।
ध्यस्तेद्य आरे युधि तद्वदुग्र-दृष्टे सुते नो शुभ-नाथ-दृष्टे ।।

3-22 उपजातिः

मासस्य यस्याधिपतिः स्व-नीचे रिक्तोस्त-गो वाथ तदीय-मासे ।
समेति गर्भः क्षमतां तदानीं किं वा निरुक्तः प्रसवः सुधीभिः[1] ।।

अनेक-वारं भ्रूण-नाशो गर्भपातो वा

3-23 उपजातिः

यदुन्मितोग्रैस् तनये विलोकिते
किं तत्पति-स्थर्क्ष-पतौ किमात्मनः ।
पत्युर् नवांशस्य गृहे तदुत्थिताः
स्युर्गर्भ-पाता मदने मृतौ भवे ।।

3-24 इन्द्रवंशा

पाप्यब्जयोः पोष्य-गयोस् तु पञ्चमे
मासे चतुर्थे किमु गर्भ-पातकः ।
सूनौ कुजेनोरग-सौरि-संगमे
द्वौ गर्भ-पातौ भवतो द्रुतं मृतिः ।।

3-25 इन्द्रवंशा

एकस्य बालस्य ततः स्त्रिया जनौ
मृत-प्रजा मृत्यु-गयोः सिनेज्ययोः ।
स्यात् काक-बन्ध्याब्ज-विदोर् मृति-स्थयोर्-
गर्भ-स्रवा तत्र कुजार्य-भार्गवैः ।।

3-26 इन्द्रवंशा

बन्ध्यार्कि-भान्वोर् निधन-स्थयोस् तथा
स्याद् गर्भपाता रमणी मृतौ कुजे ।
सत्खेट-संबन्ध-वशादुदीरिता
योगा इमे स्युर् विफला जनुर् भृताम् ।।

होगा। पंचम में सूर्य, लाभ में शनि और द्वितीय में चन्द्र और मङ्गल हों तो चौथे या पांचवें मास में गर्भपात होगा।

पंचम और लाभ में मङ्गल हो और वह शनि से तृतीय, दशम और सप्तम में हो तो, पंचम और सप्तम में पाप ग्रह तथा अष्टम में मङ्गल हो तो, एवं पंचम पाप ग्रह से दृष्ट हो किंतु बुध ग्रह और अपने स्वामी से दृष्ट न हो तो, गर्भपात होगा।

जिस मास का स्वामी अपनी नीच राशि में हो, निर्वल हो, अस्तंगत हो और युद्ध में पराजित हो उस मास में या तो गर्भपात होगा या प्रसव होगा।

अनेक बार भ्रूण-नाश या गर्भपात

पंचम भाव, पंचमेश की राशि का स्वामी और पंचमेश के नवांश की राशि, ये तीनों जितने पाप ग्रहों से दृष्ट हों उतनी ही बार गर्भपात होंगे। इसी प्रकार, सप्तम, अष्टम, एकादश, नवम और पंचम में मङ्गल हो तो अनेक बार गर्भपात होंगे।

यदि पंचम में शनि, सूर्य, राहु और मङ्गल का योग हो तो दो बार गर्भपात होता है और एक बार प्रसव तो होगा किंतु शिशु की शीघ्र ही मृत्यु होगी। स्त्री के जन्म-काल में लग्न से अष्टम स्थान में शुक्र तथा गुरु हों तो उसकी सन्तान जीवित नहीं रहेगी। जिस स्त्री के जन्म-काल में अष्टम में चन्द्र और बुध हों वह काक-वन्ध्या होगी, अर्थात् वह केवल एक सन्तान को जन्म दे सकेगी।

जिस स्त्री के जन्म-कालीन लग्न से अष्टम में मङ्गल, गुरु तथा शुक्र हों वह वन्ध्या होगी अर्थात् वह एक भी संतान को जन्म न दे सकेगी। उसके उक्त लग्न से अष्टम स्थान में शनि और सूर्य हों तो भी वह वन्ध्या होगी किंतु उसके उक्त स्थान में मङ्गल हो तो वह गर्भवती तो हो सकेगी लेकिन उसके गर्भपात होंगे। यदि पूर्वोक्त योगों का संवन्ध शुभ ग्रहों से भी हो तो गर्भपात आदि की ये अशुभ घटनाएं नहीं होंगी।

1. (अनुष्टुप्) यस्य मासाधिपो रिक्तो, भंगो वास्तमितोपि वा। तस्मिन् मासे क्षयं याति, प्रसवो वा भविष्यति ।। शुक्रः।

भ्रूणस्य प्रतिमासं स्वामी ग्रहः

3-27 वसन्ततिलका

आद्या निषेक-समयात् कथयन्ति मासा-
धीशानिमान् क्रमश आस्फुजि-दारजीवाः ।
हेलीन्दु-मन्द-विबुधोदयपेन्दु-सूरा,
मासाधि-नाथ-सदृशं सदसत्-फलं स्यात्[1] ॥

3-28 अनुष्टुप्

समास-लक्षणो गर्भ आप्नुयात् सर्वदा सुखम् ।
न्यून-पुष्ट-गुणो भ्रूण आभीलं प्राप्नुयात् सदा ॥[2]

कियन्मासो जातो गर्भः

3-29 इन्द्रवंशा

प्रश्नोद्गते नन्द-लवा यदुन्मिता
गर्भस्य मासाः प्रभवन्ति तन्मिताः ।
यावद् गृहेच्छः सबलोंगतः सुतान्-
मासोत्र तावत् प्रमिताः प्रकीर्तिताः[3] ॥

गर्भाधान-तिथ्यादेः प्रसव-तिथ्यादेर् ज्ञानम्

3-30 अनुष्टुप्

तिथेर् मासाद् भतोंगाच् च जन्म-कालस्य वारतः ।
तज्ज्ञः समादिशेद् गर्भ-संभवं भृगुणोदितम्[1] ॥

3-31 अनुष्टुप्

तिथौ त्रीणि चतुर्मासे नक्षत्रे दश एव च ।
लग्ने पञ्च त्रयो वारे गर्भ-संभवमादिशेत् ॥[5]

1. (इन्द्रवज्रा) यो यस्य मासस्य भवेद् धि नाथः, संयोगमेतं तु तदा प्रयाति । अर्वाग्-विधाने स तदास्य जन्म, वीर्येण हीनो यदि जन्म पे(जे)न ॥ वृद्धयवनः ।
2. (अनुष्टुप्) मास-लक्षण-संयुक्तो, गर्भः सुखमवाप्नुयात् । औपाधिकान् (अल्पाधिकान्) गुणांस् तस्य, ज्ञात्वा प्रसवमादिशेत् ॥ शुक्रः ।
3. (अनुष्टुप्) लग्नेशकास् तु यावन्तस्, तावन्तो गर्भ-मासकाः । सुताद् ध्यंगाद् बली शुक्रो, यावद् गेहेथ तन्मितः ॥ ग्रन्थान्तरम् ।
4. (अनुष्टुप्) जन्म-काल-तिथेर् मासान्, नक्षत्राल् लग्नतः पुनः । वाराच् चैव तथा गर्भ-संभवं तु समादिशेत् ॥ भृगुः ।

भ्रूण के प्रतिमास का स्वामी ग्रह

प्रत्येक मास का एक-एक स्वामी होता है। इन स्वामियों में राहु और केतु को छोड़कर शेष सातों ग्रह संमिलित हैं, उनमें भी चन्द्र और सूर्य दो-दो मासों के स्वामी है। एक मास का स्वामी आधान-लग्नेश भी है। मास-क्रम से उनकी गणना अग्रलिखित है: 1. शुक्र, 2. मङ्गल, 3. गुरु, 4. सूर्य, 5. चन्द्र, 6. शनि, 7. बुध, 8. आधान-लग्नेश, 10. चन्द्र, और 10. सूर्य। भ्रूण का शुभ या अशुभ फल उसके मासेश पर निर्भर है। प्रत्येक मास का उपर्युक्त स्वरूप भ्रूण के जितने अनुकूल होगा उतना ही वह सुखी होगा, और जितने प्रतिकूल होगा उतना ही वह दुःखी होगा।

कितने मास का गर्भ है

गर्भाधान हुए कितना समय हो गया है, या भ्रूण कितने मास का हो चुका है, यह प्रश्न जिस समय किया जा रहा हो उस समय के लग्न में जितने गत नवांश हों उतने ही मास का गर्भ हो गया होना चाहिए। प्रश्न-कालीन लग्न से जो पंचम स्थान हो उससे जितने स्थान पर वलवान् शुक्र हो उतने ही मास का गर्भ माना जाए तो भी सही होगा।

गर्भाधान की तिथि आदि से प्रसव की तिथि आदि का ज्ञान

गर्भाधान की तिथि, मास, नक्षत्र, लग्न और वार के आधार पर प्रसव की तिथि आदि ज्ञात करने का एक सूत्र आचार्य भृगु ने प्रतिपादित किया है: गर्भाधान की तिथि से तृतीय तिथि, गर्भाधान के मास से चतुर्थ मास, गर्भाधान के नक्षत्र से दशम नक्षत्र, गर्भाधान के लग्न से पञ्चम लग्न और गर्भाधान के वार से तृतीय वार प्रसव का होगा।

5. (आर्या, सर्वेपि श्लोकाः) उदयोपगतो राशिस्, तल्लिप्तीकृत्य लिप्तिका गुणयेत्। छायांगुलैः पृकक्स्था, हृत्वा मुनिभिस् तथा शेषः।। (60)। ग्रह-गुण-कारो ज्ञेयो, दैवविदा पञ्चविंशतिः सैका। मनवो गोष्टी त्रितयं, भवाश्च सूर्यादितो ज्ञेयाः।। (61)। गुणयित्वैवं प्राग्वत्, शुभस्य शेषे भवेदुदयः। कार्यस्याप्तिः प्रष्टुर्, वक्तव्या नेतरैर् भवति।। (62)। गुणकारैक्य-विभक्तः, कार्यः सूर्यादि-गुणक-संशुद्धः। यस्य न शुध्यति वर्गो, ज्ञेयस् तद्वर्गगः कालः।। (63)। आर-दिवाकर-शेषे, दिवसाः पक्षाश् च भृगु-शशिनोः। गुर्ववशेषे मासा, ऋतवः सौम्ये शनैश्चरेब्दाः स्युः।। (64)। आधानेर्थ-प्राप्तौ, गमनागमने पराजये विजये। रिपु-नाशे वा कालं, पृच्छायां निश्चितं ब्रूयात्।। (65)। आर्या-सप्तत्यां भट्टोत्पलः।

चतुर्थः प्रकाशः

भ्रूण-युगलम्

4-1 शार्दूल-विक्रीडितम्

द्व्यंगे देह-गते सुते स-शुभ-दे योगो द्व्यपत्याभिधः,
सोर्जेषूदय-विन्-महीज-गुरुषु द्व्यंगे किमोजे समे।
धिष्ण्येन्द्वोः पुरुष-स्त्रियौ शश-भृति द्व्यंगोदये ज्ञे स्व-भे,
लाभे हेलि-भुवीह युग्ममुदितं दृष्टे बुधेन स्वयम् ॥

4-2 शार्दूलविक्रीडितम्

चन्द्रेंगे गृहवत्सितांशु-गृहतस्
तद्वन्निषेके तनू-
दुश्चक्रेश-युतौ किमुच्च-भवनें-
गेंशेनुजर्क्षे तथा।
विद्-दृष्टौ रवि-वाक्-पती तिमि-वधू-
भागोपगौ किं यमांश्
चांशे चान्द्रि-निरीक्षिताः सित-कुज-
ग्लावस् तु पुं-योषितौ ॥

पुंलिङ्गो स्त्रीलिङ्गश्च भ्रूणौ

4-3 उपजातिः

धनुर् यमांशेमर-पूज्य-हेली-
दृष्टौ बुधेन द्वि-सुत-प्रदौ स्तः।
स्त्र्यन्त्यांश-गाः काव्य-कु-सूनु-चन्द्राश्
चान्द्रीक्षिताश् चेद् द्वि-सुता-प्रदा स्युः[1] ॥

4-4 अनुष्टुप्

जैवातृके समे गृहे कल्पाश्रिते विलोकिते।
खेटेन शौर्यशालिना गर्भे सुता-सुतौ मतौ ॥

एक से अधिक भ्रूण

युगल भ्रूण

एक ही सफल संभोग से कभी-कभी, एक ही साथ, एक से अधिक गर्भाधान होते हैं। इसीलिए कई स्त्रियां कभी-कभी, एक ही साथ, दो, तीन, या उनसे भी अधिक शिशुओं को जन्म देती हैं। इसका कारण है गर्भाधान के समय की ग्रह-स्थिति। निम्नलिखित ग्रह-स्थितियों में यदि संभोग सार्थक हो तो उससे एक नहीं, बल्कि दो गर्भाधान होंगे : लग्न में द्वि-स्वभाव राशि हो और पंचम में शुभ ग्रह हो; बलवान् लग्न, बुध, मङ्गल और गुरु, ये चारों द्वि-स्वभाव राशि या विषम राशि में हों और शुक्र और चन्द्र समराशि में हों; द्वि-स्वभाव राशि के लग्न में चन्द्र हो, बुध अपनी राशि में हो और लाभ में शनि हो; लग्न में चन्द्र स्वयं बुध से दृष्ट हो और उसके अनुरूप राशि तथा लग्न हो; लग्नेश और तृतीयेश का योग हो अर्थात् उच्च राशि में स्थित लग्नेश तृतीय भाव में हो; सूर्य और गुरु बुध से दृष्ट होकर मीन तथा कन्या के नवांश में हों; शुक्र, मङ्गल और चन्द्र बुध से दृष्ट होकर मिथुन और धनुष् के नवांश में स्थित हों।

पुंलिग और स्त्रीलिंग भ्रूण

सफल संभोग के समय यदि गुरु और सूर्य धनुष् के नवांश में और मिथुनांशक में हों और बुध से दृष्ट भी हों, तो दो पुंलिग भ्रूणों का, या फिर यदि शुक्र, मङ्गल और चन्द्र कन्यांश और मीनांश में स्थित हों और बुध से दृष्ट भी हों तो दो स्त्रीलिंग भ्रूणों का गर्भाधान होगा। गर्भाधान लग्न में चन्द्र सम-राशि में हो और बलवान् ग्रह से दृष्ट भी हो तो एक स्त्रीलिङ्ग और एक पुंलिग भ्रूणों का अवतरण होगा।

1. (उपजातिः) गुर्वर्कयोश् चाप-नृ-युग्म-भांशे, ज्ञ-दृष्टयोः पुं-युगलं तदा स्यात्। तद्वच् च कन्या झष-गैः सितार-कला-धरैः स्त्री-युगलं स-वीर्यैः ।। ग्रन्थान्तरम्।

भ्रूण-त्रयं समकालम्

4-5 शालिनी

द्व्यंगांश-स्थान् खे-चरांश् चोदयं ज्ञः
पश्येद् युग्मांश-स्थितः पूरुषौ द्वौ ।
एका कन्या तांस् तथा स्त्र्यंश-गो वित्
पश्येदेको नन्दनः कन्यके द्वे ।।

4-6 उपजातिः

खगोदयान् द्वन्द्व-भगान् हयांश-गान्
पश्येद् बुधो द्वन्द्व-लवाश्रितस् तदा ।
गर्भे त्रि-पुत्रा वनितांश-गो बुधो
विलोकयेदित्थसि-कन्यकांश-गान् ।।

4-7 उपजातिः

ग्रहोद्गमान् गर्भ-गतास् त्रि-कन्यकाः
यमेंग इन्दौ द्विषि विद्-भयोः स्मरे ।
मृतौ रवौ सद्रहिते त्रि-पूरुषाः
कन्याः कुजे चेत्थमिनेन षण्डकाः ।।

वहु-संख्यका भ्रूणाः

4-8 उपजातिः

यदोदये चापधरोन्तिमांशके
दृष्टे सवीर्येण बुधेन सौरिणा ।
तदंश-संस्थैः स-बलैर् विहंगमैः
कोशं गताः स्युर् बहु-जन्तवः स्त्रियः ।।

तीन भ्रूण एक साथ

स्त्री के गर्भ में तीन भ्रूणों का भी अवतरण हो सकता है। उनमें से दो पुंलिग, और एक स्त्रीलिंग होंगे यदि गर्भाधान-कालीन लग्न की द्वि-स्वभाव (3/6/9/12) राशि में स्थित सभी ग्रह और लग्न मिथुनांशस्थ बुध के द्वारा दृष्ट हों। उनमें से एक पुंलिग और दो स्त्रीलिग भी हो सकते हैं यदि गर्भाधान के समय द्वि-स्वभाव (3/6/9/12) राशि में स्थित सभी ग्रह और लग्न कन्यांशस्थ बुध द्वारा दृष्ट हों।

गर्भाधान के समय मिथुनस्थ ग्रह और लग्न धनुष् के नवांश में स्थित हों और मिथुनांश-गत बुध द्वारा दृष्ट हों तो तीनों भ्रूण पुंलिङ्ग होंगे, किंतु मीनांश और कन्यांश में स्थित ग्रह और लग्न कन्यांशस्थ बुध द्वारा दृष्ट हों तो तीनों भ्रूण स्त्रीलिंग होंगे। इसी प्रकार, लग्न में शनि, षष्ठ में चन्द्र, सप्तम में बुध और शुक्र तथा अष्टम में सूर्य हो और वह किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो तीनों भ्रूण पुंलिग होंगे, किंतु लग्न में मङ्गल, षष्ठ में चन्द्र, सप्तम में बुध और शुक्र तथा अष्टम में सूर्य हों तो तीनों भ्रूण स्त्रीलिंग होंगे, जबकि लग्न में सूर्य, षष्ठ में चन्द्र, सप्तम में बुध और शुक्र तथा अष्टम में सूर्य हों तो तीनों भ्रूण नपुंसकलिङ्ग होंगे।

तीन से अधिक भ्रूण

गर्भाधान-कालीन लग्न में धनुष् राशि तथा धनुष् का नवांश बलवान् बुध और शनि से दृष्ट हों और बलवान् ग्रह धनुष् राशि के नवांश में हों तो सफल संभोग से तीन या तीन से भी अधिक भ्रूणों का गर्भाधान होगा।

पञ्चमः प्रकाशः

पुत्र-योगस्य पञ्च ग्रह-स्थितयः

5-1 शार्दूलविक्रीडितम्

पंगुः प्राप्ति-गतो विकर्तन-कवी जायानुज-स्थौ पुमान्,
गर्भे, पुं-गण-गे यमेर्क-कुजयोः कायालये स्यात् नरः ।
पुं-भे दैत्य-पुरोहिते हिम-करे माने स्व-तुंगे तथा,
पुं-भेंगेशि सुतेथ पुं-दिवि-चरः पुं-भेंगपः स्यात् पुमान् ।।[1]

पुत्र-योगस्य तिस्रोन्या ग्रह-स्थितयः

5-2 शार्दूलविक्रीडितम्

आधानोदयतो भुजे पथि मतौ भानुर् नृ-जन्म-प्रदः,
पुं-दृष्टः स्व-लवे यदैक-ख-चरः केन्द्रे स्व-वर्गे बली ।
तद्वत् सत्-खचराः प्रचण्ड-किरणः कोणार्क-पाताः क्रमाज्,
जामित्रानुजगा बुधेज्य-विधुभिर् दृष्टा नृ-जन्म-प्रदाः ।।

पुत्र-योगस्य ततोप्यन्यास्तिस्रः ग्रह-स्थितयः

5-3 उपजातिः

पुं-भे पुरेशे पुरुष-ग्रहेण
सहेत्थ-शालिन्यथ[2] कोण-लग्ने ।
सोर्जे गुरौ वा सचिवे त्रि-कोणे
स्वीयोच्च-गे गर्भ-गतः पुमान् स्यात् ।।

भ्रूण का लिंग

पुत्र-योग की पांच ग्रह-स्थितियां

गर्भाधान-कालीन लग्न में स्थित ग्रहों की इन स्थितियों में भ्रूण पुंलिङ्ग होगा : लाभ में शनि और तृतीय तथा सप्तम में सूर्य और शुक्र का होना; पुरुष वर्ग में शनि और लग्न में सूर्य और मङ्गल का होना; पुरुष राशि में शुक्र और दशम में उच्च-राशिस्थ चन्द्र का होना; पुरुष राशि में स्थित जो गर्भाधान-लग्न का स्वामी हो उसका पञ्चम में होना; और, लग्नेश का पुरुष ग्रह होते हुए पुरुष ग्रह की राशि में होना।

पुत्र-योग की तीन और ग्रह-स्थितियां

कुछ स्थितियां और भी हैं जिनमें भ्रूण पुंलिग होगा : तृतीय, नवम और पञ्चम में सूर्य का होना; एक वलवान् ग्रह का स्व-नवांश और स्व-वर्ग में रहते हुए केन्द्र में होना और पुरुष ग्रह से दृष्ट भी होना; शुभ ग्रहों का त्रिकोण और द्वितीय में होना तथा पाप ग्रहों का सप्तम और तृतीय में होना और उनका वुध, गुरु और चन्द्र से दृष्ट भी होना।

पुत्र-योग की और भी तीन ग्रह-स्थितियां

कुछ और भी स्थितियां हैं गर्भाधान-कालीन लग्न में विद्यमान ग्रहों की जिनमें भ्रूण पुंलिग होगा : लग्न के स्वामी का पुरुष ग्रह की राशि में स्थित होते हुए भी पुरुष ग्रह से इत्थशाल योग करना ; वलवान् गुरु का त्रिकोण और लग्न में होना; और, अपनी ही उच्च राशि में स्थित गुरु का त्रिकोण में होना।

1. (आर्या) पंचम-लाभोपगतैः, सौम्यैः स्त्री गर्भिणीति वाच्यं वै। जीव-रवि-लग्न-चन्द्रा, विषमर्क्ष-गता नरं कुर्युः ।। (32) आर्या-सप्तत्यां भट्टोत्पलः।

2. (इन्द्रवज्रा) शीघ्रोल्प-भागे घन-भाग-मन्देग्र-स्थे निजं तेज उपाददीत। स्यादित्थ-शालोयमथो विलिप्ता, लिप्तार्ध-हीनो यदि पूर्णमेतत् ।। नीलकण्ठः।

पुत्र-योगस्य द्वे विशिष्टे ग्रह-स्थिती

5-4 इन्द्रवज्रा

आधान-मूर्तेर् द्रविण-त्रि-कोणे
सद्भिः प्रदृष्टे पुरुष-ग्रहैर् वा ।
यद् वा तनू-जन्म-लवे निषेक-
काले नृ-जन्मेतरया कुमार्याः ॥

पुत्र-योगस्यैकातिविशेषा ग्रह-स्थितिः

5-5 उपजातिः

यस्मिन् गृहे जन्मनि लोक-बान्धव-
सुतः स-वीर्यो मनुजस्य वर्तते ।
तद्भे यदा याति स चामरार्चितो-
प्यायाति तत्रात्मज-लब्धिरीरिता ॥

केषां ग्रहाणां दशायामन्तर्दशायां च पुत्र-योगो भवेत्

5-6 इन्द्रवज्रा

धीशेज्ययोस् तद्युत-भाशपानां बलान्वितस्याम्बर-गस्य दाये ।
किं धीस्थ-तद्वीक्षक-तत्पतीनां दाये च भुक्तौ तनयाप्तिमाहुः ॥

5-7 उपजातिः

पुत्र-प्रदं पञ्चममिज्य-चन्द्र-
विलग्न-भानां नवमं च तस्मात् ।
तन्नाथ-दाये च हृतौ सुताप्तिं
वदेद् बुधो धीमदप-स्फुटैक्ये ॥

5-8 इन्द्रवंशा

यद् भं तु तद्दाय-हृतौ तदन्वित-
दर्शि-ग्रहाणां च दशासु भुक्तिषु ।
किं पुत्र-भावाधिप-कारकेक्षक-
युक्ताः शुभाः स्युर् बलशालिनो यदि ॥

पुत्र-योग की दो विशेष ग्रह-स्थितियां

दो विशेष स्थितियां भी हैं गर्भाधान-कालीन लग्न में विद्यमान ग्रहों की जब भ्रूण पुंलिग होगा : गर्भाधान-कालीन लग्न से द्वितीय और त्रिकोण स्थानों का शुभ ग्रहों और पुरुष ग्रहों से दृष्ट होना; और, संभोग-कालीन लग्न से पंचम स्थान में जिस राशि का नवांश हो उसका शुभ ग्रहों और पुरुष ग्रहों से दृष्ट होना।

पुत्र-योग की एक अतिविशेष ग्रह-स्थिति

भ्रूण के पुंलिग होने की एक अतिविशेष स्थिति भी है जिसका संबन्ध गर्भाधान-काल के लग्न से नहीं, प्रसव-काल के लग्न से है। प्रसव-काल में बलवान् शनि जिस राशि में हो उसी राशि में जब वह पुनः आए, गोचर से आए और गोचर से ही बृहस्पति भी आए तो जिस भ्रूण का प्रसव होगा वह पुंलिग होगा।

किन ग्रहों की दशा और अन्तर्दशा में पुत्र-योग होगा

अनेक ग्रह-स्थितियां ऐसी हैं जिनकी दशा और अन्तर्दशा में पुंलिग भ्रूण का ही प्रसव होगा : (1) पंचमेश तथा गुरु और उन दोनों से युक्त ग्रहों की राशि और नवांश राशि के स्वामियों में जो अधिक बलवान् हो उसकी दशा और अन्तर्दशा। (2) पंचम में स्थित ग्रह और पंचम को देखने वाले ग्रह और उन दोनों की राशियों के स्वामियों में जो अधिक बलवान् हो उसकी दशा और अन्तर्दशा। (3) गुरु, चन्द्र और लग्न में से जो अधिक बलवान् हो उससे पंचम और नवम स्थान। (4) गुरु, चन्द्र और लग्न और उनके स्वामियों में जो अधिक बलवान् हो उसकी दशा और अन्तर्दशा। (5) पंचमेश और सप्तमेश के स्पष्ट राशि आदि के योग से जो राशि हो उसके स्वामी की दशा और अन्तर्दशा। (6) पंचमेश और सप्तमेश के स्पष्ट राशि आदि के योग से जो राशि हो उसमें विद्यमान और उसको देखने वाले ग्रह की दशा और अन्तर्दशा। (7) बलवान् पंचमेश, पंचम-कारक, पंचम-दर्शी और पंचमस्थ, चारों शुभ ग्रहों की दशा और अन्तर्दशा। (8) लग्न, पंचम और सप्तम स्थानों के स्वामियों का जब गोचर से एक राशि में योग हो तब। (9) पंचमेश,

5-9 इन्द्रवंशा

तद्दाय-काले किमु भुक्त्यनेहसि पुत्रस्य लाभं सुत-संपदस् तथा ।
धारा-पति-प्रीतिमुशन्ति तद्विदो लग्नात्मज-द्यून-भ-नाथ-संगमे ।।

5-10 उपजातिः

पत्रेश-पुत्र-स्थित-दर्शि-खौकसां दशा भवेन्नन्दन-लाभ-दायका ।
वागीश-पुत्रेश-भ-भाग-कोण-ग आर्येथ पुत्रेड् यम-कण्टकांश-भे ।।

पुंलिङ्गो भ्रूणः प्रसव-कालिका च ग्रह-स्थितिः

5-11 उपजातिः

याते सुरेज्येथ सुतेशगं गृहम्
आयाति वा नन्दन-भं विलग्न-पः ।
पुत्राप्ति-रंगाप्त-सुलेश-संगमो
भवेद् यदा गोचरतो घनेनुजे ।।

5-12 उपजातिः

कोणाप्ति-कामेथ गुरौ सुतांग-पति-स्फुटैको भ-लवात्म-भाग्ये ।
किं स्वर्क्ष-तुंगे तनुपः सदैव धीशेन योगं यदि चार-गत्या ।।

5-13 उपजातिः

वदन्ति पुत्राप्तिमथो जनुर् भ-
नाथस्य च प्रत्यरि-भाधिपस्य ।
स्पष्टैक्य इन्द्रेज्य इते त्रि-कोणे
किं गोचरेणामर-नाथ-पूज्ये ।।

5-14 अनुष्टुप्

धीशस्य तत्कारकस्य दर्शिनः सहितस्य च ।
स्फुटैक्ये तद्भ-लवगे सुताप्ति कथयेद् बुधः ।।

प्रश्न-कालिका ग्रह-स्थितिः पुंलिङ्गश्च भ्रूणः

5-15 इन्द्रवज्रा

आधान-काले कथितं फलं यत्
प्रश्नेपि तत् सर्वमिहादिशेद् वित् ।

पंचम-स्थित और पंचम-दर्शी ग्रहों की दशा। (10) बृहस्पति और पंचमेश जिस राशि या नवांश राशि में हों उसमें जब गोचर से गुरु आए तब। (11) बृहस्पति और पंचमेश जिस राशि या नवांश राशि में हों उससे पंचम राशि में या नवम राशि में जब गोचर से बृहस्पति आए तब। (12) पंचमेश की और यम कण्टक की नवांश राशि में जब गोचर से बृहस्पति आए तब।

पुंलिग भ्रूण और प्रसव-कालीन ग्रह-स्थिति

अनेक ग्रह-स्थितियां ऐसी हैं जिनमें पुंलिग भ्रूण का ही प्रसव होगा : (1) पंचमेश की अधिष्ठित राशि में या पंचम स्थान में स्थित राशि में जब गोचर से लग्नेश आए तब। (2) जन्म लग्न की राशि और उससे लग्न, तृतीय, पंचम, नवम, लाभ और सप्तम स्थान में जो राशि हो उसमें जब गोचर से आये लग्नेश, सप्तमेश और पंचमेश का समागम हो तब। (3) पंचमेश और लग्नेश के राश्यादि स्पष्टों के योग से प्राप्त राशि और अंशों में और उनसे पंचम और नवम राशि में जब गोचर से गुरु आए तब। (4) गोचर ले लग्नेश स्व-राशि में और स्वोच्च-राशि में आए और तभी पंचमेश के साथ योग करे तो। (5) जन्म-कालीन नक्षत्र के स्वामी का अर्थात् जन्म-नक्षत्र में जिस ग्रह की दशा हो उसका जो राश्यादि स्पष्ट हो वह और प्रत्यदि तारा के स्वामी का, अर्थात् जन्म-नक्षत्र से जो पंचम नक्षत्र हो उसमें जिसकी दशा आए उसका, जो राश्यादि स्पष्ट हो वह जोड़ने से प्राप्त हुई राशि से पंचम और नवम में जब गोचर से गुरु आए तब। (6) पंचमेश, पंचम-कारक, पंचम-दर्शी और पंचमस्थ ग्रहों के राश्यादि स्पष्ट के योग से प्राप्त राशि में जब गोचर से गुरु आए तब।

प्रश्नकालीन ग्रह-स्थिति और पुंलिग भ्रूण

गर्भस्थ भ्रूण का लिंग क्या है, इस प्रश्न का उत्तर गर्भाधान-कालीन ग्रह-स्थितियों के आधार पर तो दिया ही जा सकता है, उन ग्रह-स्थितियों के आधार पर भी दिया जा सकता है जो उक्त प्रश्न किए जाने के समय हों। यह भी उल्लेखनीय है कि उक्त प्रश्न के उत्तर में जो ग्रह-स्थितियां

गर्भानुयोगे वनिता-जनानाम्
ओजर्क्ष-संस्थे पुरुष-ग्रहेन्द्रे ॥[1]

5-16 उपजातिः

संयुक्त-दृष्टे नर-खेचरेण
सीमन्तिनी-गर्भ-गतः पुमान् स्यात्
कलेवरे स्पर्शनतो नृ-राशेश्
चेन् निश्चयः स्यात् पुरुषस् तदानीम्[2] ॥

5-17 उपजातिः

सुतं प्रकुर्यादपहाय लग्नं पतंग-पुत्रो विषमर्क्ष-यातः ।
ओजांशकस्थोपि सुत-प्रदः स्याच् चेद् युग्म-राशौ सम-नन्द-भागे[3] ॥

गर्भाधान-कालिका ग्रह-स्थितयः पुंलिङ्गश्च स्त्रीलिङ्गो वा भ्रूणः

5-18 शार्दूलविक्रीडितम्

वाग्मीनौ विषमे गृहे बल-युतौ
स्यातां कुमार-प्रदौ,
होरार्यात्रिज-हेलयोर् बल-युता
ओजर्क्ष-भागोपगाः ।
पुंसां जन्म समे गृहे सम-लवे
कुर्वन्ति ते स्त्री-जनिम्,
आधाने स-बलाः कलेट्-कवि-कुजा
युग्मे युवत्या जनिः ॥[4]

1. (अनुष्टुप्) निषेक-काले यत् प्रोक्तं, फलं प्रश्ने समादिशेत् । गर्भ-प्रश्ने तु नारीणाम्, आरूढे विषमर्क्षगे ॥ (अनुष्टुप) पुं-ग्रहे पुं-युते दृष्टे, गर्भस्थः पुरुषो भवेत् । पुं-राशि-स्पर्शने देहे, पुमान् भवति निश्चयः ॥ (अनुष्टुप्) पुरुष-स्पर्शने पृष्टा, पुरुषाक्षरमुच्चरेत् । देहस्य दक्षिणे भागे, स्पर्शनेन पुमान् भवेत् ॥ (अनुष्टुप्) अन्यथा स्त्री-प्रसूतिः स्यात्, स्त्री-ग्रहस्य युतीक्षणात् ॥ होरासार-जगन्मोहने ।

गर्भाधान-काल के संदर्भ में लागू होती हैं वे ही ग्रह-स्थितियां प्रश्न-काल के संदर्भ में भी लागू हो सकती हैं। यह दूसरी बात है कि प्रश्न-काल के संदर्भ में कुछ अतिरिक्त ग्रह-स्थितियां भी हैं जिनके आधार पर भ्रूण के लिंग की भविष्यवाणी की जा सकती है। उदाहरण के लिए, प्रश्न-काल में पुरुष ग्रह विषम राशि में हो और वह पुरुष ग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो भ्रूण पुंलिग होगा, या फिर प्रश्नकर्ता पुरुष राशि के अंग का स्पर्श करे तो भी भ्रूण पुंलिग होगा।

इसी प्रकार, लग्न के अतिरिक्त शेष सभी स्थानों अर्थात् तृतीय, पंचम सप्तम, नवम और एकादश में से किसी एक में शनि हो तो भ्रूण पुंलिग होगा, यद्यपि कुछ आचार्यों के मत से, उक्त प्रकार का शनि विषम नवांश में हो तो भी भ्रूण पुंलिग होगा।

गर्भाधान-कालीन ग्रह-स्थिति और पुंलिग या स्त्रीलिंग भ्रूण

गर्भाधान-कालीन ग्रह-स्थिति के आधार पर भ्रूण के पुंलिग होने की भविष्यवाणी के भी कुछ नियम हैं : बलवान् बृहस्पति और सूर्य विषम राशि में हों ; बलवान् लग्न, बृहस्पति, चन्द्र और सूर्य विषम राशि और विषम नवांश में स्थित हों। भ्रूण के स्त्रीलिंग होने की भविष्यवाणी भी गर्भाधान-कालीन ग्रह-स्थिति के आधार पर की जा सकती है : बलवान् लग्न बृहस्पति, चन्द्र, और सूर्य सम राशि और सम नवांश में हों; गर्भाधान-कालीन चन्द्र, शुक्र और मंगल बलवान् होकर सम राशि में स्थित हों।

2. (इन्द्रवज्रा) पुं-राशिगौ पुत्रप-लग्न-नाथौ नार्यास् तदा गर्भ-गतः सुतः स्यात्। होराधिनाथः पुरुष-ग्रहश् चेत् पुं-राशि-संस्थस् तनयं प्रकुर्यात्॥ प्रश्न-वैष्णवम्।
3. (उपजातिः) विहाय लग्नं विषमर्क्ष-संस्थः सौरोपि पुं-जन्म-करो विलग्नात्। प्रोक्तं ग्रहाणामवलोक्य वीर्यं वाच्यः प्रसूतौ पुरुषोंगना वा॥ वराहः।
4. (आर्या) सम-राशि-गताः कन्या, मिश्रोपगते बलाधिकाद् वाच्यम्। सौरो विषमर्क्ष-गतो, लग्नात् पुं-जन्म-दः प्रोक्तः॥ (33)।(आर्या) विषमर्क्षे गुरु-शुक्रौ, बलिनौ पुं-जन्मदः प्रश्ने। गुरु-भौम-शीत-किरणा, युग्मर्क्ष-गताः स्त्रियं कुर्युः॥ (34)। आर्या-सप्तत्यां भट्टोत्पलः। (तामरसम्) रवि-गुरु-लग्न-कला-निधयश् चेद्, विषम-भगाः सुत-जन्मकराः स्युः। विदधति ते समगास् तु तनूजां, तदनु बलाबलतः परिमिश्रैः॥ वासवानन्दः। (आर्यार्धम्) विषम-स्थितेर्क-पुत्रे सुतस्य जन्मान्यथांगनायाश्च। पृथुयशाः।

5-19 अनुष्टुप्

पुं-वर्गे पुर-गे दृष्टे पुं-ग्रहैः स-बलैः पुमान् ।
स-ज्ञे समे हरिण-दृग्-वीक्षिते प्रमदा तदा ।।[1]

5-20 उपजातिः

पुं-भे तमो वा मृदु-गोथ चान्द्रिर् बली भवेश्चेथ पतंग-पूज्यौ ।
बलान्वितौ पुं-भवनाश्रितौ स्यात् सुतोऽन्यथा चेज् जननं सुतायाः ।।

गर्भाधान-कालिका ग्रह-स्थितयः स्त्रीलिङ्गश्च भ्रूणः

5-21 शार्दूलविक्रीडितम्

काव्य-ज्ञौ स्व-गण-स्थितौ वसुमती-पुत्रेक्षितौ वात्रिजो,
वेज्यो युग्म-गृहाश्रितो दिति-सुता चार्येण दृष्टोथ वा ।
पंगौ पिंगल-भाग-गेत्र तनया-जन्माथ तुंगोपगो,
वामा-व्योम-चरश् चतुष्टय-गतो वाच्यांगनाया जनिः ।।

5-22 अनुष्टुप्

युग्म-राश्युदये काव्य-संयुक्ते शर्वरी-पतौ ।
यमानुजे युग्म-भ-गे स-वाग्वाग्मी वधू-जनिः ।।

प्रश्न-कालिका ग्रह-स्थितयः पुंलिङ्गश्च स्त्रीलिङ्गो वा भ्रूणः

5-23 उपजातिः

सुतानुयोगे मति-मूर्ति-नाथौ
पुं-राशि-यातौ तनय-प्रदौ स्तः ।
तौ दारिकादौ वनिता-भ-गौ चेद्
होरेश्वरः पुं-भ-गतो नृ-खेटः ।।

5-24 इन्द्रवज्रा

संस्थस् तदानीं तनया-प्रदः स
पौरे पपीः पुंभवनोपयातः ।
स-प्राक्-कुजेशः सुत-कृत् तदानीं
यद्यन्यथा स्यात् तनुजोच्यते तैः ।।

गर्भाधान-कालीन लग्न में पुरुष ग्रहों का वर्ग हो और बलवान् पुरुष ग्रहों से दृष्ट हो तो भ्रूण पुंलिग होगा, किंतु, गर्भाधान-कालीन लग्न में सम राशि हो और वह स्त्री ग्रहों से दृष्ट हो तो भ्रूण स्त्रीलिंग होगा।
यदि पुरुष या विषम राशि में राहु और शनि हों, या बलवान् बुध एकादश और दशम में हो, या फिर, बलवान् सूर्य और गुरु पुरुष राशि में हों गर्भाधान-कालीन लग्न में, तो भ्रूण पुंलिग होगा, अन्यथा स्त्रीलिंग होगा।

गर्भाधान-कालीन ग्रह-स्थितियां और स्त्रीलिंग भ्रूण

भ्रूण के स्त्रीलिंग होने की भविष्यवाणी की जानी चाहिए यदि गर्भाधान-कालीन लग्न में अग्रलिखित ग्रह-स्थितियां हों : शुक्र और बुध का अपने गृहादि वर्ग में स्थित होकर भौम से दृष्ट होना; चन्द्र या गुरु का सम राशि में स्थित होकर शुक्र से दृष्ट होना; शनि का सूर्य के नवांश में होना; उच्च राशि में स्थित स्त्री ग्रह का केन्द्र में होना। एक और भी स्थिति है जिसमें उसके स्त्रीलिंग होने की भविष्यवाणी की जा सकती है : सम राशि के लग्न में शुक्र-युक्त चन्द्र का होना और सम राशि में गुरु-युक्त शनि का होना।

प्रश्न-कालीन ग्रह-स्थितियां और पुंलिग या स्त्रीलिंग भ्रूण

भ्रूण के लिंग के विषय में प्रश्न किये जाते समय यदि पंचमेश और लग्नेश पुरुष राशि में हुए तो भ्रूण पुंलिग होगा, और यदि वे पंचमेश और लग्नेश स्त्री राशि में हुए तो वह स्त्रीलिंग होगा।
वर्तमान काल-होरा का स्वामी पुरुष ग्रह हो और वह पुरुष ग्रह की राशि में स्थित हो तो भ्रूण पुंलिग होगा, और यदि सम राशि में स्थित शनि सम राशि के नवांश में हो तो वह स्त्रीलिंग होगा।
और, यदि, सूर्य लग्नेश के साथ पुरुष ग्रह की राशि में स्थित होकर लग्न में हो तो भ्रूण पुंलिग होगा, किंतु स्थिति यदि इसके विपरीत रही तो वह स्त्रीलिंग होगा।

1. (मत्ता)जीवादित्यौ विषम-भ-यातौ, पुत्रं विद्याद् यदि बल-युक्तौ। युग्मर्क्षस्थाः कुज-कवि-सोमाः, कन्यायास् स्युर्-जन्मकरास् ते ॥ वासवानन्दः।

5-25 उपजातिः

प्रष्टोच्चरेत् पूरुष-संज्ञकाक्षरं पुं-स्पर्शने दक्षिण-भागके तनोः ।
स्यात् स्पर्शनेनेह नरोन्यथांगना तथा वधूटी-खग-युक्त-वीक्षणात् ।।

5-26 शार्दूलविक्रीडितम्

जीवेनौ विषमेत्र पुञ्ज-निकरौ युग्मर्क्ष-पाता यदि,
पृच्छायां कवि-चन्द्र-भूमि-तनयाः कुर्युस् तथा दारिकाम् ।
गर्भं वा शशिनं कविः किमु कुजो वा शोभनः पश्यति,
गुर्विण्यामिह जायते तनु-जनी राकेश-दैत्यार्चितौ ।।

5-27 शार्दूलविक्रीडितम्

पश्यन्तौ तनयालयं यदि च तौ पुत्र-प्रदौ कीर्तितौ,
चेत् तौ पञ्चम-भाव-गौ हि तनया-लाभ-प्रदौ कीर्तितौ ।
लाभस्थावपि तौ मतौ सुत-करौ निम्नास्त-यातौ न चेत्,
सेन्दुर् लग्न-पतिः सुते तनु-पतिः पुत्रालये नन्दनः ।।

5-28 शार्दूलविक्रीडितम्

तुंगस्थोभ्युदितोथ वा रवि-जनिः सौम्यास्फुजिद्-वीक्षिते,
यद्वा चन्द्रमसेक्षितः किमु युतः पुत्र-प्रदः कीर्तितः ।
पुत्रेंगे भव-भे यदा शुभ-खगाः खे वाक्पतिर् वीर्यवान्,
सौम्यः सूनु-गतश् च संतति-करः प्रोक्तस् तदा प्राक्तनैः ।।

प्रश्नस्य समयो भ्रूणस्य च लिङ्गम्

5-29 शार्दूलविक्रीडितम्

पूर्वाह्णेग्र-गते रवेः शश-धरे
पुत्रः पराह्णे रवेः,
पृष्ठस्थे सितगौ सुता स्व-लवगाः
पुं-खेचरा वीक्षिताः ।
ग्लावा भेन च ना वधू-दिवि-चराश्
चेत् स्त्री सुरूपा बहु-
भाग्याढ्या विषमर्क्षगाश्च सकलाः
खेटास् तदा पुत्रदाः ।।[1]

1. (इन्द्रवज्रा) पूर्वाह्ण-काले सवितुः पुरस्थे, चन्द्रे तदा गर्भ-गतः सुतः स्यात् ।

भ्रूण के लिंग के विषय में प्रश्न करता हुआ प्रश्नकर्ता यदि पुरुषाक्षरों का प्रयोग करे या पुरुष को स्पर्श करे या शरीर के दाहिने भाग का स्पर्श करे तो भ्रूण पुंलिंग होगा, अन्यथा स्त्रीलिंग। प्रश्न-कालीन लग्न स्त्री ग्रह से युक्त हो तो भी वह स्त्रीलिंग होगा।

प्रश्न किये जाने के समय बृहस्पति और सूर्य विषम राशि में हों तो भ्रूण पुंलिंग होगा, और शुक्र, चन्द्र और मंगल सम राशि में हों तो स्त्रीलिंग। प्रश्न-लग्न से पंचम स्थान को, या फिर प्रश्न-कालीन चन्द्र को शुक्र, मंगल और शुभ ग्रह देखें तो भ्रूण पुंलिंग होगा; प्रश्न-लग्न से पंचम स्थान को चन्द्र और शुक्र देखें तो भी वह पुंलिंग होगा, किंतु वे दोनों, चन्द्र और शुक्र प्रश्न-लग्न से पंचम स्थान में हों तो वह स्त्रीलिंग होगा। दूसरी ओर, वे ही चन्द्र और शुक्र नीच राशि में और अस्तगत न होकर लाभ भाव में स्थित हों तो भ्रूण पुंलिंग होगा, और चन्द्र से युक्त लग्नेश पंचम भाव में हो और पंचमेश लग्न में हो तब भी वह पुंलिंग होगा, और प्रश्न-कालीन शनि अपनी उच्च राशि में हो या उदयी हो और बुध और शुक्र से दृष्ट हो तथा चन्द्र से दृष्ट और युक्त हो तब भी वह पुंलिंग ही होगा। संभोग से सफल गर्भाधान अवश्य हुआ होगा यदि उसके लिंग के विषय में प्रश्न किये जाते समय पंचम, लग्न और एकादश स्थान में शुभ ग्रह हों तथा दशम में बृहस्पति और पंचम में बुध हो।

प्रश्न का समय और भ्रूण का लिंग

पूर्वाह्ण में अर्थात् सवेरे या तो गर्भाधान हुआ हो या प्रश्न किया जा रहा हो और चन्द्र सूर्य से आगे हो तो भ्रूण पुंलिंग होगा। अपराह्ण में अर्थात् शाम को या तो गर्भाधान हुआ हो या प्रश्न किया जा रहा हो और चन्द्र सूर्य से पीछे हो तो भ्रूण स्त्रीलिंग होगा। पुरुष ग्रह अपने-अपने नवांश में हों और चन्द्र तथा शुक्र द्वारा दृष्ट हों तो भ्रूण पुंलिंग होगा। और, स्त्री ग्रह अपने-अपने नवांश में हों और चन्द्र तथा शुक्र द्वारा दृष्ट हों तो भ्रूण स्त्रीलिंग होगा और वह जिस महिला के रूप में विकसित होगा वह परम सुन्दरी और ऐश्वर्यशालिनी होगी। समस्त सूर्य आदि ग्रह यदि विषम राशि में हों तो भ्रूण पुंलिंग होगा।

चन्द्रे पराह्णे रवि-पृष्ठ-संस्थे, कन्या भवेद् गर्भ-गताङ्गनायाः ।। ग्रन्थान्तरम्।

5-30 इन्द्रवज्रा

युग्मर्क्षगास् ते तनया नृ-खेट-युक्तेक्षिते धी-भवने तनूजः ।
युग्मर्क्ष-संस्थैः पुर-पेरु-नूज्यैर् गर्भोपयातस् तनयोंगनायाः ।।

प्रश्नस्य वारादयो भ्रूणस्य च लिङ्गम्

5-31 शालिनी

प्रश्ने वारो भं तिथिस् तन्मितिर् या
नाम्नो वर्णा गर्भवत्या युवत्याः ।
सा तैर् युक्ता सप्त-भक्तावशेष-
ओजे पुत्रः स्त्री समे खे प्रजा नो ।।

नामाक्षराणां संख्या भ्रूणस्य च लिङ्गम्

5-32 शालिनी

किं गुर्विण्या नाम-वर्णैरुपेता
आकाशाम्भोध्युन्मिताश् चेषु-युक्ताः ।
तिथ्या युक्ताः खेचरैः संविभक्ते
शेषे युग्मे कन्यकौजे पुमान् स्यात् ।।

5-33 शालिनी

नारी-पुंसोर् वर्ण-मात्रांक-पिण्डं
ग्रामैर् हन्याद् हस्तिभिः संविभज्य ।
युग्मे शेषे स्यात् कुमारी तथौजे
शेषे पुत्रस् त्वाद्य-गर्भेबलायाः ।।

प्रश्न-लग्नाद् भ्रूण-लिङ्गस्य ज्ञानम्

5-34 अनुष्टुप्

अनुयोगोदयेर्थेस्तेनुजे कोणे नृ-खेचराः ।
तनयोन्य-खगैस् तत्र गर्भस्था महिला तदा ।।

दूसरी ओर, यदि समस्त ग्रह सम राशि में हों तो भ्रूण स्त्रीलिंग होगा। जिस समय प्रश्न किया जा रहा हो उस समय के लग्न से पंचम स्थान पुरुष ग्रहों से युक्त और दृष्ट हो, या फिर, प्रश्न किये जाते समय लग्न सूर्य और गुरु सम राशि में हों तो भी भ्रूण पुंलिंग होगा।

प्रश्न के वार आदि और भ्रूण का लिंग

जिस समय भ्रूण के लिंग के विषय में प्रश्न किया जा रहा हो उस समय जो वार, नक्षत्र और तिथि हों उनकी संख्या जोड़कर उसमें गर्भवती स्त्री के नाम के अक्षरों की संख्या भी जोड़ने पर जो योगफल आए उसमें सात का भाग देने पर यदि शेष एक, तीन या पांच बचे तो भ्रूण पुंलिंग, दो, चार या छह बचे तो स्त्रीलिंग, और शून्य बचे तो प्रसव ही नहीं होगा।

नामाक्षरों की संख्या और भ्रूण का लिंग

इस प्रकार की एक विधि और भी है। जिस तिथि को उक्त प्रश्न किया जा रहा हो उसकी संख्या में गर्भवती के नामाक्षरों की संख्या और पैंतालीस जोड़ने पर जो योगफल आए उसमें नौ का भाग देने पर यदि एक, तीन, पांच या सात शेष बचे तो भ्रूण पुंलिंग होगा, और यदि दो, चार, छह या आठ शेष बचे तो स्त्रीलिंग।

एक विधि और भी इसी प्रकार की है, यद्यपि वह केवल सर्वप्रथम गर्भाधान के संदर्भ में लागू होगी। गर्भवती स्त्री के नाम और जिससे गर्भाधान हुआ हो उस पुरुष के नाम के स्वरों और व्यंजनों की संख्या में तीन का गुणा करके जो गुणनफल आए उसमें आठ का भाग देने पर एक, तीन पांच या सात बचे तो पुंलिंग और दो, चार या छह बचे तो स्त्रीलिंग होगा।

प्रश्न-लग्न से भ्रूण के लिङ्ग का ज्ञान

जिस समय प्रश्न किया जा रहा हो उस समय के लग्न में और उस लग्न से द्वितीय, सप्तम और त्रिकोण में यदि पुरुष ग्रह हों तो गर्भस्थ भ्रूण पुंलिङ्ग होगा, और यदि अन्य ग्रह हों तो वह स्त्रीलिङ्ग होगा।

भ्रूणस्य गर्भे स्थितेस् तस्य लिङ्गस्य ज्ञानम्

5-35 अनुष्टुप्

युवत्या दक्षिणे पार्श्वे नन्दनः स्याददक्षिणे ।
पार्श्वे स्त्री-तुन्द-मध्यस्थः षण्डो युग्मावुभोपगौ ।।

नपुंसको भ्रूणः

5-36 उपजातिः

भास्वद्विधू ओज-समर्क्षगो मिथः
प्रपश्यतो वा ज्ञ-शनी तथा क्रमात् ।
ओजर्क्षगोसृक् सम-राशिगं रविं
पश्येदुतौजर्क्ष-गतौ तनू-विधू ।।[1]

5-37 उपजातिः

दृष्टौ महीजेन समर्क्षगेण किम्
ओजर्क्ष-युग्मर्क्ष-गतौ ज्ञ-शीतगू ।
कुजेक्षितौ वा विषयांशगास् तनू-
सितेन्दवो वा विदि भाग्य-भार्गवौ ।।

5-38 इन्द्रवंशा

किं भाग्य-भौ व्योम्नि मृतौ सतां दृशा
मुक्तावथार्कौ स-क-भे भयाकयोः ।
सद्वीक्षणोनेथ स-पंक-कान्तपे
नीचे क्षयोरौ विकल-ग्रहान्वितम् ।।

5-39 उपजातिः

द्यूनं ततोस्ते विबलः खलः शुभो
बालाधिपो नष्टमितः परांशके ।
किमून-वीर्योस्त-पतिः स्व-नीचगो
नीच-प्रदृष्टोस्तमितोस्तपोरिगः ।।

5-40 उपजातिः

किं नष्ट-नारी-गृहपोत्यये भये
विनष्ट-खेटर्क्ष-गतो नपुंसकः ।

भ्रूण की गर्भ में स्थिति से उसके लिङ्ग का ज्ञान

गर्भ में भ्रूण कभी दायें, कभी बायें और कभी बीच में होता है। यदि वह गर्भ के दायें भाग में हो तो पुंलिङ्ग, बायें भाग में हो तो स्त्रीलिङ्ग और बीचोंबीच हो तो नपुंसकलिङ्ग होगा।

नपुंसक भ्रूण

गर्भस्थ भ्रूण कभी-कभी नपुंसक भी होता है। ऐसा जिन प्रसव-कालीन ग्रह-स्थितियों में होता है वे अग्रलिखित हैं : (1) विषम राशि में सूर्य और सम राशि में चन्द्र हों और वे दोनों एक-दूसरे को देखते हों। (2) विषम राशि में बुध और सम राशि में शनि हों और वे दोनों एक-दूसरे को देखते हों। (3) सम राशि में स्थित सूर्य को विषम राशि में स्थित मङ्गल देखता हो। (4) विषम राशि में स्थित लग्न और चन्द्र को सम राशि में स्थित मङ्गल देखता हो। (5) विषम राशि में बुध और सम राशि में स्थित चन्द्र को मङ्गल देखता हो। (6) विषम राशि के नवांश में लग्न, शुक्र तथा चन्द्र हों। (7) दशम में शनि तथा शुक्र हों। (8) दशम और अष्टम में शुक्र और शनि हों और उन्हें कोई शुभ ग्रह न देखता हो। (9) षष्ठ या व्यय में जलराशिस्थ शनि हो और वह भी किसी शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट न हो। (10) अष्टम और षष्ठ में नीच-राशिस्थ पाप-युक्त सप्तमेश हो और सप्तम भाव विकल ग्रह से युक्त हो। (11) सप्तम में निर्बल पाप ग्रह और निर्बल शुभ ग्रह हों। (12) शत्रु नवांश और अन्यांश में नष्ट-गत सप्तमेश हो। (13) नीच राशि में अस्तगत निर्बल लग्नेश हो और वह नीच राशि-गत ग्रह से दृष्ट हो, षष्ठ में सप्तमेश हो। (14) अष्टम और षष्ठ में विनष्ट ग्रह

1. (अनुष्टुप्) सम-राशि-गतश् चन्द्रो, विषमर्क्ष-गतं रविम्। पश्यत्यर्कोथ वा चन्द्रं, क्लीबं तत्र वदेत् सुधीः ।। (अनुष्टुप्) सौर-ज्ञौ च युग्मौजर्क्षे, अन्योन्यं यदि पश्यतः। तदापि क्लीब-योगः स्यात् प्रोक्तमेतत् पुरातनैः ।। (अनुष्टुप्) विषमर्क्षे गतो भौमः सम-राशि गतं रविम्। रविः पश्यति वा भौमं, तदापि स्यान् नपुंसकम् ।। ग्रन्थान्तरम्। (आर्या) वक्रो विषमे सूर्यः, सम-गश् चैवं परस्परालोकात्। विषमर्क्षे लग्नेन्दू, सम-राशि-गतः कुजो विलोकयति ।। (आर्या) बुध-चन्द्रौ कुज-दृष्टौ, विषमर्क्षगतौ तथैवोक्तम्। ओज-नवांशक-संस्था, लग्नेन्दु-सितास् तथैवोक्ताः ।। बादरायणः।

शनैश्चरेच्छाच् चरमेभिधान-भे
यद् वा विवस्वत्-सुत-भार्गवौ वधे ॥
5-41 उपजातिः
दृष्टौ न सौम्यैरथ नोचगे व्यये
रात्रौ शनौ षण्ड उतेह तादृशः ।
अंशे शिखावान् द्विज-राज-सूनुना
शनैश्चरेणापि विलोक्यते तथा ॥

प्रश्नाक्षराणां संख्या भ्रूणस्य च लिङ्गम्
5-42 उपजातिः
नखाहता खाग्नि-युता च पंक्तिः
प्रश्नाक्षराणां तुरगैर् विभक्ता ।
शेषे द्वि-षट्के तनयाद्रि-वेदे
षण्डः कु-रामाक्ष-मिते सुतः स्यात् ॥

की राशि में स्थित विनष्ट सप्तमेश हो। इसी प्रकार, कुछ भ्रूण प्रसव-काल में या तो नपुंसक होते हैं या नपुंसक के समान आकार वाले होते हैं, यदि उनकी प्रसव-कालीन ग्रह स्थिति अग्रलिखित हो : (1) शुक्र से व्यय और षष्ठ में शनि हो। (2) अष्टम में शनि और शुक्र हों और उन्हें कोई शुभ ग्रह न देखता हो। (3) व्यय और षष्ठ में नीच-राशि-स्थ शनि हो। (4) कारकांश लग्न में केतु हो और वह बुध और शनि से दृष्ट हो।

प्रश्नाक्षरों की संख्या और भ्रूण का लिङ्ग

गर्भस्थ भ्रूण का लिङ्ग जानने के लिए किये गये प्रश्न में जितने अक्षर हों उतनी संख्या में बीस का गुणा करने पर आये गुणन-फल में तीस जोड़ने पर जो योग-फल आए उसमें सात का भाग देने पर चार या शून्य वचे तो नपुंसकलिङ्ग, दो या छह शेष वचे तो स्त्रीलिङ्ग और एक, तीन या पांच शेष वचें तो पुंलिङ्ग होगा।

षष्ठः प्रकाशः

गर्भाधान-लग्नात् प्रसव-कालस्य ज्ञानम्

6-1 उपजातिः

निषेक-काले खर-दीप्ति-भागे
यस्मिन् नभो-मण्डल-दीपकश् च ।
व्यवस्थितस् तत्सम-भे प्रसूतिं
वदन्ति गर्भस्य बुधाग्र-गण्याः ॥[1]

गर्भाधान-लग्नात् प्रसव-कालस्य ज्ञाने रीत्यन्तरम्

6-2 उपजातिः

आधान-देहाद् यदि चार-गत्या
तृतीय-राशिं समुपैति सूर्यः
जनुस् तदा वा तरणौ त्रि-कोणे ।
निषेक-कालोद्गमतो जनिः स्यात् ॥[2]

प्रश्न-लग्नात् प्रसव-कालस्य ज्ञानम्

6-3 उपजातिः

नीहार-दीप्त्यात्मज-गेह-नायकौ
व्यवस्थितौ तौ तु मदैक-मन्दिरे ।
सीमन्तिनी गर्भवती प्रसूयते
तदैव नूनं यदि चान्यथा नहि ॥[3]

1. (आर्या) यस्मिन् द्वादश-भागे, गर्भाधाने व्यवस्थितश् चन्द्रः। तत्तुल्यर्क्षे प्रसवं, गर्भस्य समादिशेत् प्राज्ञः ॥ सारावली । (अनुष्टुप्)यावत्-संख्ये द्वादशांशे, शीत-रश्मिर् व्यवस्थितः। सत्संख्यो यस् ततो राशिर्, जन्मेन्दौ तद्गते वदेत् ॥ गार्गिः । (वसन्ततिलका) गोजाश्वि-कर्कि-मिथुना स-मृगा निशाख्याः, पृष्ठोदया विमिथुनाः कथितास् त एव। शीर्षोदया दिन-बलाश् च भवन्ति शेषाः, लग्नं समेत्युभयतः पृथुरोम-युग्मम् ॥ वराहः ।

प्रसव का काल

गर्भाधान-लग्न से प्रसव-काल का ज्ञान

सामान्य भ्रूण के प्रसव के दिन और क्षण की भविष्यवाणी : गर्भाधान के समय चन्द्र जिस द्वादशांश में स्थित हो उसमें जितनी संख्या का द्वादशांश विद्यमान हो उस द्वादशांशक से उतनी संख्या तक आगे जो राशि हो उसमें चन्द्र के आने पर दशम मास में प्रसव होगा। इस नियम का उदाहरण परिशिष्ट एक में द्रष्टव्य है।

गर्भाधान-काल से प्रसव-काल के ज्ञान की दूसरी रीति

इस सन्दर्भ में कुछ आचार्यों का मत उपर्युक्त मत से भिन्न है : गर्भाधान-काल के लग्न से जो तृतीय राशि हो उसमें गोचर गति से जब सूर्य आए तब प्रसव होगा; या, गर्भाधान-काल के लग्न से जो पञ्चम या नवम राशि हो उसमें जब गोचर से सूर्य आए तब प्रसव होगा। इस मत की तुलना परिशिष्ट एक में दिये गये उदाहरण से की जा सकती है।

प्रश्न-लग्न से प्रसव-काल का ज्ञान

किन्तु, कुछ अन्य आचार्यों के मत से प्रसव के दिन, समय आदि की भविष्यवाणी प्रश्न-काल की ग्रह-स्थिति के आधार पर भी की जाती है; उदाहरण के लिए, प्रश्न-कालीन लग्न से पञ्चम स्थान में विद्यमान राशि का स्वामी यथासंभव नवम या दशम मास में जिस राशि में स्थित हो उस राशि के चन्द्रोदय में प्रसव होगा, अन्यथा नहीं।

2. (उपजातिः) निषेक-लग्नाद् दिनपस्-तृतीये, राशौ यदा चार-वशादुपैति। आधानलग्नादथ वा त्रि-कोणे, रवौ यदा जन्म वदेन् नराणाम्।। सर्वार्थ-चिन्तामणिः।

3. (प्रमाणिका) यदैक-राशि-संस्थितौ, सुतेश्वर-क्षपाकरौ। तदैव गुर्विणी वधूः प्रसूयते तु नान्यथा।। ग्रन्थान्तरम्।

गर्भाधान-लग्नात् प्रश्न-लग्नाद् वा प्रसव-कालस्य ज्ञानम्

6-4 उपजातिः

यो मूर्ति-नेम्योः स-बलोत्र तस्य
समन्वितो हेलि-लवेन राशिः ।
यावांस् ततस् चार-वशेन तावत्
तद्राशि-याते प्रसवो विधौ वा ॥[1]

6-5 उपजातिः

तत्काल-शीतांशु-लवाद् वधू-भे व्यवस्थिते शीतकरे प्रसूतिः ।
यद् वा विलग्नस्य नभोग-भाग-पतेर् गृहस्थे शशिनि प्रसूतिः ॥

6-6 अनुष्टुप्

तमस्विनी-कोक-हित-कलाधिनाथ-भागतः ।
भुक्ताच् च तावति गते दिवा रात्रौ जनिं वदेत् ॥

गर्भाधान-लग्नात् प्रश्न-लग्नाद् वा प्रसव-कालस्य ज्ञाने मतान्तरम्

6-7 शालिनी

तत्कालं ग्लौ-संयुतो योर्क-भागस्
तत्तुल्यर्क्षेणान्वितोग्रे शशांकः ।
अह्नस् तस्यास् तुल्य-भागे ह्यु देति
यावांस् तावान् संभवो द्युक्षपेते ॥[2]

1. (आर्या) लग्नेन्द्वोर् यो बलवान्, तस्य द्वि-रसांशको राशिः। यावांस् तस्मात् तावच्, चरतो राशि-स्थिते विधौ प्रसवः॥ (आर्या) तत्कालेन्दु-नवांशाज्, जामित्रे शीतगौ स्थिते सूतिः। उदय-नवांशाधिपतेः, क्षेत्रं याते विधौ प्रसवः॥ (आर्यार्धम्) रात्रिन्दिन-शशि-भागाद्, भुक्तात् तावद्गते दिवा-रात्रौ ॥होरासारः। (आर्या) लग्नेन्द्वोर् यो बलवान्, तस्य द्वि-रसांशको राशिः। यावत् तस्मात् तावत्, तस्य राशि-स्थिते विधौ प्रसवः॥ (आर्या) तत्कालेन्दु-नवांशाज्, जामित्रे शीतगौ स्थिते सूतिः। उदय-नवांशाधिपतेः, क्षेत्रं याते तदा प्रसवः॥ जगन्मोहनः। (आर्या) तत्काल-दिवस-निशा-संज्ञः समुदयति राशि-भागो यः। यावानुदयस् तावान्, वाच्यो दिवसस्य रात्रेर्वेति ॥ कल्याणवर्मा ।

2. (अनुष्टुप्) प्रश्न-काले यथाधान-कालेनाश्रित्य प्रोच्यते। प्रश्न-काले तथाधान-काले यत्र स्थितः शशी ॥ (अनुष्टुप्) तद्-राशि-द्वि-रसांशो हि, ज्ञातव्यः शास्त्र-मार्गतः। यत्र भागे स्थितश् चन्द्रस् तत्संख्यक-भतः पुरः॥

गर्भाधान-लग्न या प्रश्न-लग्न से प्रसव-काल का ज्ञान

कुछ नियम प्रसव-काल जानने के ऐसे हैं जो गर्भाधान-कालीन और प्रश्न-कालीन, दोनों में से किसी के भी लग्न पर समान रूप से आधारित होते हैं। जैसे (1) गर्भाधान-कालीन या फिर प्रश्न-कालीन लग्न और चन्द्र में से जो अधिक बलवान् हो वह जिस द्वादशांशक में स्थित हो उसमें जितनी संख्या का द्वादशांश वर्तमान हो उस द्वादशांशक से उतनी संख्या तक आगे जो राशि हो उसमें चन्द्र के आने पर दसवें मास में प्रसव होगा; (2) गर्भाधान-कालीन या प्रश्न-कालीन चन्द्र के नवांश से सप्तम स्थान में जो राशि हो उसमें चन्द्र के आने पर प्रसव होगा; (3) गर्भाधान-कालीन या प्रश्न-कालीन लग्न में जिस राशि का नवांश हो उसके स्वामी की राशि में चन्द्र के आने पर प्रसव होगा; (4) रात्रि या दिन में चन्द्र के जितने भुक्तांशक हों उतने बीत जाने पर दिन या रात्रि में प्रसव होगा।

गर्भाधान-लग्न या प्रश्न-लग्न से प्रसव-काल का ज्ञान : मतान्तर

गर्भाधान-कालीन और प्रश्न-कालीन, दोनों में से किसी के भी लग्न पर समान रूप से आधारित कुछ नियम और भी हैं जिन्हें मतान्तर कहा जा सकता है: (1) गर्भाधान-काल या प्रश्न-काल की द्वादशांश-कुण्डली में जिस राशि में चन्द्र हो उस राशि के चन्द्र में नौवें या दसवें मास में प्रसव होगा। इसका उदाहरण परिशिष्ट दो में दिया गया है। (2) गर्भाधान-काल या प्रश्न-काल के स्पष्ट चन्द्र में जिस संख्या का वर्तमान द्वादशांश हो उसी संख्या के द्वादशांश की कुण्डली में स्थित चन्द्र की राशि से आगे गिनकर जो राशि आए उस राशि के चन्द्र में नौवें या दसवें मास में प्रसव होगा। (3) गर्भाधान-काल में या प्रश्न-काल में लग्न के जितने भुक्त अंशादि हों उतने ही घटी-आदि, दिन के या रात्रि के, व्यतीत होने पर प्रसव होगा, अर्थात् उक्त लग्न की राशि यदि दिन

(अनुष्टुप्) यो राशिस् तत्स्थके चन्द्रे दशमे मासि सूयते। विज्ञायैवं प्रयत्नेन, वक्तव्यं वा समञ्जसम् ।। ग्रन्थान्तरम्। (वसन्ततिलका) तत्कालमिन्दु-सहितो द्वि-रसांशको यस्, तत्तुल्य-राशि-सहिते पुरतः शशाङ्के। यावानुदेति दिन-रात्रि-समान-भागस् तावद्गते दिन-निशोः प्रवदन्ति जन्म ।। वराहमिहिरः।

6-8 अनुष्टुप्

अनुयोगेथ वाधाने यस्मिन् मन्द-लवे विधुः
द्वादशांकवत् तस्मात् प्रसवं निर्दिशेद् बुधः ।।[1]

प्रसव-कालाद् गर्भाधान-कालस्य ज्ञानम्

6-9 शार्दूलविक्रीडितम्

आधानं जनि-कालतो दश-मिते
मासे पुरा स्यादुत
मासैक-प्रमिते जनुस् तनु-समो
ह्याधान-चन्द्रस् तथा ।
उत्पत्तीन्दु-समं निषेक-हरिजं
होरा-विदा कीर्तितम्,
आधानोदय-यामिनी-पति-समस्
तद्वन् मतो जन्मनः ।।

तृतीये द्वादशे वा वर्षे प्रसवः

6-10 उपजातिः

यदा निषेकोदय आर्कि-भांशे
गुणोन्मितेब्दे प्रभवेत् प्रसूतिः ।
एवं विधे चन्द्रमसि प्रसूतिः
स्याद् द्वादशेब्दे प्रसवेपि युक्त्या ।।[2]

1. (आर्यार्धम्) तत्कालेन्दु-नवांश-द्वादश-भागे विनिर्दिशेच् चन्द्रम् ।। ग्रन्थान्तरम् ।

2. (अनुष्टुप्) आधाने प्रश्न-काले वा, शन्यंशो सप्तमे शनौ । त्रिभिरब्दैः प्रसूतिः स्याच्, चन्द्रे चास्ते क-वत्सरे ।। जातकोत्तमम् । (मालिनी) उदयति मृदु-भांशे

में वलवान् हो तो दिन वीतने पर और रात्रि में वलवान् हो तो रात्रि वीतने पर प्रसव होगा। (4) गर्भाधान-काल या प्रश्न-काल में जिस नवांश में चन्द्र हो उससे द्वादशांश के समान प्रसव होगा।

प्रसव-काल से गर्भाधान-काल का ज्ञान

गर्भाधान-काल का ज्ञान हो तो प्रसव-काल का ज्ञान किया जा सकता है, इसी प्रकार, इसके विपरीत, प्रसव-काल का ज्ञान हो तो गर्भाधान-काल का ज्ञान भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए (1) प्रसव काल से पूर्व के दसवें या नौवें मास में गर्भाधान हुआ होगा; (2) जन्म-कालीन लग्न के राशि-आदि के समान गर्भाधान-कालीन राशि-आदि स्पष्ट चन्द्र होगा; (3) प्रसव-कालीन राशि-आदि चन्द्र के समान गर्भाधान-कालीन लग्न होगा; (4) प्रसव-कालीन चन्द्र और लग्न के समान गर्भाधान-कालीन चन्द्र और लग्न होगा। इन नियमों की उपर्युक्त नियमों से तुलना की जा सकती है।

तीसरे या बारहवें वर्ष में प्रसव

यह अनिवार्य नहीं कि स्त्री प्रथम संभोग से ही गर्भवती हो जाए, वह प्रथम संभोग के पश्चात् कभी तीसरे और कभी बारहवें वर्ष में गर्भवती होती है। उदाहरण के लिए, प्रथम संभोग के लग्न में शनि की राशि और शनि का नवांश हो तो तीन वर्ष में, और, गर्भाधान-काल के लग्न में चन्द्र की राशि और नवांश हो तो बारहवें वर्ष में प्रसव होगा।

सप्तमस्थे च मन्दे, यदि भवति निषेक: सूति-शब्द-त्रयेण। शशिनि तु विधिरेष द्वादशेऽब्दे प्रकुर्यान्निगदितमिह चिन्त्यं सूति-कालेपि युक्त्या।। बृहज्जातकम्।

सप्तमः प्रकाशः

पितुरनुपस्थितौ प्रसवः

7-1 उपजातिः

नारी-निकेते क्षिति-नन्दने वा
पतंग-पुत्रे पुर-मन्दिरे वा ।
कलानिधौ काव्य-कलेशजन्ययोर्
अन्तःस्थिते तात-परोक्ष-जन्म ।।

7-2 उपजातिः

नालोकिते चन्द्रमसोदया चले तदा परोक्षस्य पितुः प्रजातकः ।
विदेशगस्योदय इन्द्वनीक्षिते मेषूरणाद् भ्रष्ट इने चरे गृहे ।।

7-3 इन्द्रवंशा

मार्ग-स्थितस्य द्वि-तनुं गते रवौ
भ्रष्टे खतोंगे न शशीक्षिते जनिः ।
हेलौ स्थितेंकाय-वधान्त्यगे तनौ
नाब्जेक्षिते जन्म शिशोः परोक्षके ।।

7-4 उपजातिः

स्वदेश-संस्थस्य पितुस् ततो दिने
दिवाकरे वक्र-विलोकिते निशि ।
मन्दे मही-नन्दन-लोकिते पितुः
परोक्ष आहुर् जननं शिशोर् बुधाः ।।

मार्गादौ प्रसवः

7-5 उपजातिः

मार्गे जनिर् भांश-समान-गोचरे
चरेथ गेहेग-गृहे जनुर् भवेत् ।

प्रसव का स्थान

पिता की अनुपस्थिति में प्रसव

प्रसव-कालीन ग्रह-स्थितियों का कुछ ऐसा भी प्रभाव पड़ता है कि शिशु का प्रसव जब और जहां होता है तब और वहां उसका पिता किसी-न-किसी कारण से अनुपस्थित रहता है। ऐसी तीन ग्रह-स्थितियां अग्र-लिखित हैं : सप्तम में मङ्गल का होना; लग्न में शनि का होना; शुक्र और बुध के अन्तराल में चन्द्र का होना।

जन्म-लग्न के चन्द्र से दृष्ट न होने पर भी पिता की अनुपस्थिति में प्रसव होगा। लग्न चन्द्र से दृष्ट न हो और चर राशि में स्थित सूर्य लाभ, व्यय, भाग्य या अष्टम में हो तो प्रसव उस समय होगा जब पिता परदेश में रह रहा होगा।

दशम स्थान से भ्रष्ट सूर्य, अर्थात् लाभ, व्यय, नवम या अष्टम में स्थित सूर्य द्वि-स्वभाव राशि में हो और लग्न को चन्द्र न देखता हो तो प्रसव ऐसे समय होगा जब पिता कहीं जाता हुआ या कहीं से आता हुआ मार्ग में होगा।

स्थिर राशि में स्थित सूर्य नवम, एकादश, अष्टम और व्यय में हो और लग्न चन्द्र द्वारा अदृष्ट हो तो प्रसव-काल में पिता अनुपस्थित रहेगा, भले ही तब वह परदेश में न होकर स्वदेश में ही कहीं हो। प्रसव-काल दिन में पड़ता हो और सूर्य मङ्गल द्वारा दृष्ट हो तो प्रसव के समय पिता अनुपस्थित रहेगा। इसी प्रकार, प्रसव-काल रात्रि में पड़ता हो और शनि मङ्गल द्वारा दृष्ट हो, तब भी पिता की अनुपस्थिति में ही प्रसव होगा।

मार्ग आदि में प्रसव

जन्म-लग्न की राशि या लग्न-गत नवांश राशि जिस प्रदेश में विद्यमान हो उसी प्रदेश में प्रसव होगा, अन्यत्र नहीं। लग्न में चर राशि हो तो उस राशि के विचरण-प्रदेश के मार्ग में प्रसव होता। लग्न में स्थिर

निजालये स्वर्क्ष-लव-स्थिते लव-
भयोः फलं वीर्य-वशाद् बुधैर् मतम् ॥

नावि प्रसवः

7-6 उपजातिः

पीयूषगौ पूर्ण-तनौ कुलीर-भे
तनौ स-सौम्ये सलिले स-शोभने ।
वांगे कलत्रे कु-तले कलाधरे
स्त्री गर्भिणी पोत-गता प्रसूयते ॥

जले प्रसवः

7-7 इन्द्रवज्रा

तोयोदयं तोय-गतस् तमीशः
संपूर्ण-देहः समवेक्षते वा ।
वार्मण्डलोंगाम्बर-वारि-यातौ
वार्युद्गमो वारिणि सूयते स्त्री ॥

कारागारे गर्ते च प्रसवः

7-8 उपजातिः

संवोक्ष्यमाणे दुरितैः शनैश्चरे-
वसानगे कल्प-गते कलाभृति ।
गुप्त्यां प्रसूतिः स-कुलीर-वृश्चिकें-
गे पैंगलौ पर्वरि-वीक्षितेवटे ॥

क्रीडागृहे, देवालये, मरुस्थले च प्रसवः

7-9 उपजातिः

सवारि-भेंगे विबुधेक्षिते सिते
क्रीडा-गृहे जन्म वदेत् सुरालये ।
विलोक्यमाने यदि लोक-बन्धुना
संवीक्षितेंऽजेन तु सोखरावनौ ॥

राशि हो तो उस राशि के विचरण-प्रदेश में घर के समीप प्रसव होगा। किन्तु जो प्रसव वर्गोत्तम लग्न में होगा वह घर में ही होगा।

नाव में प्रसव

दो ग्रह-स्थितियां ऐसी भी हैं जिनके प्रभाव से माता उस समय प्रसव करती है जब वह नाव में बैठकर कहीं जा रही हो या कहीं से अपने घर आ रही हो : कर्क राशि में पूर्ण चन्द्र का, लग्न में बुध का और चतुर्थ में शुभ अर्थात् गुरु का होना; लग्न, सप्तम और चतुर्थ में चन्द्र का होना।

जल में प्रसव

इसी प्रकार, ऐसी भी दो ग्रह-स्थितियां हैं जिनके रहते हुए माता उस समय प्रसव करती है जब वह किसी कारण से नदी, तालाब आदि में मौजूद हो : पूर्ण चन्द्र द्वारा लग्न में स्थित जलचर राशि का देखा जाना; लग्न, दशम और चतुर्थ में चन्द्र का और लग्न में जलचर राशि का होना।

कारागार और गड्ढे में प्रसव

एक ग्रह-स्थिति ऐसी है जिसके कारण माता प्रसव करते समय कारागार या कैदखाने में रह रही होती है : पाप से दृष्ट शनि का व्यय में और चन्द्र का लग्न में होना। एक ग्रह-स्थिति के कारण प्रसव गड्ढा, बीहड़ आदि ऐसी जगह होता है जहां से निकलने का रास्ता न हो : कर्क या वृश्चिक या शनि लग्न में हो और वह चन्द्र से दृष्ट हो।

क्रीडागृह, देवालय और मरुस्थल में प्रसव

यदि प्रसव किसी क्रीडागृह या स्टेडियम में हुआ हो तो उस समय लग्न में शनि जलचर राशि में स्थित और बुध से दृष्ट रहा होगा, ऐसा निश्चित है। जलचर राशि में स्थित शनि लग्न में रहता हुआ सूर्य से दृष्ट रहा होगा यदि प्रसव किसी देवालय या मन्दिर में हुआ हो। और, लग्न में शनि जलचर राशि में स्थित और चन्द्र से दृष्ट रहा होगा यदि प्रसव मरुस्थल या रेगिस्तान में हुआ हो।

श्मशान-प्रासाद-गाशालादिषु प्रसवः

7-10 इन्द्रवंशा

कुर्यात् सवं प्रेक्ष्य कुजो नरांगगं
पंगु श्मशाने भवि-धू मनोहरे ।
विच्छैल्पिके वाक्पतिरग्नि-होत्रके
भास्वान् सुरेलापति-गो-कुलेषु च ।।

मातृगृह-गोशाला-विजनेषु प्रसवः

7-11 इन्द्रवंशा

तात-प्रसू-वेश्मसु तद्बलात् तरु-
शालादिषूत्पत्तिरिहोत्तम-ग्रहैः ।
निम्नोपगैर् वांग-विधू न वीक्षिता-
वेकर्क्षगैस् तैर् विजने सवो भवेत् ।।

श्मशान, राजमहल, गोशाला आदि में प्रसव

जिस समय प्रसव श्मशान में हो रहा हो उस समय लग्न में नर राशि अर्थात् धनुष् का पूर्वार्ध, मिथुन, कन्या, तुला और कुम्भ होगी और उसमें स्थित शनि को मङ्गल देखता होगा। नर राशि का शनि लग्न में हो और उसको शुक्र और चन्द्र देखते हों तो जहां प्रसव होगा वह स्थान मनोहर होगा। यदि प्रसव शिल्प-शाला या वर्कशाप में हुआ हो तो उस समय लग्न में स्थित नर राशि के शनि को बुध देख रहा होगा। यदि अग्नि-शाला या यज्ञ-शाला में प्रसव हुआ हो तो उस समय नर राशि का शनि लग्न में रहा होगा और उसे गुरु देख रहा होगा। और यदि लग्न में स्थित नर राशि के शनि को सूर्य देख रहा हो तो प्रसव या तो देवालय में होगा या राजमहल में या गोशाला में।

ननिहाल, गोशाला, बियाबान में प्रसव

लग्न में यदि पितृ-ग्रह वलवान् हों तो पिता के घर में और मातृ-ग्रह वलवान् हों तो ननिहाल में प्रसव का योग होगा। शुभ ग्रहों के नीच राशि में होने की स्थिति में प्रसव या तो वृक्ष के नीचे होगा या गोशाला में होगा। और, यदि किसी बियाबान में प्रसव हुआ हो तो उस समय नीच-गत शुभ-ग्रह एक राशि में स्थित होकर लग्न और चन्द्र को नहीं देख रहे होंगे।

अष्टमः प्रकाशः

लग्न-कालिका ग्रह-स्थितयः प्रसूतिकागृहं च

8-1 इन्द्रवज्रा

दग्धं कुजे दिनकरे न दृढं सकाष्ठं
नेमौ नवं प्रसव-वेश्म बुधे विचित्रम् ।
वागीश्वरे बल-युते सुदृढं सितस्य
नव्यं मनोज्ञमिनजे सदनं पुराणम् ।।

प्रसूतिकागृहस्य दिशा

8-2 वसन्ततिलका

तद्वास्तुनीन्द्र-दिशि कर्क-तुलालि-कुम्भा-
जांगेषु पाशि-दिशि गोपति-भेथ सौम्ये ।
वागीश-बोधन-गृहे वसति प्रसूत्याः
पञ्चानने मृग-मुखे प्रवदेदपाच्याम् ।।

8-3 इन्द्रवंशा

द्वौ द्वौ च राशी क्रिय-भात् पुरंदरा-
द्याशासु कोणोपगता द्विरात्मकाः ।
यद् भं जनौ लग्नगमस्य या दिशा
तस्यां प्रसूत्याः शयनं समीरयेत् ।।

प्रसूतिकागृह

लग्न-कालीन ग्रह-स्थितियां और प्रसूतिकागृह

लग्न-कालीन ग्रह-स्थितियों से वह स्थान भी प्रभावित होता है जहां प्रसव होता है। उदाहरण के लिए प्रसव के समय विद्यमान सभी ग्रहों में सबसे अधिक बलवान् (1) मङ्गल हो तो प्रसूतिकागृह ऐसा मकान होगा जिसमें कभी आग लग चुकी हो, (2) सूर्य हो तो लकड़ी आदि से बने कमजोर घर में प्रसव होगा, (3) चन्द्र हो तो प्रसूतिका-गृह नव-निर्मित होगा, (4) बुध हो तो वह एक विचित्र ही प्रकार का हो सकता है, जैसे रंग-बिरंगे चित्रों, कलाकृतियों, पेड़-पौधों आदि से सुसज्जित, (5) गुरु हो तो प्रसव किसी मजबूत घर में होगा, (6) शुक्र हो तो प्रसूतिकागृह नव-निर्मित और मनोहर होगा, और (7) शनि हो तो प्रसव किसी पुराने मकान में होगा।

प्रसूतिकागृह की दिशा

लग्न-काल में कर्क, तुला, वृश्चिक, कुम्भ या मेष हो और उसका नवांश भी लग्न में हो तो प्रसव-कक्ष मकान की पूर्व दिशा में स्थित होगा; लग्न में वृष राशि और उसका नवांश हो तो वह कक्ष पश्चिम दिशा में होगा; गुरु की राशि अर्थात् मीन या धनुष्, या, बुध की राशि अर्थात् कन्या या मिथुन और उसका नवांश लग्न में हो तो प्रसव-कक्ष पूरे मकान के उत्तर में होगा; और यदि लग्न में सिंह या मकर और उसका नवांश हो तो वह कक्ष मकान में दक्षिण दिशा में होगा।

वास्तव में प्रत्येक दिशा की दो-दो और प्रत्येक उपदिशा की एक-एक राशि निश्चित है। इनमें से जो राशि प्रसव-कालीन लग्न में स्थित हो उसी की दिशा में प्रसूतिकागृह स्थित होगा। दिशाएं और उनकी राशियां अग्रलिखित हैं : पूर्व की मेष और वृष, पश्चिम की तुला और वृश्चिक, उत्तर की मकर और कुम्भ, दक्षिण की कर्क और सिंह, ईशान की मीन, आग्नेय की मिथुन, नैर्ऋत्य की कन्या और वायव्य की धनु।

प्रसूतिकागृह-द्वारस्य दिशा

8-4 प्रहर्षिणी

द्वारं प्राक् कुज-भवनाच् चतुष्टयस्थ-
खेटस्यैव दिशि शिशोर् जनुर् गृहस्य ।
वाशायां बल-सहितस्य खौकसो वा
होराया भ-दिशि वदन्ति हौरिकेन्द्राः ।।

प्रसूति-स्थानस्य विवरणम्

8-5 वसन्ततिलका

नीचाश्रितैर् गगनगैर भुवि संभवोन्त-
रिक्षेंगना-निमिष-काम-हयोदयेथ ।
सोमे सितर्क्ष-लवगे सलिलेम्बु-भांशे
यद् वै निवीक्षित-युते शयनं तमिस्त्रे ।।

प्रसूतिकागृहे दीपकस्य स्थितिः

8-6 इन्द्रवज्रा

यद्भे भगे तद्-दिशि दीपकस्य
स्थानं प्रसूत्याः सदनेथ मूर्तेः ।
आरम्भ-काले परिपूर्ण-वर्ति-
रर्धेह् मध्ये चरमेल्प-शेषा ।।

8-7 इन्द्रवज्रा

दीपश् चरो शिशिरगौ चर-भे द्वि-देहे
स्थान-द्वयेग-भवने कथितोग-दीपः ।
दीपश् चरश् चर-पुरे द्वि-पुरे करस्थः
स्व-स्थान-संस्थ उदितो हरिजेग-राशौ ।।

8-8 शालिनी

आद्ये त्र्यंशे तैल-पूर्णः प्रदीपो
मध्ये त्र्यंशेर्धोल्प इन्दौ तृतीये ।

प्रसूतिकागृह के द्वार की दिशा

जिस घर या कक्ष में प्रसव हुआ उसका द्वार किस दिशा में है, इस प्रश्न का उत्तर भी ग्रह-स्थिति के आधार पर दिया जा सकता है : जन्म-लग्न से केन्द्र में जो ग्रह हो उसकी दिशा में, या सबसे अधिक बलवान् ग्रह की दिशा में, या लग्न-राशि की दिशा में प्रसूतिकागृह का द्वार हुआ करता है।

प्रसूति-स्थान का विवरण

इसी प्रकार, नीच राशि में बहुत ग्रह हों तो प्रसव भूमि पर अर्थात् मकान के भूतल पर होगा; कन्या, मीन, मिथुन या धनुष् लग्न में हों तो अन्तरिक्ष अर्थात् मकान के पहले, दूसरे आदि तल में होगा; और, शनि की राशि और नवांश में स्थित चन्द्र चतुर्थ में हो, या जलचर राशि और उसके नवांश में स्थित चन्द्र शनि द्वारा दृष्ट हो तो प्रसव ऐसे स्थान पर हुआ होगा जहां अन्धकार हो।

प्रसूतिकागृह में दीपक की स्थिति

प्रसूतिकागृह में दीपक कहां, किस दिशा में, कितने स्थानों पर रखा होगा और उसमें बत्ती कितनी होगी, तेल कितना होगा, और उसे हवा के झोंके चञ्चल कर रहे होंगे या नहीं, इन प्रश्नों का भी उत्तर है। प्रसव-काल में जिस राशि में सूर्य हो उस राशि की दिशा में दीपक रखा होगा। प्रसव-काल में लग्न का आरम्भ हो तो दीपक में पूरी बत्ती होगी, लग्न का मध्य हो तो आधी बत्ती होगी और लग्न का अन्तिम भाग हो तो बत्ती थोड़ी होगी।

चर राशि में सूर्य हो तो दीपक चञ्चल होगा और लग्न में चर राशि हो तो भी वह चञ्चल होगा, किन्तु लग्न में स्थिर राशि हो तो दीपक भी स्थिर होगा। द्वि-स्वभाव राशि में सूर्य हो तो दीपक दो स्थानों में रखे गये होंगे, किन्तु स्थिर राशि में सूर्य हो तो एक ही दीपक होगा, जबकि लग्न में द्वि-स्वभाव राशि हो तो दीपक हाथ में लेकर ही दिखाया गया होगा।

चन्द्र प्रथम द्रेष्काण में हो तो दीपक में तेल पूरा होगा, मध्य द्रेष्काण में

ज्ञेया वर्तिर् लग्न-भर्तुर् वशेन
वर्णं[1] रूपं[2] तत्सभं वर्तिकायाः ॥

मातुर् वस्त्राणां भाण्डानां च वर्णाः
8-9 शालिनी

रक्तं शुभ्रं हारितं वारिदाभं
पीत-श्वेतं चित्र-कृष्णे प्रसूत्याः ।
स्वर्णाख्याभं पिंगलं कर्बुराभं
बभ्रुः स्वच्छं छागतो वास उक्तम् ॥

मातुर् वस्त्राणां भाण्डानां च प्रकारः
8-10 उपजातिः

अम्बाम्बरं लग्न-नवांशपाद् वा
पात्रं वदेत् ताम्र-मणी सुवर्णम् ।
स-युक्ति-शुक्ति रजतं च मुक्तां
लोहं बलोपेत-विकर्तनाद्यैः ॥

1. (आर्या) रक्तौ सूर्यात्रिजौ, श्वेतौ शशि-भार्गवौ विनिर्दिष्टौ। हरितः सौम्यो दिष्टो, जीवः पीतः शनिस् तथा कृष्णः ॥ (49) आर्या-सप्तत्यां भट्टोत्पलः ।

2. (आर्या) चतुरस्रोर्को भौमो, वृत्तः सुषिरेन्दुरिन्दुजो दीर्घः। दीर्घः सुतनुः शुक्रो, जीवः परिवर्तुलो ज्ञेयः॥ (50)। (आर्या) अतिसूक्ष्मो भृगु-तनयो, दीर्घः सुषिरान्तरोर्क-तनयः स्यात्। हृत-नष्टादौ प्रश्ने, द्रव्यं सबलाद् ग्रहात् प्रवदेत् ॥ (51) आर्या-सप्तत्यां भट्टोत्पलः। (अनुष्टुप्) स्थूल इन्दुः सितः षण्डश् चतुरस्रौ कुजोष्णगू। वर्तुलौ सौम्यधिषणौ, दीर्घौ शनि-भुजगमौ ॥ भुवन-दीपकम् ।

हो तो आधा और अल्प द्रेष्काण में हो तो तेल भी अल्प होगा। लग्नेश के अनुसार बत्ती भी दीपक में कम या अधिक होगी और उसका रंग-रूप भी लग्नेश के अनुरूप होगा।

माता के वस्त्रों और भाण्डों के रंग

प्रसूतिका अर्थात् नवजात शिशु की माता के वस्त्रों और भाण्डों या बर्तनों का रंग प्रसूतिकागृह में वही होगा जो प्रसव-कालीन राशि से संबद्ध होगा। बारहों राशियां और उनसे संबद्ध रंग क्रमशः अग्रलिखित हैं: मेष से लाल, वृष से सफेद, मिथुन से हरा, कर्क से बादलों-जैसा काला, सिंह से पीलापन लिये हुए सफेद, कन्या से रंग-बिरंगा, तुला से काला, वृश्चिक से सुनहला, धनुष् से पीला, मकर से चितकबरा, कुम्भ से नेवले के समान स्वच्छ और मीन से सफेद।

माता के वस्त्रों और भाण्डों के प्रकार

माता के वस्त्र प्रसूतिकागृह में उस राशि के नवांश के अनुरूप होंगे जो प्रसव-लग्न में हो। प्रसूतिकागृह में काम आने वाले बर्तन उस धातु के होंगे जो उस ग्रह के अनुरूप हो जो प्रसव-कालीन ग्रहों में सबसे अधिक बलवान् हो। सबसे अधिक बलवान्, सूर्य हो तो तांबे के बर्तन होंगे, चन्द्र हो तो चन्द्रकान्त मणि के, मङ्गल हो तो सोने के, बुध हो तो लाख और सीप के, गुरु हो तो चांदी के, शुक्र हो तो मोती के और शनि हो तो लोहे के।

नवमः प्रकाशः

प्रसव-काले नाल-वेष्टितः शिशुः

9-1 उपजातिः

साह्नौ शरीरे दुरितान्तरस्थे
वा दैत्य-दृष्टे कुज उद्गमस्थे ।
वारेक्षितेंगे मृदुगेथ पाप-
दृगाण-गात्रे जनितः सनालः ।।

शिशोर् नाल-वेष्टितं शरीरमवयवो वा

9-2 वसन्ततिलका

निर्याणपे घन-गते स-खलेहि-युक्ते
किं कण्टके प्रथमपे गुलिकाहि-युक्ते ।
यद् वा विनाशप-युतेथ कुज-त्रि-भागे
नीहारगौ खल-तनौ किमु सत्खगेन्द्रैः ।।

9-3 वसन्ततिलका

प्राप्त्यर्थगैः किमगुविन्मृदुगा विलग्न-
त्रिशेथ वा निजप-युक्त-तनु-त्रि-भागे।
नो लोकिते शुभकरैरहि-वेष्टितांगः
सोग्रे पुरे बहुल-पाप-ख-पान्थ-दृष्टे ।।

9-4 वसन्ततिलका

किं पन्नगाकच-युतेथ बहूग्र-दृष्टे
पापोदये भवति नाल-निवेष्टितांगः ।
कल्पे क्रिये गवि हरौ यदि तत्र सौरे
वारे भ-भाग-सदृशे वपुषीह तद्वत् ।।

प्रसव-कालीन शिशु की दशा

प्रसव-काल में नाल से लिपटा शिशु

भ्रूण का प्रसव जब होता है तब वह नाल से लिपटा रहता है, किन्तु कभी-कभी नहीं भी लिपटा रहता है। उसकी इस स्थिति का निर्धारण भी उसकी प्रसव-कालीन ग्रह-स्थिति के द्वारा होता है। ऐसी चार ग्रह-स्थितियां अग्रलिखित हैं : लग्न में राहु का होना और उसका पाप ग्रहों के अन्तराल में होना; लग्न में मङ्गल का होना और उसका राहु द्वारा दृष्ट होना; लग्न में शनि का होना और उसका मङ्गल द्वारा दृष्ट होना; और लग्न में पाप ग्रह के द्रेष्काण का होना।

शिशु का नाल से लिपटा शरीर या अवयव

कुछ ग्रह-स्थितियां और भी हैं जब प्रसव-काल में भ्रूण नाल से लिपटा होता है : (1) लग्न में अष्टमेश हो और वह पाप-युक्त और राहु-युक्त हो, (2) केन्द्र में लग्नेश हो और वह गुलिक तथा राहु से युक्त हो, (3) केन्द्र में लग्नेश हो और वह अष्टमेश से युक्त हो, (4) मङ्गल के द्रेष्काण में चन्द्र हो और पाप ग्रह की राशि का लग्न भी हो, (5) लाभ और द्वितीय में विद्यमान ग्रह शुभ हों, (6) लग्न-गत द्रेष्काण की राशि में राहु, बुध तथा शनि हों, (7) लग्न-गत द्रेष्काण अपने स्वामी से युक्त हो और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, (8) लग्न में पाप ग्रह हो और वह अनेक पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा राहु और केतु से युक्त हो, (9) लग्न में पाप ग्रह की राशि हो और वह अनेक पाप ग्रहों से दृष्ट हो। कभी-कभी भ्रूण का सारा शरीर नहीं बल्कि कोई एक अवयव ही नाल से लिपटा होता है क्योंकि उसकी लग्न में मेष, वृष या सिंह राशि और शनि या मङ्गल ग्रह होता है; इसलिए लग्न में जो राशि या जिस राशि का नवांश होता है वह राशि काल-पुरुष के जिस अङ्ग में हो, भ्रूण का वही अङ्ग या अवयव नाल से वेष्टित होता है।

नाल-वेष्टितं शिशु-युगलम्

9-5 उपजाति:

तुरीय-पादर्क्ष-गते पतंगे
बलैर् युतैः शेष-विहंगमेन्द्रैः ।
द्विरात्मकस्थैर् यमलौ भवेतां
जातौ शिशू कोश-निवेष्टितौ तौ ।।

लसुन-युक्तो, नाल-रहितो, विलोम-जातश् च शिशु:

9-6 इन्द्रवंशा

एकः खलोंगे हृदये खलः शिशुर्
नालांकितो वा लसुनांकितः कुजे ।
साच्छे विनालस् तपने स्व-निम्न-भे-
ऽजेन्त्ये यमेंगे विपरीत-संभवः ।।

शिरसा पद्भ्यां हस्ताभ्यां वा प्रसव:

9-7 अनुष्टुप्

मस्तकोदय-भैर् जन्म शिरसा जायते शिशोः ।
पद्भ्यां पृष्ठोदयैर् जन्म पाणिभ्यामुभयोदये ।।

प्रसव-काले शिशो: शिर: कस्यां दिशि पतिष्यति

9-8 वसन्ततिलका

कुम्भीरवे युवति-भे गवि याम्यमूर्धा
प्रत्यक्शिराः कलश-तौलि-नृ-युग्म-भेषु ।
पुष्पंधयानिमिष-कर्किषु सौम्य-मूर्धा
प्राची-शिरा हरि-हय-क्रिय-भेषु जातः ।।

प्रसव-काले शिशो रोदन-स्वर:

9-9 इन्द्रवंशा

उच्चैः शिशू रोदिति लेय-चापभृच्-
छाग-त्रयेष्वर्ध-रवेन योषिति ।

नाल से लिपटे युगल शिशु

युगल भ्रूण भी अलग-अलग नाल से लिपटे होते हैं क्योंकि उनकी लग्न में धनुष् का उत्तरार्ध और मकर का पूर्वार्ध, मेष, वृष और सिंह में से कोई एक, अर्थात् चतुष्पद राशि होती है और शेष बलवान् तो होते ही हैं, द्वि-स्वभाव राशि में भी स्थित होते हैं। दोनों भ्रूणों का एक ही नाल से लिपटा होना अस्वाभाविक स्थिति का सूचक होगा।

लहसुन-युक्त, नाल-रहित और विलोम-जात शिशु

लग्न और चतुर्थ में एक-एक पाप ग्रह हो तो भ्रूण प्रसव-काल में या तो नाल से लिपटा होगा या उसके शरीर में कहीं लहसुन होगा। प्रसव-काल में मङ्गल यदि शुक्र से युक्त हो तो भ्रूण नाल से लिपटा हुआ नहीं होगा। सूर्य अपनी नीच राशि में हो, चन्द्र व्यय में हो और शनि लग्न में हो तो शिशु विलोम-जात होगा अर्थात् गर्भ से वाहर वह पैरों की ओर से निकलेगा, न कि सामान्य रूप में सिर की ओर से।

सिर, पैरों या हाथों की ओर से प्रसव

प्रसव-कालीन लग्न में शीर्षोदय राशि हो तो प्रसव सिर की ओर से होगा, पृष्ठोदय राशि हो तो पैरों की ओर से प्रसव होगा, और उभयोदय अर्थात् मीन राशि हो तो हाथों की ओर से प्रसव होगा।

प्रसव होते ही शिशु का सिर किस दिशा में गिरेगा

सिर की ओर से प्रसव के समय भ्रूण का सिर उत्तर दिशा में गिरेगा यदि लग्न में वृश्चिक, मीन या कर्क राशि हो। दक्षिण में गिरेगा यदि लग्न में मकर, कन्या या वृष राशि हो। पूर्व दिशा में गिरेगा यदि लग्न में सिंह धनुष् या मेष राशि हो। और पश्चिम दिशा में गिरेगा यदि लग्न में कुम्भ, तुला या मिथुन राशि हो।

प्रसव-काल में शिशु के रोने के स्वर

प्रसव-काल में शिशु के रोने का स्वर ऊंचा होगा यदि सिंह, धनुष् और मेष से तीन अर्थात् मेष, वृष और मिथुन में चन्द्र या लग्न राशि हो। उसका स्वर मध्यम होगा यदि कन्या, कुम्भ और मकर में चन्द्र या लग्न

कुम्भे मृगेल्पं रुदनं धटे झषे
कीटे य इन्दूद्गमयोर् बली ततः ॥

सीमन्त-कर्मादिकं विनैव प्रसवः
9-10 उपजातिः
दुःस्थौ विधि-व्योम-विभू तनू-विभुर्
बली किमाये सति तद्गृहेथ वा ।
जातस् तदा प्राथमिकोपि पूरुषः
सीमन्त-कर्मादि विनैव जायते ॥

राशि हो। और, तुला, मीन और वृश्चिक में चन्द्र या लग्न राशि हो तो उसका स्वर नीचा होगा। वास्तव में, उसके रोने का स्वर नीचा या ऊंचा चन्द्र और लग्न में जो अधिक वलवान् हो उसके अनुरूप होगा।

सीमन्त कर्म आदि के विना ही प्रसव

लग्नेश और भाग्येश दोनों त्रिक (6/8/12) स्थान में हों और लग्नेश वलवान् हो तो, या, लाभ में पाप ग्रह या उसकी राशि हो तो, जिस शिशु का प्रसव होगा उसके सीमन्त कर्म आदि संस्कार नहीं हुए होंगे।

दशमः प्रकाशः

प्रसव-काले माता-पित्रोः कष्ट-योगः

10-1 प्रमाणिका

भगांशगे भगात्मजे भगेन वीक्षितेथ वा ।
कुजेक्षिते जनौ शिशोः पितामयेन संयुतः ।।

10-2 उपजातिः

मार-स्थयोर् मन्द-महीजयो रवेर्
यदा निषेको जनकस्य पञ्चता ।
तथामृतांशोर् जननी-मृतिर् मता
पुं-योषितावेकत आमर्यादितौ ।।

10-3 वसन्ततिलका

कोणारुणौ चर-भगौ कुज-युक्त-दृष्टौ
तज्जातकस्य जनकस्य मृतिर् विदेशे ।
पापौ पयःपथि-गतौ पुरपे बलोने
बालस्य जन्म-समये जनकः स-कष्टः ।।

10-4 वसन्ततिलका

याम्यान्त्यगावघ-खगौ घनतोथ चन्द्रात्
क्रूरे हितास्तमयगे निगदेज् जनन्याः ।
क्लेशं शुभैः शुभ-खगैः प्रसवः सुखेन
युक्तः खलैर् मति-वधू-विधिगैर् व्यथातः ।।

प्रसव-काले पितुर् बन्धन-योगः

10-5 वसन्ततिलका

दृष्टाः खलैः खल-खगाः खर-रश्मितोस्ते
तीर्थे मतावग-गृहे सवितुः स्वदेशे ।

प्रसव का फलाफल

प्रसव-काल में माता-पिता को कष्ट का योग

विभिन्न ग्रह-स्थितियों के अनुसार प्रसव-काल में कभी पिता, कभी माता, कभी दोनों, कभी नवजात शिशु और कभी तीनों कष्ट में पड़ सकते हैं। ऐसी कुछ ग्रह-स्थितियां अग्रलिखित हैं: (1) शनि सूर्य के नवांश में स्थित होकर सूर्य से या मङ्गल से दृष्ट हो तो पिता रोग-ग्रस्त होगा, (2) गर्भाधान-कालीन सूर्य से सप्तम स्थान में शनि और मङ्गल हों तो पिता की मृत्यु होगी, (3) चन्द्र से सप्तम स्थान में शनि और मङ्गल हों तो माता की मृत्यु होगी, (4) सूर्य से सप्तम में शनि और मङ्गल में से कोई एक ही हो तो पिता रोग-ग्रस्त होगा, (5) चन्द्र से सप्तम में शनि और मङ्गल में से कोई एक ही हो तो माता रोग-ग्रस्त होगी, (6) शनि और रवि चर राशि में स्थित होकर मङ्गल से युक्त और दृष्ट हों तो पिता का विदेश में मरण होगा, (7) चतुर्थ और नवम में दो पाप ग्रह हों और लग्नेश निर्बल हो तो प्रसव-काल में पिता को कष्ट होगा, (8) प्रसव-लग्न से अष्टम तथा व्यय में पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट होगा, (9) चन्द्र से चतुर्थ तथा सप्तम में पाप ग्रह हों तो भी माता को कष्ट होगा, (10) चतुर्थ और दशम में शुभ ग्रह हों तो प्रसव में कोई कष्ट नहीं होगा, (11) किन्तु, पंचम, सप्तम और नवम में पाप ग्रह हों तो प्रसव में कष्ट होगा; यह दूसरी बात है कि ऐसी ग्रह-स्थितियां सबकी सदा नहीं रहतीं।

प्रसव-काल में पिता के बन्धन का योग

स्थिर राशि में स्थित पाप ग्रह सूर्य से सप्तम, नवम तथा पञ्चम में हों और वे पाप ग्रह से दृष्ट हों तो पिता स्वदेश में ही किसी प्रकार के बन्धन में पड़ेगा। चर राशि में स्थित पाप ग्रह सूर्य से सप्तम, नवम

स्याद् बन्धनं चर-गृहे यदि तेन्य-देशे
ते चेद् द्वि-देह-भवने पथि बन्धनं स्यात् ॥

प्रसव-काले मातुः शिशोश् च मृत्यु-योगः

10-6 उपजातिः

ब्रध्नो विधुर् वा खल-खेट-मध्य-गस् त्वदृष्ट-देहः शुभ-खेचरैः किमु ।
सद्भिर् न दृष्टैर् दुरितैः स्मरांग-गैर् वांगेर्क-जे वा गलिते कलावति ॥

10-7 उपजातिः

धरा-ज-दृष्टेथ रवौ व्यये विधौ कृशेद्य-दृष्टे सलिलेचला-सुते ।
वोग्रान्तराले भृगु-नन्दनेथ वा होरा-द्युने स-क्षिति-जेथ विग्रहे ॥

10-8 उपजातिः

भास्वत्-समेते रजनी-करे कृशे-
थ वा कुजे किं दुरितैर् धनाक-गैः ।
चारु-ग्रहालोकन-वर्जितैस् तदा
सहाम्बया गर्भ उपैति पञ्चताम् ॥

प्रसव-कालिकाया ग्रह-स्थितेः माता-पित्रोर् मृत्यु-योगः

10-9 अनुष्टुप्

निषेकस्योदये पाप-व्योम-गैः प्रान्त्य-गेह-गैः ।
विर्वाजितैः शुभ-दृशा ललनाया मृतिं वदेत् ॥[1]

10-10 वंशस्थम्

मन्दासृजौ स्वान्त्य-गताविनाब्जयोर्
वैकेन दृष्टावपरेण संयुतौ ।
आदित्य-चन्द्राविह योग-कारक-
मध्ये बली तन्मृतिरस्य मासि यः ॥

10-11 उपजातिः

पीयूष-गौ प्रान्त्य-गते पतंगे निमीलने नीर इलात्म-जाते ।
शस्त्रेण पित्रोर् मरणं तु तत्र स्याद् बन्धनेनेन-सुतेन मृत्युः ॥

1. अशुभैर् द्वादशर्क्ष-स्थैः शुभ-दृष्टि-विर्वाजितैः । आधान-लग्ने मरणं योषितः प्रवदेद् बुधः ॥ जातकोत्तमम् ।

तथा पञ्चम हों और उन्हें पाप ग्रह देखते हों तो वह परदेश में वन्धन-ग्रस्त होगा। सूर्य के सप्तम, नवम तथा पञ्चम में द्वि-स्वभाव राशि के पाप ग्रह अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो पिता मार्ग में वन्धन-ग्रस्त होगा।

प्रसव-काल में माता और शिशु की मृत्यु का योग

प्रसव-काल में विभिन्न ग्रह-स्थितियों के प्रभाव से माता के साथ नवजात शिशु की भी मृत्यु हो सकती है। ऐसी ग्रह-स्थितियां अग्र-लिखित हैं : गर्भाधान-काल में (1) सूर्य और चन्द्र पाप-ग्रहों के अन्तराल में हों और शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों, (2) सप्तम और लग्न में पाप ग्रह हों और वे शुभ ग्रहों से दृष्ट भी न हों, (3) लग्न में शनि या क्षीण चन्द्र हो और वह मङ्गल से दृष्ट हो, (4) व्यय में सूर्य हो, क्षीण चन्द्र को पाप ग्रह देखता हो और चतुर्थ में मङ्गल हो, (5) शुक्र पाप ग्रहों के अन्तराल में हो, (6) लग्न और सप्तम में मङ्गल हो, (7) लग्न में सूर्य के साथ क्षीण चन्द्र हो या मङ्गल हो, (8)द्वादश और द्वितीय में पाप ग्रह हों और वे किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हों। ये ग्रह-स्थितियां कम ही वनती हैं।

प्रसव-कालीन ग्रह-स्थिति से माता-पिता की मृत्यु का योग

प्रसव-कालीन विभिन्न ग्रह-स्थितियों के प्रभाव से जव माता या पिता या दोनों की मृत्यु भी हो सकती हो ऐसी स्थितियां हैं : (1) गर्भाधान-कालीन लग्न से द्वादश स्थान में पाप ग्रह हों और वे किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हों तथा (2) सूर्य से द्वितीय और द्वादश में शनि और मङ्गल हों, अर्थात् शनि और मङ्गल के अन्तराल में सूर्य हो तो पिता की मृत्यु होगी, (3) चन्द्र में द्वितीय और द्वादश में शनि और मङ्गल हों, अर्थात् शनि और मङ्गल के अन्तराल में चन्द्र हो तो माता की मृत्यु होगी, (4) सूर्य शनि और मङ्गल के अन्तराल में हो और उन दोनों में से किसी एक से युक्त हो और दूसरे से दृष्ट हो तो पिता की मृत्यु होगी, (5) चन्द्र शनि और मङ्गल में से किसी एक से युक्त हो और दूसरे से दृष्ट हो तो माता की मृत्यु होगी, (6) उपर्युक्त योग-कारक ग्रहों में से जो अधिक वलवान् हो उसके मास में पिता या माता की मृत्यु होगी, (7) व्यय में चन्द्र, अष्टम में सूर्य और चतुर्थ में मङ्गल हो तो माता और पिता दोनों की मृत्यु होगी, (8) व्यय में चन्द्र, अष्टम में सूर्य और चतुर्थ में शनि हो तो माता और पिता की मृत्यु किसी वन्धन के कारण होगी।

विभिन्नाभ्यो ग्रह-स्थितिभ्यः शिशोः संबन्धिभ्यः शुभं फलम्

10-12 उपजातिः

क्रमाद् दिनेम्बा-पितरौ सितारुणौ
मृगांक-मन्दौ निशि तद्विलोमतः ।
मातुः स्वसा तात-सहोदरश् च
समौज-भ-स्थौ कथितौ तयोः शुभौ ।।

10-13 अनुष्टुप्

शस्तः पितुः पितृव्यस्य खगोंगाद् विषमर्क्षगः ।
समर्क्षगोम्बा-भगिन्याम्बयोस् तेष्वन्यथा परे ।।

ग्रह-स्थितीनां शुभाशुभ-फलस्य मात्रा-भेदः

10-14 अनुष्टुप्

पितृ-मातृ-ग्रहावादौ द्यु-निशोर् ददतुः फलम् ।
पूर्णमन्ते तयोस्-तुच्छं मध्यमे त्वनुपाततः ।।

गृह-कुण्डली जन्म-कुण्डली च

10-15 इन्द्रवंशा

इन्द्वर्क-भागे तलवाः कलीकृता
भास्वद्गताः खाभ्र-गजोद्धृताः फलम् ।
भाद्यं विलग्ने तलवा द्यु-यामिनी
मानघ्न-शून्याग्नि-हृता घटी-मुखम् ।।

विभिन्न ग्रह-स्थितियों से शिशु केसंबन्धियों को शुभ फल

गर्भाधान-कालीन और प्रसव-कालीन ग्रह-स्थितियों के इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि जिस शिशु का गर्भाधान या प्रसव दिन के समय हुआ हो उसकी माता शुक्र और पिता सूर्य होता है, और जिसका गर्भाधान या प्रसव रात्रि में हुआ हो उसकी माता चन्द्र और पिता शनि होता है; जिसका गर्भाधान या प्रसव दिन में हुआ हो उसकी मौसी चन्द्र और चाचा या ताऊ शनि होता है, और जिस शिशु का गर्भाधान या प्रसव रात्रि में हुआ हो उसकी मौसी शुक्र और चाचा या ताऊ सूर्य होता है। इस संवन्ध में विभिन्न ग्रह-स्थितियां अग्रलिखित हैं: (1) दिन में विषम राशि में स्थित सूर्य पिता को शुभ फल देता है, (2) रात्रि में विषम राशि में स्थित सूर्य चाचा या ताऊ को शुभ देता है, (3) दिन में सम राशि में स्थित शुक्र माता को शुभ फल देता है, (4) रात्रि में सम राशि में स्थित शुक्र मौसी को शुभ फल देता है, (5) रात्रि में विषम राशि में स्थित शनि पिता को शुभ फल देता है, (6) दिन में विषम राशि में स्थित शनि चाचा या ताऊ को शुभ फल देता है, (7) रात्रि में सम राशि में स्थित चन्द्र माता को शुभ फल देता है, (8) और दिन में सम राशि में स्थित चन्द्र मौसी को शुभ फल देता है। यदि ये ग्रह निर्दिष्ट राशि से विपरीत राशि में हों तो वे अशुभ फल देंगे।

ग्रह-स्थितियों के शुभाशुभ फल की मात्रा में अन्तर

पितृ-ग्रह और मातृ-ग्रह दिन और रात्रि के आरम्भ में पूर्ण फल देते हैं, अन्त में अल्प फल देते हैं और मध्य में मध्यम अर्थात् कुछ शुभ और कुछ अशुभ फल देते हैं।

गृह-कुण्डली और गर्भ-कुण्डली

जन्म-कालीन नक्षत्र और इष्ट घटी-आदि के साधन से जो कुण्डली वनती है वह प्रायः गृह-कुण्डली कहलाती है। उसमें जव पूर्वागत इष्ट समय के गोचर ग्रह भी संमिलित कर लिए जाते हैं तव वही गर्भ-कुण्डली कहलाने लगती है। उसके साधन की रीति परिशिष्ट तीन में सोदाहरण दी गयी है।

ग्रन्थकारेण उपसंहारः

स्व-पान्थ-नागांक-धरोन्मितेऽब्दे
मासे मधौ चन्द्र-तिथौ बुधाहे।
चिन्तामणिर् वै प्रसवादिको विन्-
मुदे मयाकारि मुकुन्द-नाम्ना ॥

संपादन-भावानुवाद-कारस्य निवेदनम्

तदिदं पुस्तकं भव्यं सद्भावेन यत्नतः।
संशोधन-परीवर्त-संवर्धन-नियोजितम् ॥
भूमिका-परिशिष्टादि-टिप्पणीभिरलंकृतम्।
संपादितम्-अमरेण गोपीलालेन शब्दशः ॥
तेनैव राष्ट्रभाषायां हिन्द्यां भावानुवादितम्।
प्रकाशितं सदा कुर्याज्ज्योतिर्विच्चित्त-रंजनम् ॥

ज्योतिर्-व्यन्तर-भावनामर-गृहे मेरौ कुलाद्रौ तथा
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे
शैले ये मनुजोत्तरे जिन-गृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥

परिशिष्ट

परिशिष्ट एक

गर्भाधान-लग्न से प्रसव-काल के ज्ञान का उदाहरण

(संदर्भ : श्लोक 6-1, पृष्ठ 85)

सामान्य भ्रूण का प्रसव गर्भाधान के समय से दसवें मास के किसी भी दिन किसी भी समय हो सकता है। इस दिन, समय आदि की भविष्यवाणी गर्भाधान-कालीन ग्रह-स्थिति के आधार पर की जाती है।

इसका एक नियम प्रस्तुत है : गर्भाधान के समय चन्द्र जिस द्वादशांश में स्थित हो उसमें जितनी संख्या का द्वादशांश विद्यमान हो उस द्वादशांशक से उतनी संख्या तक आगे जो राशि हो उसमें चन्द्र के आने पर दशम मास में प्रसव होगा।

इस नियम का एक उदाहरण प्रस्तुत है : मान लीजिए कि विक्रम संवत् 1856, शक संवत् 1721, चैत्र कृष्ण अमावस्या, मङ्गलवार, गर्भाधान-कालीन-इष्ट 37/50, स्पष्ट चन्द्र 11/18/2/48, गति 757/20 है और 6/21/37/12 गर्भाधान-कालीन लग्न है। अब प्रश्न यह है कि ऐसी स्थिति में प्रसव कब होगा। उत्तर अग्रलिखित है।

गर्भाधान के समय 11/18/2/48 मीन राशि के चन्द्र में अष्टम द्वादशांश विद्यमान है और सप्तम द्वादशांश गत है, अतः सप्तम द्वादशांश के प्रमाण 17/30/0 को राशि रहित चन्द्र के अंशादि में से घटाया तो शेष 0/32/48 बचे और उनमें 30 का गुणा किया तो गुणनफल 16/24/0 हुआ। इसमें भी 60 का गुणा किया तो 960 हुए और उनमें नीचे की कला 24, जोड़ी तो योगफल 984 हुआ। उसमें एक द्वादशांश की कला 150 का भाग दिया तो 6/33/36 भागफल आया जिसे अंशादि का प्रमाण कहा जाएगा।

अब, चन्द्र की राशि मीन से गत सप्तम द्वादशांश 6 को अंशादि के प्रमाण 6/33/36 के ऊपर स्थापित किया तो 6/6/33/36 हुआ जिसे प्रसव-कालीन स्पष्ट चन्द्र कहा जाएगा या फिर शेष अंशादि 0/32/48 को 12 से गुणित किया तो 6/33/36 अंशादि हुए जिनके ऊपर गत सप्तम द्वादशांश तुला की गत राशि 6 को स्थापित किया तो 6/6/33/36 प्रसव-कालीन स्पष्ट चन्द्र हुआ

जिसका अर्थ यह हुआ कि दसवें मास, पौष कृष्ण एकादशी, शुक्रवार को प्रसव होगा।

अब इष्ट काल के साधन में फिर वही गर्भाधान-कालीन स्पष्ट लग्न 6/21/37/12 लेना होगा। इसमें छह नवांश गत हैं, सातवां नवांश वर्तमान है, अतः राशि-रहित लग्न के अंशादि 21/37/12 में से छह नवांश में प्रमाण 20/0/0 घटाया तो 1/37/12 अंशादि शेष बचे। इनमें दिन-मान 24/56 का गुणा किया तो गुणनफल 40/23/31 हुआ, जिसे 60 से गुणित करने पर 2400 हुए और उनमें भी नीचे की 23 कला जोड़ने पर 2423 हुए। उनमें एक नवांश की कला 200 का भाग देने पर जो संख्या 12 आयी वह घटी की संख्या होगी।

उक्त भाग देने पर जो 23 शेष बच रहे उनमें 60 का गुणा किया तो 1380 हुए और उनमें नीचे की विकला 31 जोड़ी तो 1411 हुए। उनमें भाजक 200 का भाग दिया तो 7 आये जो पल की संख्या होगी।

इसका अर्थ यह हुआ कि स्पष्ट चन्द्र 6/6/33/36 इष्ट 12/7 होने पर प्रसव होगा। परंतु यहां इष्ट-काल 12/7 शनिवार के दिन का है, अतः उससे स्पष्ट चन्द्र चालित किया तो 6/17/37/8 स्पष्ट चन्द्र 12/7 इष्ट होने पर प्रसव होगा।

परिशिष्ट दो

गर्भाधान-लग्न या प्रश्न-लग्न से प्रसव-काल के ज्ञान का सोदाहरण मतान्तर

(संदर्भ : श्लोक 6-7, पृष्ठ 87)

गर्भाधान-कालीन और प्रश्न-कालीन, दोनों में से किसी के भी लग्न पर समान रूप से आधारित कुछ नियमों में से एक यह भी है कि गर्भाधान-काल या प्रश्न-काल की द्वादशांश कुण्डली में जिस राशि में चन्द्र हो उस राशि के चन्द्र में नौवें या दसवें मास में प्रसव होगा। इसका उदाहरण अग्रलिखित है।

प्रश्न किये जाने के समय दिन-मान 30/0 है, रात्रि-मान भी 30/0 है, स्पष्ट चन्द्र 4/10/25/35 है और स्पष्ट लग्न 3/8/12/30 है। चूंकि स्पष्ट चन्द्र 4/10/25/35 है अत: इष्ट-कालीन चन्द्र में द्वादशांश की गणना करने पर सिंह राशि के पांचवें द्वादशांश में चन्द्र हुआ, अर्थात् इष्ट-कालीन द्वादशांश कुण्डली में धनुष् राशि में चन्द्र हुआ। अब इष्ट-कालीन स्पष्ट चन्द्र में चूंकि पांचवां द्वादशांश वर्तमान है अतः चन्द्र के वर्तमान द्वादशांश धनुष् राशि से पांचवें क्रमांक की राशि मेष राशि में प्रसव होगा, अर्थात् आधान-काल से यथा-संभव नौवें या दसवें मास में जब चन्द्र मेष राशि में प्रवेश करेगा तब प्रसव होगा।

परिशिष्ट तीन

गर्भ-कुण्डली का साधन

(संदर्भ : श्लोक 10-15, पृष्ठ 113)

गृह-कुण्डली और गर्भ-कुण्डली

जन्म-कालीन नक्षत्र और इष्ट घटी-आदि के साधन से जो कुण्डली बनती है वह प्राय: गृह-कुण्डली कहलाती है। उसमें जब पूर्वागत इष्ट समय के गोचर ग्रह भी संमिलित कर लिये जाते हैं तब वही गर्भ-कुण्डली कहलाने लगती है। उसके साधन की रीति अग्रलिखित है :

गर्भ-कुण्डली के साधन की रीति

गर्भाधान-कालीन या प्रश्न-कालीन राशि रहित स्पष्ट चन्द्र के अंशादि में से गत द्वादशांश के अंशादि को घटाने पर शेष बचे वर्तमान द्वादशांश अंशादि को 60 से गुणित करने पर आये गुणनफल में कला की संख्या जोड़ने पर जो प्रमाण आएगा वह वर्तमान द्वादशांश के कलादि का प्रमाण होगा।

उस प्रमाण को 12 से गुणित करने पर आये गुणनफल में 800 का भाग देने पर जो भागफल होगा वह गत नक्षत्र की संख्या होगी, और जो शेष बचे उसमें 60 का गुणा करने पर आये गुणनफल में विकलाओं की संख्या जोड़कर 800 का भाग देने पर जो भागफल होगा वह घटी की संख्या होगी।

यह भाग देने पर जो संख्या शेष बचे उसमें भी 60 का गुणा करने पर आए गुणनफल में 800 का भाग देने से जो भागफल होगा वह पलों की संख्या होगी। इस प्रकार ज्ञात किये गये नक्षत्र आदि को गत द्वादशांश के नक्षत्र आदि में जोड़ने पर जन्म-कालीन नक्षत्र और उसके भुक्त धन्वादि होंगे।

गर्भाधान-लग्न या प्रश्न-काल के भुक्त अंशादि में दिन-मान या रात्रि-मान के घटी आदि का गुणा करना होगा, अर्थात्, अभीष्ट लग्न दिन-वली हो तो लग्न के भुक्त अंशादि को दिन-मान के घटी आदि से गुणित करना होगा और अभीष्ट लग्न रात्रि-वली हो तो लग्न भुक्त अंशादि को रात्रि-मान के घटी आदि से गुणित करना होगा। ऐसा करने पर जो गुणनफल आए उसमें 30 का भाग देने पर जो भागफल होगा वह घटी आदि इष्ट-काल होगा।

यदि लग्न के भुक्त अंशादि को रात्रि-मान से गुणित किया हो तो 30 का भाग देने पर जो भागफल अर्थात् घटी आदि हो उनको दिन-मान में जोड़ने पर रात्रि-प्रसव का इष्ट-काल होगा।

यदि अभीष्ट लग्न दिन-बली हो तो लग्न के भुक्त अंशादि को दिन-मान से गुणित करने पर आये गुणनफल को 30 से भाजित करने पर जो भागफल आए वह दिन-गत इष्ट-काल होगा।

उस घटी आदि इष्ट-काल से लग्न-साधन की पूर्वोक्त रीति द्वारा स्पष्ट लग्न का साधन करने पर जो प्रमाण आएगा वह जन्म-कालीन स्पष्ट लग्न होगा।

इसके पश्चात्, उस स्पष्ट लग्न की वर्तमान राशि से गृह-कुण्डली बनाकर उसमें पूर्वागत इष्ट समय के गोचर ग्रह समाविष्ट करने पर गृह-कुण्डली ही गर्भ-कुण्डली बन जाएगी।

गर्भ-कुण्डली के साधन का प्रथम उदाहरण

इसके पहले दिये गये उदाहरण के अनुसार इस उदाहरण में भी स्पष्ट चन्द्र 4/10/25/35 है। इसमें से राशि की संख्या, 4 अलग करने पर 10/25/35 अर्थात् दस अंश, पच्चीस कलाएं और पैंतीस विकलाएं बचीं। उनमें से चतुर्थगत द्वादशांश मान 10/0/0 घटाने पर जो शेष रहा, 0/25/35, वह वर्तमान पञ्चम द्वादशांश धनुष् राशि का भुक्तांशादि हुआ। कलाओं में परिवर्तित करने पर वह संख्या 25/35 हुई। उसमें 12 का गुणा करने पर 30/70 हुई और उसमें 800 का भाग देने पर भागफल शून्य आया अर्थात् नक्षत्र अभी कोई नहीं बीता है। मतलब यह कि सिंह राशि में पञ्चम धनुष् द्वादशांश है, जिससे पञ्चम मेष राशि है।

इष्टकाल तक मेष का एक नक्षत्र भी पूर्ण व्यतीत नहीं हुआ। इसलिए वर्तमान अश्विनी नक्षत्र हुआ। शेष कलादि को 60 से गुणित करने पर, $30/70 \times 60 = 18420$, आयी संख्या में 800 का भाग देने पर भागफल 23 हुआ जो अश्विनी नक्षत्र की बीती हुई घटियों की संख्या मानी जाएगी। उक्त भाग देने पर शेष 20 को 60 से गुणित और उसमें 800 का भाग देने पर, $20 \times 60 = 1200 \div 800$, आया भागफल 1 ही पल की संख्या माना जाएगा। फिर, शेष 400 में 60 का गुणा करने पर आये 24000 में 800 का भाग देने पर जो 30 भागफल आया वह विपलों की संख्या हुई। इस प्रकार अश्विनी नक्षत्र के उदय में 23 घटी 1 पल और 30 विपल बीत चुके हैं।

प्रश्न-कालीन राशि-आदि स्पष्ट लग्न 3/8/12/30 की वर्तमान राशि कर्क है। वह रात्रि-बली है अतः लग्न की तीन बीती हुई राशियों को छोड़कर बचे भुक्त

अंशादि 8/12/30 को, अभीष्ट कर्कलग्न रात्रि-वली होने के कारण इष्ट दिन के रात्रि-मान 30/0 से गुणित करने पर आये 246/15/0 में 30 का भाग देने पर भागफल 8/12/30 होगा जो रात्रि का इष्टकाल कहा जाएगा। दिन-मान 30/0 में रात्रि-गत घटी-आदि 8/12/30 जोड़ने पर जो 38/12/30 हुआ वही इष्ट काल हुआ। उसी से स्पष्ट लग्न-साधन की रीति से लग्न-साधन करने पर आया 7/18/37/30 गर्भ-कुण्डली का राशि-आदि लग्न हुआ।

इष्ट लग्न अर्थात् वृश्चिक की कुण्डली वनाकर इष्ट-कालीन ग्रह लग्न-कुण्डली में समाविष्ट किये जाने पर वही गर्भ-कुण्डली वन जाएगी।

गर्भ-कुण्डली के साधन का द्वितीय उदाहरण

प्रसव कब होगा, इस प्रश्न का इष्ट समय संवत् 1870 भाद्रपद कृष्ण 13, मङ्गलवार की 9/1 घटी आदि मान लें। तदनुसार स्पष्ट सूर्य 4/9/12/17, स्पष्ट चन्द्र 3/15/52/31 और स्पष्ट लग्न 5/27/7/20 होगी।

अव इष्ट-कालीन स्पष्ट चन्द्र 3/15/52/31 में, सातवां द्वादशांश वर्तमान होने से कर्क से गणना करने पर सातवीं राशि मकर हुई जिसमें चन्द्र के आने पर नौवें या दसवें मास में प्रसव होगा।

स्पष्ट चन्द्र 3/15/52/31 में से गत षष्ठ द्वादशांश का मान 15/0/0 अर्थात् अंशादि घटाया तो 0/52/31 वचे जो अंशादि का प्रमाण हुआ। इनकी कला 52/31 में एक राशि की कला 1800 का गुणा करने पर आये 93632/30 में द्वादशांश की कला 150 से भाग देने पर जो भागफल 624/13 हुआ उसीको नक्षत्र का काल-पिण्ड कहेंगे। यह काल-पिण्ड एक नक्षत्र की कलाओं अर्थात् 800 से कम है अत: उसमें से उसके तीन चरणों की कला अर्थात् 600 घटाने पर जो 24/13 शेष बचे वे ही चतुर्थ चरण के वीते हुए कला आदि हुए। इसीलिए यह कहा जा सकता है कि मकर राशि के चन्द्र में अर्थात् उत्तराषाढा के तीन चरण वीत चुकने पर श्रवण के प्रथम चरण में प्रसव होगा।

अव, स्पष्ट लग्न 5/27/7/20 में नवम नवांश कन्या वर्तमान है, और यह कन्या राशि चूंकि दिन-वली है अत: कहा जाएगा कि प्रसव दिन में होगा, रात्रि में नहीं। फिर लग्न की राशि, 5 को छोड़कर जो अंशादि 27/7/20 बचे उनमें से वीते हुए अष्टम नवांश का प्रमाण 26/40/0 घटाने पर जो 0/27/20 बचे वे अंशादि कहे जाएंगे। कन्या लग्न के दिन-वली होने से दिन-मान 31/58 का उक्त अंशादि 27/20 में गुणा करने पर आये 873/45 में कला के एक चरण अर्थात् 200 का भाग देने पर जो 4/22 भागफल आएगा वही सूर्योदय से गत घटी आदि इष्टकाल माना जाएगा।

इस गणित के आधार पर कहा जाएगा कि प्रसव के समय अग्रलिखित ग्रह-स्थिति होगी : 1870 मार्गशीर्ष शुक्ल पञ्चमी, रविवार, इष्ट घटी आदि 4/22, स्पष्ट लग्न 8/7/0/0, वृश्चिकार्क गतांशादि 14/22/24, वृश्चिक में सूर्य, मकर में चन्द्र, कुम्भ में मङ्गल, धनु में बुध, सिंह में गुरु, धनुष् में शुक्र और शनि, कर्क में राहु, मकर में केतु और धनुष् लग्न।

गर्भ-कुण्डली के साधन का तृतीय उदाहरण

संवत् 1968 आषाढ शुक्ल एकादशी, सोमवार, इष्ट घटी-आदि 33/44, दिन-मान 33/38, ज्येष्ठा की भुक्त घटी आदि 60/5, सर्वर्क्ष घटी आदि 67/15, ज्येष्ठा की स्पष्ट भुक्त घटी आदि 53/21 मान लें और उससे 'ख-षड्-घ्नं भयातम्' इत्यादि श्लोक में बतायी गयी रीति से स्पष्ट चन्द्र का साधन करें तो राशि आदि स्पष्ट चन्द्र 7/28/31/26 होगा। यहां चन्द्र तुला के द्वादशांश में है अत: चित्रा के आधा बीत चुकने पर तुला के चन्द्र में प्रसव होगा।

तत्काल स्पष्ट सूर्य 3/19/5/54 है। इससे 'तत्कालार्कः सायन' इत्यादि श्लोक में निर्दिष्ट रीति द्वारा साधन करने पर 9/19/5/54 स्पष्ट लग्न हुआ, और उसमें चूंकि षष्ठ नवांश वर्तमान है अत: गर्भाधान-काल से इष्ट-काल तक छह मास ही हुए, अर्थात् शुक्र की भांति अति मन्द होने से छठा मास चल रहा और चार मास बाद मार्गशीर्ष में प्रसव होगा, ऐसा कहना चाहिए।

इस संदर्भ में, प्रश्न-काल में मकर लग्न है जिसके रात्रि-बली होने से, 'रात्रि-द्यु-संज्ञेषु (द्यु-रात्रि-संज्ञेषु) विलोम जन्म' इत्यादि श्लोक में प्रतिपादित नियम से दिन में प्रसव होगा।

दिन-मान 33/38 में 30 का भाग देने पर भागफल एक घटी सात पल अर्थात् 67 पल हुए जिनमें स्पष्ट लग्न के भुक्त अंशादि 19/5/54 का गुणा किया तो 1277 पल हुए। इनमें 60 का भाग देने पर 21 घटी 17 पल हुए। उनको रात्रि-मान घटी आदि 26/19 में से घटाया तो 5/2 घटी-आदि शेष रहे।

अत: कहा जाएगा कि प्रसव-काल में अग्रलिखित ग्रह-स्थिति होगी : संवत् 1968 मार्गशीर्ष कृष्ण 13, शनिवार, सूर्योदय काल से इष्ट घटी-आदि 5/2, धनुष् लग्न, वृश्चिक में रवि, तुला में चन्द्र, वृष में मङ्गल, वृश्चिक में बुध, वृश्चिक में गुरु, कन्या में शुक्र, मेष में शनि, मेष में राहु और तुला में केतु।

परिशिष्ट चार

तालिकाएं

1

प्रश्न-काल या गर्भाधान-काल से प्रसव-कालीन ग्रह-स्थिति का ज्ञान स्पष्ट चन्द्र से

राशि	अंश	कला	विकला	नक्षत्र	घटी	पल	विपल
0	0	0	0	अश्विनी	0	0	0
0	2	30	0	मृगशिरा	30	0	0
0	5	0	0	मघा	0	0	0
0	7	30	0	चित्रा	30	0	0
0	10	0	0	मूल	0	0	0
0	12	30	0	धनिष्ठा	30	0	0
0	15	0	0	अश्विनी	0	0	0
0	17	30	0	मृगशिरा	30	0	0
0	20	0	0	मघा	0	0	0
0	22	30	0	चित्रा	30	0	0
0	25	0	0	मूल	0	0	0
0	27	30	0	धनिष्ठा	30	0	0
1	0	0	0	कृत्तिका	15	0	0
1	2	30	0	पुनर्वसु	45	0	0
1	5	0	0	उत्तराफा.	15	0	0
1	7	30	0	विशाखा	45	0	0
1	10	0	0	उत्तराषा.	15	0	0
1	12	30	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
1	15	0	0	कृत्तिका	15	0	0
1	17	30	0	पुनर्वसु	45	0	0
1	20	0	0	उत्तराफा.	15	0	0
1	22	30	0	विशाखा	45	0	0

राशि	अंश	कला	विकला	नक्षत्र	घटी	पल	विपल
1	25	0	0	उत्तराषा.	15	0	0
1	27	30	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
2	0	0	0	मृगशिरा	30	0	0
2	2	30	0	मघा	0	0	0
2	5	0	0	चित्रा	30	0	0
2	7	30	0	मूल	0	0	0
2	10	0	0	धनिष्ठा	30	0	0
2	12	30	0	अश्विनी	0	0	0
2	15	0	0	मृगशिरा	30	0	0
2	17	30	0	मघा	0	0	0
2	20	0	0	चित्रा	30	0	0
2	22	30	0	मूल	0	0	0
2	25	0	0	धनिष्ठा	30	0	0
2	27	30	0	अश्विनी	0	0	0
3	0	0	0	पुनर्वसु	45	0	0
3	2	30	0	उत्तराफा.	15	0	0
3	5	0	0	विशाखा	45	0	0
3	7	30	0	उत्तराषा.	15	0	0
3	10	0	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
3	12	30	0	कृत्तिका	15	0	0
3	15	0	0	पुनर्वसु	45	0	0
3	17	30	0	उत्तराफा.	15	0	0
3	20	0	0	विशाखा	45	0	0
3	22	30	0	उत्तराषा.	15	0	0
3	25	0	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
3	27	30	0	कृत्तिका	15	0	0
4	0	0	0	मघा	0	0	0
4	2	30	0	चित्रा	30	0	0
4	5	0	0	मूल	0	0	0
4	7	30	0	धनिष्ठा	30	0	0
4	10	0	0	अश्विनी	0	0	0
4	12	30	0	मृगशिरा	30	0	0

राशि	अंश	कला	विकला	नक्षत्र	घटी	पल	विपल
4	15	0	0	मघा	0	0	0
4	17	30	0	चित्रा	30	0	0
4	20	0	0	मूल	0	0	0
4	22	30	0	धनुष्	30	0	0
4	25	0	0	अश्विनी	0	0	0
4	27	30	0	मृगशिरा	30	0	0
5	0	0	0	उत्तराफा.	15	0	0
5	2	30	0	विशाखा	45	0	0
5	5	0	0	उत्तराषा.	15	0	0
5	7	30	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
5	10	0	0	कृत्तिका	15	0	0
5	12	30	0	पुनर्वसु	45	0	0
5	15	0	0	उत्तराफा.	15	0	0
5	17	30	0	विशाखा	45	0	0
5	20	0	0	उत्तराषा.	15	0	0
5	22	30	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
5	25	0	0	कृत्तिका	15	0	0
5	27	30	0	पुनर्वसु	45	0	0
6	0	0	0	चित्रा	30	0	0
6	2	30	0	मूल	0	0	0
6	5	0	0	धनिष्ठा	30	0	0
6	7	30	0	अश्विनी	0	0	0
6	10	0	0	मृगशिरा	30	0	0
6	12	30	0	मघा	0	0	0
6	15	0	0	चित्रा	30	0	0
6	17	30	0	मूल	0	0	0
6	20	0	0	धनिष्ठा	30	0	0
6	22	30	0	अश्विनी	0	0	0
6	25	0	0	मृगशिरा	30	0	0
6	27	30	0	मघा	0	0	0
7	0	0	0	विशाखा	45	0	0
7	2	30	0	उत्तराषा.	15	0	0

राशि	अंश	कला	विकला	नक्षत्र	घटी	पल	विपल
7	5	0	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
7	7	30	5	कृत्तिका	15	0	0
7	10	0	0	पुनर्वसु	45	0	0
7	12	30	0	उत्तराफा.	15	0	0
7	15	0	0	विशाखा	45	0	0
7	17	30	0	उत्तराषा.	15	0	0
7	20	0	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
7	22	30	0	कृत्तिका	15	0	0
7	25	0	0	पुनर्वसु	45	0	0
7	27	30	0	उत्तराफा.	15	0	0
8	0	0	0	मूल	0	0	0
8	2	30	0	धनिष्ठा	30	0	0
8	5	0	0	अश्विनी	0	0	0
8	7	30	0	मृगशिरा	30	0	0
8	10	0	0	मघा	0	0	0
8	12	30	0	चित्रा	30	0	0
8	15	0	0	मूल	0	0	0
8	17	30	0	धनिष्ठा	30	0	0
8	20	0	0	अश्विनी	0	0	0
8	22	30	0	मृगशिरा	30	0	0
8	25	0	0	मघा	0	0	0
8	27	30	0	चित्रा	30	0	0
9	0	0	0	उत्तराषा.	15	0	0
9	2	30	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
9	5	0	0	कृत्तिका	15	0	0
9	7	30	0	पुनर्वसु	45	0	0
9	10	0	0	उत्तराफा.	15	0	0
9	12	30	0	विशाखा	45	0	0
9	15	0	0	उत्तराषा.	15	0	0
9	17	30	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
9	20	0	0	कृत्तिका	15	0	0
9	22	30	0	पुनर्वसु	45	0	0

राशि	अंश	कला	विकला	नक्षत्र	घटी	पल	विपल
9	25	0	0	उत्तराफा.	15	0	0
9	27	30	0	विशाखा	45	0	0
10	0	0	0	धनिष्ठा	30	0	0
10	2	30	0	अश्विनी	0	0	0
10	5	0	0	मृगशिरा	30	0	0
10	7	30	0	मघा	0	0	0
10	10	0	0	चित्रा	30	0	0
10	12	30	0	मूल	0	0	0
10	15	0	0	धनिष्ठा	30	0	0
10	17	30	0	अश्विनी	0	0	0
10	20	0	0	मृगशिरा	30	0	0
10	22	30	0	मघा	0	0	0
10	25	0	0	चित्रा	30	0	0
10	27	30	0	मूल	0	0	0
11	0	0	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
11	2	30	0	कृत्तिका	15	0	0
11	5	0	0	पुनर्वसु	45	0	0
11	7	30	0	उत्तराफा.	15	0	0
11	10	0	0	विशाखा	45	0	0
11	12	30	0	उत्तराषा.	15	0	0
11	15	0	0	पूर्वाभाद्र.	45	0	0
11	17	30	0	कृत्तिका	15	0	0
11	20	0	0	पुनर्वसु	45	0	0
11	22	30	0	उत्तराफा.	15	0	0
11	25	0	0	विशाखा	45	0	0
11	27	30	0	उत्तराषा.	15	0	0

2

चन्द्र की कलाओं (बीते हुए द्वादशांशों से रहित) का फल

कला	नक्षत्र	घटी	पल	कला	नक्षत्र	घटी	पल
0	0	0	0	25	0	22	30
1	0	0	54	26	0	23	24
2	0	1	48	27	0	24	18
3	0	2	42	28	0	25	12
4	0	3	36	29	0	26	6
5	0	4	30	30	0	27	0
6	0	5	24	31	0	27	54
7	0	6	18	32	0	28	48
8	0	7	12	33	0	29	42
9	0	8	6	34	0	30	36
10	0	9	0	35	0	31	30
11	0	9	54	36	0	32	24
12	0	10	48	37	0	33	18
13	0	11	42	38	0	34	12
14	0	12	36	39	0	35	6
15	0	13	30	40	0	36	0
16	0	14	24	41	0	36	54
17	0	15	18	42	0	37	48
18	0	16	12	43	0	38	42
19	0	17	6	44	0	39	36
20	0	18	0	45	0	40	30
21	0	18	54	46	0	41	24
22	0	19	48	47	0	42	18
23	0	20	42	48	0	43	12
24	0	21	36	49	0	44	6

कला	नक्षत्र	घटी	पल
50	0	45	0
51	0	45	54
52	0	46	48
53	0	47	42
54	0	48	36
55	0	49	30
56	0	50	24
57	0	51	18
58	0	52	12
59	0	53	6
60	0	54	0
61	0	54	54
62	0	55	48
63	0	56	42
64	0	57	36
65	0	58	30
66	0	59	24
67	1	0	18
68	1	1	12
69	1	2	6
70	1	3	0
71	1	3	54
72	1	4	48
73	1	5	42
74	1	6	36
75	1	7	30
76	1	8	24
77	1	9	18
78	1	10	12
79	1	11	6
80	1	12	0

कला	नक्षत्र	घटी	पल
81	1	12	54
82	1	13	48
83	1	14	42
84	1	15	36
85	1	16	30
86	1	17	24
87	1	18	18
88	1	19	12
89	1	20	6
90	1	21	0
91	1	21	54
92	1	22	48
93	1	23	42
94	1	24	36
95	1	25	30
96	1	26	24
97	1	27	18
98	1	28	12
99	1	29	6
100	1	30	0
101	1	30	54
102	1	31	48
103	1	32	42
104	1	33	36
105	1	34	30
106	1	35	24
107	1	36	18
108	1	37	12
109	1	38	6
110	1	39	0
111	1	39	54

कला	नक्षत्र	घटी	पल	कला	नक्षत्र	घटी	पल
112	1	40	48	132	1	58	48
113	1	41	42	133	1	59	42
114	1	42	36	134	2	0	36
115	1	43	30	135	2	1	30
116	1	44	24	136	2	2	24
117	1	45	18	137	2	3	18
118	1	46	12	138	2	4	12
119	1	47	6	139	2	5	6
120	1	48	0	140	2	6	0
121	1	48	54	141	2	6	54
122	1	49	48	142	2	7	48
123	1	50	42	143	2	8	42
124	1	51	36	144	2	9	36
125	1	52	30	145	2	10	30
126	1	53	24	146	2	11	24
127	1	54	18	147	2	12	18
128	1	55	12	148	2	13	12
129	1	56	6	149	2	14	6
130	1	57	0	150	2	15	0
131	1	57	54				

3

चन्द्र की विकलाओं (बीते हुए द्वादशांशों से रहित) का फल

विकला	पल	विपल	विकला	पल	विपल
0	0	0	30	27	0
1	0	54	31	27	54
2	1	48	32	28	48
3	2	42	33	29	42
4	3	36	34	30	36
5	4	30	35	31	30
6	5	24	36	32	24
7	6	18	37	33	18
8	7	12	38	34	12
9	8	6	39	35	6
10	9	0	40	36	0
11	9	54	41	36	54
12	10	48	42	37	48
13	11	42	43	38	42
14	12	36	44	39	36
15	13	30	45	40	30
16	14	24	46	41	24
17	15	18	47	42	18
18	16	12	48	43	12
19	17	6	49	44	6
20	18	0	50	45	0
21	18	54	51	45	54
22	19	48	52	46	48
23	20	42	53	47	42
24	21	36	54	48	36
25	22	30	55	49	30
26	23	24	56	50	24
27	24	18	57	51	18
28	25	12	58	52	12
29	26	6	59	53	6

उपर्युक्त तालिकाओं का सोदाहरण स्पष्टीकरण

प्रश्न-कालीन या आधान-कालीन स्पष्ट चन्द्र में से तालिकोक्त आसन्न न्यून अर्थात् निकटतम कम स्पष्ट चन्द्र घटाने से जो शेष बचे वे कलादि होंगे। फिर आसन्न न्यून स्पष्ट चन्द्र के नक्षत्र की संख्या में और उसकी बीती हुई घटी आदि की संख्याओं में शेष कला-तुल्य कला-कोष्ठ (कॉलम) के नक्षत्रादि जोड़े जाएंगे और शेष विकला-तुल्य विकला-कोष्ठ के पलादि जोड़े जाएंगे, इससे प्रसव-कालीन नक्षत्र और उसके स्पष्ट भुक्त घटी आदि निकलेंगे। उदाहरण : प्रश्न-कालीन स्पष्ट चन्द्र 4/10/25/35 में से तालिकोक्त आसन्न न्यून स्पष्ट चन्द्र 4/10/0/0 घटाने से शेष बचे 0/0/25/35 अर्थात् 25 कलाएं और 35 विकलाएं। फिर आसन्न न्यून स्पष्ट चन्द्र 4/10/0/0 के नक्षत्र, अश्विनी की संख्या 1 में और उसकी बीती हुई घटी आदि की संख्या 0/0/0 में शेष कला 25 कला-कोष्ठ के नक्षत्रादि 0/22/30 जोड़े और शेष विकला 35 विकला-कोष्ठ के पलादि 31/30 जोड़े, जिससे प्रसव-कालीन अश्विनी नक्षत्र के स्पष्ट भुक्त घटी आदि 23/1/30 निकले।

परिशिष्ट पांच

श्लोकों की वर्णानुक्रम से सूची

(अंक पृष्ठ का है । काला अंक वाले श्लोक पाद-टिप्पणी में हैं ।)

अच्छाननां	28
अतिसूक्ष्मो	**100**
अथाहमा	**44**
अनुयोगे	88
अनुयोगो	78
अन्यथा	**72**
अम्वाम्वरं	100
अस्ते शुभ	**30**
आचार्य	44
आद्या निषेक	60
आद्ये तु	**50**
आद्ये त्र्यंशे	98
आद्यं रजः	**28**
आधान-काले	70
आधान-तन्वास्	44
आधान-देहाद्	84
आधान-पौरे	52
आधान-मूर्तेर्	68
आधान-लग्नाद्	**52**
आधाने प्रश्न	**88**
आधानेर्को	52
आधानेर्थ	**61**
आधानो	66
आधानोदय	**56**
आधानं जनि	88
आधानं यदि	**54**
आर-दिवा	**61**
आर्तवस्यैव	28
इन्द्वर्क	112
ईयाद्	**44**
उच्चैः शिशू	104
उदयति	**88**
उदयोप	**61**
उदेति	**56**
उपचय-गृह	38
उपचय-भ	**35**
ऋतूदयात्	32
एकस्य	58
एकैकेन	**35**
एकः खलोंगे	104
एते प्राक्	40
एवं भवत्या	30
एवं यद्	**30**
एवं योगैश्	**39**
कर्कालि	**58**
कललं	**50**
कल्याण	30
काये किमर्के	52
काव्य-ज्ञो	74
किं गुर्विण्या	78
किं नष्ट	80
किं पन्नगा	102
किं भाग्य	80
कुजेक्षिते	30
कुम्भीरव	104
कुर्यात्	94
कोणाप्ति	70
कोणारुणौ	108
कोणः कामे	**46**
कोमलं	36

क्रमाद् दिने	112	तत्काले	56
खगोदयात्	64	तत्काले	86
गर्भ-प्रसव	56	तत्कालेन्दु	86
गर्भ-सूति	54	तत्कालेन्दु	88
गर्भस्थ	50	तत्कालं	86
गर्भाधाने	52	तदिदं	114
गर्भाधाने	52	तद्द्वाय	70
गर्भाप्ति	42	तद्वास्तु	96
गुणकारै	61	तद्-राशि	86
गुणयित्वै	61	तमस्विनी	86
गुर्वर्कयोश्	63	तात-प्रसू	94
गुर्वर्का	38	तिथेर्	60
गोजाश्वि	84	तिथौ त्रीणि	60
ग्रह-गुण	61	तुंगस्थो	76
ग्रहोद्	64	तुरीय	104
ग्लौ-दृष्ट	42	तृतीये	34
चतुरस्रो	100	तेनैव	114
चतुर्दश्य	31	तोयोदयं	92
चन्द्रे कुजेन	35	त्यजेद् भद्रां	30
चन्द्रेंगे	62	दग्धं कुजे	96
चन्द्रे स्त्रियो	32	दीपश् चरो	98
चेत् प्राक्	38	दुःस्थौ विधि	106
जननी	34	दृष्टाः खलैः	108
जनौ जलेरौ	46	दृष्टौ न	82
जन्म-काल	60	दृष्टौ मही	80
जन्मांगान्	42	दैवेग	58
जात्यं मनो	34	द्यूनं ततो	80
जायोदया	48	द्वारं प्राक्	98
जीवादित्यौ	75	द्वि-पदा	30
जीवेनौ	79	द्वौ द्वौ च	96
जैवातृके	62	द्व्यंगांश	64
ज्योतिर्	114	द्व्यंगे	62
तत्काल	86	धनुर्	62
तत्काल	86	धरा-ज	110
तत्कालमिन्दु	87	धीशस्य	70

धीशेज्य	68	पुंभे तमो	74
नखाहता	82	पुं-भे पुरे	66
नारी-निकेते	90	पुं-वर्गे	74
नारी-पुंसोर्	78	पुं-राशिगौ	73
नालोकिते	90	पूर्वाह्णे	76
निधाय	25	पूर्वाह्न	76
निर्याणपे	102	पोष्ये पुत्रे	56
निषेक	72	प्रज्ञा-स्थाने	56
निषेक	84	प्रश्न-काले	86
निषेक-कालें	56	प्रश्ने यद्भे	56
निषेकतो	57	प्रश्ने वारौ	78
निषेक-लग्नाद्	54	प्रश्नोद्	60
निषेक-लग्नाद्	85	प्रष्टोच्चरेत्	76
निषेकस्यो	110	प्रसूति	26
निषेकांग	54	प्राप्त्यर्थगै:	102
निषेकोदय	52	फल-विभाग	26
नीचाश्रितैर्	98	बन्ध्यार्कि	58
नीचाश्रितैस्	44	बुध-चन्द्रौ	81
नीचे त्रिके	44	ब्रघ्नो विधुर्	110
नीहार	84	भगांशगे	108
पंगुः प्राप्ति	66	भद्रा-निद्रा	28
पंचम	67	भास्वत्	110
पत्नेश	78	भास्वद्	80
पय: शशांको	20	भूमिका	114
पश्यन्तौ	76	मन्दासृजौ	110
पाप्यब्जयो:	58	मस्तकोदय	104
पितृ-मातृ	112	मारस्थयोर्	108
पीयूषगौ	92	मार्ग-स्थितस्य	90
पीयूष-गौ	110	मार्गे जनिर्	90
पुत्न-प्रदं	68	माल्यानु	28
पुत्नोल्पायुर्	32	मास-लक्षण	60
पुरुष	72	मासस्य	58
पुरुषोप	32	मासेंक	52
पुष्पोज्झिता	46	मुख्यानि	40
पुं-ग्रहे	72	मृत्यौ बली	48

मैत्रेन्द्विना	28	रवि-गुरु	73
यत्र स्थितस्	56	रात्रिन्दिन	86
यदा निषेको	54	लग्नस्थो	31
यदा निषेको	88	लग्नेन्द्वोर्	86
यदि पुरुष	38	लग्नेन्द्वोर्	86
यदुन्मितो	58	लग्नेशकास्	60
यदैक	84	शस्तः पितुः	112
यदोदये	64	शीघ्रोल्प	67
यद्भे	42	शीत-द्युतेः	56
यद्भे भगे	98	शीतांशू	50
यद् भं	68	श्रुति-त्रय	28
यद्वत्सरे	42	षष्ठे त्वसृग्	50
यस्मिन्	42	षष्ठेथ	50
यस्मिन्	68	सत्-संख्यक	56
यस्मिन्	84	संतान	44
यस्य मासा	59	संतान-भावो	46
याते सुरे	70	संतानाप्तेर्	40
याम्यान्त्य	108	समन्वितौ	40
यावत्	84	सम-राशि	73
युग्म-राश्यु	74	सम-राशि	81
युग्मर्क्षगास्	78	समास	60
युवत्या	80	सवारि	92
यो गर्भाव	25	सर्वासां	26
यो मूर्ति	86	सार्के यमे	46
यो यस्य	60	साह्नौ शरीरे	102
यो राशिस्	87	सीमन्तिन्य	34
वक्रो विषमे	81	सुतं प्र	72
वदन्ति	70	सुतानु	74
वागीश्वरे	36	सौर-ज्ञौ	81
वाग्मीनौ	72	संयुक्त	72
विलोकिते	40	संवीक्ष्य	92
विषमर्क्षे	73	संस्थस्	74
विषमर्क्षे	81	स्त्रीणां गतो	34
विषम-स्थिते	73	स्त्रीणां शतानि	3
विषयेषु	30	स्थूल इन्दुः	100
विहाय	37	स्वदेश	90
रक्तेऽधिके	34	स्व-पान्थ	114
रक्तो सूर्या	100	स्वांशके	38
रक्तं शुभ्रं	100	स्रोतोभिरुद्	51

ज्योतिष साहित्य [illegible]तकें

फलित सूत्र
उत्तरकालामृत (कालिदास [illegible]
दैवज्ञ वल्लभा (वराहमिहिर)
भावार्थ रत्नाकर (रामानुजाचार्य)
व्यवसाय का चुनाव
चुने हुए ज्योतिष योग
महिलायें और ज्योतिष
भुवन दीपक (प्रश्न विषय)
प्रश्न दर्पण
मूक प्रश्न विचार
ज्योतिष और रोग
केरलीय ज्योतिष
अनिष्टग्रह-कारण और निवारण
भाव दीपिका, गोचर विचार
रत्न परिचय, वर्ष फल विचार
पाश्चात्य ज्योतिष
दशा फल रहस्य, ज्योतिष सीखिये
चन्द्र कला नाड़ी
हस्त परीक्षा, अंक चमत्कार (कीरो)
स्वप्न और शकुन (डा० कपूर)
मंत्र शक्ति, तंत्रशक्ति (डा० रुद्रदेव त्रिपाठी)
यंत्र शक्ति (दो भागों में) ,, ,,
माहेश्वर तंत्र, रुद्रयामल तंत्र ,, ,,

विस्तृत सूचीपत्र मंगाएं

तीन विद्वानों की साधना का अमर फल

नष्टजातकम्
(Lost Horoscopy)

संस्कृत रचना : आचार्य मुकुन्द दैवज्ञ

हिन्दी व्याख्या : डा० शुकदेव चतुर्वेदी

संपादन : आचार्य गोपी लाल अमर

वराहमिहिर और कल्याणवर्मा की युक्तियां, अमीर चन्द्र-युक्ति, केरलीय पद्धति, लग्न-भ्रांति-निराकरण एवं ज्योतिष के कुछ ऐसे अनुभूत नियम जो प्रथम बार प्रकाश में आये हैं

दाम्पत्य-सुख
ज्योतिष के झरोखे से
(Astrology and Marriage)

लेखक : डा० शुकदेव चतुर्वेदी

विवाह, सन्तान-सुख आदि प्रश्नों का सरल रूप में समाधान

दैवज्ञ-वल्लभा

आचार्य वराहमिहिर

ज्योतिष साहित्य में प्रश्न का उत्तम ग्रंथ

प्रश्न मार्ग

फलित ज्योतिष एवं प्रश्न विचार पर दक्षिण भारत का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ
तीन खण्डों में, पृष्ठ एक हजार

रत्न प्रदीप

डा० गौरी शंकर कपूर

नवरत्नों की जांच परख और अल्पमोली रत्नों की विस्तृत जानकारी

महामृत्युञ्जय
(साधना एवं सिद्धि)

डा० रुद्रदेव त्रिपाठी

मंत्र, तंत्र, यंत्र, कवच एवं स्तोत्रों के प्रयोगों का सरल, व्यावहारिक और उपयोगी ग्रंथ

पत्र लिखकर मंगाएं — डाक द्वारा भेजने की सुविधा उपलब्ध

रंजन पब्लिकेशन्स

१६ अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

फोन : 278835